प्रिय वैरागी जी,

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि आप अपनी यूरोपीय यात्रा के संस्मरण के रूप में एक पुस्तक का प्रकाशन करने जा रहे हैं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप अपनी पुस्तक में यूरोपीय देशों का एक सफल मानचित्र पेश करेंगे। यह साथ ही भारतीय उपमहाद्वीप व यूरोपीय देशों के मध्य सभ्यता, संस्कृति एवं मैत्री सम्बन्धों की नींव को और मजबूत करने में एक सेतु का कार्य करेगी।

पुस्तक की सफलता के लिए कृपया मेरी हार्दिक शुभकामनायें स्वीकार करें।

सस्नेह,

केदार पाण्डेय

५-२-८३

भूतपूर्व सिंचाई मंत्री, भारत सरकार

●

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि श्री रामाज्ञा वैरागी की यूरोप यात्रा के संस्मरण पुस्तक रूप में प्रकाशित हो रहे हैं। श्री रामाज्ञा वैरागी में वैरागी शब्द को अपने साथ जोड़कर वनस्थ जीवन की ओर सहज भाव से जो पग बढ़ाया है, वह स्तुत्य ही है और रहेगा।

महर्षि दयानन्द के इस सुभग सेवक की यूरोप यात्रा का यह संस्मरण भी युवा पीढ़ी का मार्ग-दर्शन करेगा, ऐसा मैं मानता हूँ।

—बाल दिवाकर हंस

प्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल, नई दिल्ली

★

मेरी यूरोप यात्रा

रोम, वेनिस, जेग्रेब, बुडापेस्ट, वियेना,
प्राग, म्यूनिख, फ्रैंकफर्ट, आम्सटर्डम,
ब्रुसेल्स, लन्दन, पेरिस, जेनेवा,
मिलान की सांस्कृतिक यात्रा

मेरी यूरोप यात्रा

रामाज्ञा वैरागी
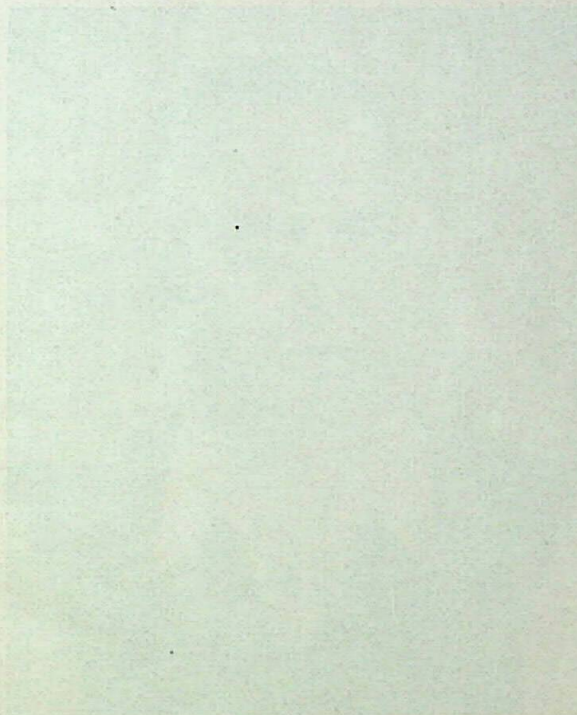
श्री पन्नालाल आर्य

अपने ही

अनन्य मित्र

श्रीपन्नालाल आर्य

को

सप्रेम समर्पित

आपकी 'मेरी यूरोप यात्रा' शीर्षक पुस्तक सचित्र प्रकाशित हो रही है। प्रसन्नता की बात है कि इस यूरोप-यात्रा में हमारे संस्थान के दो मान्य प्रतिनिधियों श्रीपन्नालाल आर्य तथा सूरजकुमार ने भी भाग लिया था। सम्बद्ध पुस्तक के प्रकाशन के अवसर पर सफलता तथा उज्वल भविष्य की कामना करते हुए हम अपार हर्ष का अनुभव करते हैं—

रत्ना जर्दा सप्लाई कम्पनी
मुजफ्फरपुर

आमुख

बचपन में जब संस्कृत सीखना शुरू किया था तो यह श्लोक पढ़ा था —

विद्यावित्तं शिल्पं तावन्ना प्रोति मानवः सम्यक् ।
यावत् व्रजति न भूमौ देशाद्देशान्तरम् हृष्टः ॥

मनुष्य जब तक विद्या धन तथा शिल्प को सुचारु रूप से प्राप्त नहीं कर सकता तब तक कि वह प्रसन्न चित्त हो देश-देशान्तर का भ्रमण न कर ले। सत्तर साल हो गये, अब तक भी इस श्लोक को भूल नहीं सका हूँ। देशाटन की इच्छा बनी रहती है और कितने ही विदेशों की यात्रा कर भी चुका हूँ। जहाँ अबतक नहीं जा सका हूँ, उनके सम्बन्ध में लिखे यात्रा विवरणों को पढ़कर अपनी ज्ञान-पिपासा को शांत करने का प्रयत्न किया करता हूँ। पुराने समय में फाहयान, ह्यु एत्सांग आदि विदेशी पर्यटकों ने अपने जो यात्रा वृतान्त लिखे थे, उन्हें मैंने रुचिपूर्वक पढ़ा है और आधुनिक युग में स्वामी सत्यदेव परिव्राजक, श्रीमेहता जैमिनी और महापण्डित राहुल सांकृत्यायन द्वारा लिखित यात्राओं के विवरण मुझे बहुत आकृष्ट करते रहे हैं। यात्रा विषयक साहित्य का एक अपना ही आकर्षण होता है, जिसे पढ़कर मनोरंजन के साथ-साथ ज्ञान वृद्धि भी होती है।

श्रीरामाज्ञा वैरागी की भी पर्यटन में रुचि है। वह अनेक बार उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम सम्पूर्ण भारत की यात्रा कर चुके हैं। अफ्रीका भी वह हो आये हैं और इटली, हंगरी, युगोस्लाविया, आस्ट्रिया, जर्मनी, फ्रान्स, बेल्जियम, इङ्गलैंड आदि कितने ही यूरोपीय देशों की भी वह यात्रा कर चुके हैं। नेपाल तो उनका कार्यक्षेत्र भी रहा है। गृहस्थी से निबटकर अब उन्होंने वैरागी या परिव्राजक का जीवन अपना लिया है और देश-देशान्तर के पर्यटन के लिए वह सदा उद्यत रहते हैं।

यह अत्यन्त प्रशंसा की बात है कि अब उन्होंने देश-विदेश की अपनी यात्राओं का विवरण लिपिबद्ध करना आरम्भ कर दिया है। यूरोप यात्रा विषयक उनकी पुस्तक के कुछ अंश मैंने पढ़े हैं। उसकी भाषा परिष्कृत और सरल है, विषय को प्रस्तुत करने की शैली रोचक है और यात्रा का वृतान्त ज्ञानवर्द्धक तथा मनोरंजक है। वैरागी जी जहाँ कहीं भी गए वहाँ के सम्बन्ध में समुचित जानकारी प्राप्त करने का उन्होंने प्रयत्न किया और इस पुस्तक द्वारा उसे आकर्षक रूप में पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत कर दिया। उनकी इस पुस्तक द्वारा हिन्दी के यात्रा साहित्य में सराहनीय वृद्धि हुई है।

मुझे आशा है कि वैरागी जी देश-देशान्तर और द्वीप-द्वीपान्तर की यात्राओं के क्रम को जारी रखेंगे और विविध देशों की सभ्यता संस्कृति आदि का अनुशीलन कर उनका परिचय मनोरंजक रूप से पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करते रहेंगे।

नई दिल्ली, —सत्यकेतु विद्यालंकार

रामाज्ञा वैरागी : एक व्यक्ति : एक व्यक्तित्व

चम्पारण की भूमि असहयोग आन्दोलन से आन्दोलित हो रही थी। इसके पूर्व इस भूमि के भूमि-पुत्र अपने अधिकारों के लिए कहिए, अपनी स्वाधीनता के लिए संघर्ष की रणभेरी बजा चुके थे।

चम्पारण को महात्मा गाँधी की कर्मभूमि होने का गौरव प्राप्त है लेकिन इतिहास साक्षी है कि इस भूमि पर गाँधी के आगमन से पहले, बहुत पहले, किसानों ने निलही कोठियों के विरुद्ध जुझारू लड़ाई लड़कर अपने साहस का दीप जला दिया था, जिसकी जोत चारो ओर फैल चुकी थी। ऐसे साहसी किसान नेताओं में जसौलीपट्टी (केशरिया) के बाबू लोमराज सिंह का नाम आदर के साथ लिया जाता है। आज जो जसौलीपट्टी के आस-पास के ग्रामीण क्षेत्र राष्ट्रीय-भावना से अभिभूत है, इस पृष्ठभूमि के साथ बाबू लोमराज सिंह की आत्मा है, आत्मा का स्वर है, साहसिक शौर्य कथायें हैं।

जसौली पट्टी के पास-पड़ोस का एक ग्राम भगवतिया जिसे अनेक स्वतंत्रता-सेनानियों को जन्म देने का गौरव प्राप्त है। ऐसे ही स्वतंत्रता सेनानियों में एक हैं रामाज्ञा ठाकुर—अब ठाकुर नहीं, वैरागी जिनका जन्म-काल असहयोग आन्दोलन से सम्पृक्त है। इनकी आरम्भिक शिक्षा भगवतिया के प्राथमिक विद्यालय से आरम्भ हुई और नमक सत्याग्रह के समय चेतना मुखरित हुई। वैरागी जी के पिता भारत-नेपाल सीमा पर स्थित रक्सौल से किसी साधारण व्यापार का श्रीगणेश करने यहाँ आये। नमक सत्याग्रह के बाद रामाज्ञा वैरागी भी रक्सौल आ गए और गाँधी विद्यालय, तात्पर्य राष्ट्रीय विद्यालय में अपना नामांकन कराया।

यह स्मरणीय है कि उस समय सरकारी स्कूल बहिष्कार आन्दोलन भयानक रूप धारण करता जा रहा था। कहना कठिन है कि उस समय

यहाँ कोई सरकारी स्कूल था या नहीं। अनुमान है कि सरकारी स्कूल था लेकिन रामाज्ञा जी के संकल्पी अभिभावक पिता श्री निर्मल ठाकुर ने अपने बेटे को गांधी विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने के लिए अनुप्रेरित ही नहीं किया वरन् निदेशित भी किया। इन राष्ट्रीय विद्यालयों का वातावरण पूर्ण रूप से राष्ट्रीय था, राष्ट्र-प्रेम ही इन शिक्षण संस्थाओं का प्राण था। यही कारण है कि रामाज्ञा जी की विचारधारा ने नया मोड़ लिया और वह समाज-सेवा एवं राष्ट्र-सेवा की ओर प्रवृत्त हुए। इस नये मोड़ नयी प्रवृत्ति के साथ राष्ट्रीय विद्यालय रक्सौल की मूल प्रेरणा का प्रभाव माना जा सकता है। कितने आश्चर्य की बात है कि वैरागी जी आजन्म शाकाहारी हैं, जब कि इनके पिता मांसाहारी रहे। पिता का आदेश कि तुम्हें मांस-मछली लेना है और वैरागी जी जैसे पुत्र का संकल्प कि स्पर्श भी नहीं करना है। यह द्वन्द्व लम्बी अवधि तक चल न सका। क्रान्तदर्शी, संकल्पचेता पुत्र के समक्ष पिता विवश हुए और उनके परिवार ने मांस-भक्षण त्याग दिया।

वैरागी जी के अनुसार —"एक बार प्रसिद्ध आर्य समाजी विद्वान् श्री ओमप्रकाश त्यागी रक्सौल आए और मेरे घर गए। त्यागी जी की शालीनता कि मेरे पिता जी का चरण-स्पर्श किया। एक महान् व्यक्तित्व को अपने चरणों में नतमस्तक होते देख, अभिभूत पिता ने सदा के लिए शाकाहार स्वीकार किया। आज मेरा परिवार पूर्णतया शाकाहारी है।"

तात्पर्य कि वैरागी जी जैसे पुत्र ने पिता को निदेशित किया। मेरे जानते संस्कार-संकल्प का ऐसा उदाहरण विरल ही है।

देश के स्वाधीनता संघर्ष के साथ आर्य समाज के योगदान को कभी अस्वीकार नहीं किया जा सकता। यह भी कहा जा सकता है कि आर्य समाज के अगणित उत्साही कार्यकर्त्ता देश की स्वाधीनता के लिए

आहूत समर के अग्रिम मोर्चे पर जमे रह गए। अपना विशिष्ट योगदान ही नहीं किया वरन् अपने मूल्यवान जीवन की आहूतियाँ भी दीं। आर्य समाज रक्सौल का सशक्त स्वरूप हमारे सामने रहा है। इस शाखा के अत्यन्त संकल्पी हस्ताक्षर [स्व०] श्री मदनमोहन गुप्त (नेपाल में यू० पी० आई० के प्रतिनिधि) एवं (स्व०) श्री कमलाकान्त ठाकुर से प्रेरित होकर रामाज्ञा जी आर्य समाज की ओर उन्मुख हुए। शनैः-शनैः उनके भीतर आर्य-संस्कृति के प्रचार-प्रसार की भावना जाग्रत होती गयी। यह भावना धीरे-धीरे और गहरी हुई।

अगस्त की निर्णायक-क्रांति को अपने सक्रिय योगदान के बाद वैरागी जी ने आर्य-समाज के लिए अपने जीवन को गतिशील किया। इस प्रकार जेल से वापस आने के बाद, अपना सम्पूर्ण समय आर्य समाज के प्रचार-प्रसार के लिये अर्पित कर दिया। मेरा जहाँ तक अनुमान है इस प्रचार-कार्य ने ही इन्हें घुमक्कड़ बना दिया और निरन्तर यात्रायें करने की अभिरुचि देश की धूल छानते रहने को विवश करती रही। इस विवशता ने उनके पैरों में पंख बाँध दिए। सर्वोदय सम्मेलन काञ्जीवरम् (दक्षिण) यात्रा इस प्रवृत्ति की एक शृंखला मानी जा सकती है, जहाँ उन्हें आचार्य विनोबा, डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, काका कालेलकर, जीवनदानी जयप्रकाश नारायण आदि महान विभूतियों के साथ सम्पर्क-सानिध्य-सेवा का संयोग मिला। इस प्रकार वे जीवन-यात्री बन गये।

रामाज्ञा वैरागी को लेकर कोई कुछ कहता है, कोई कुछ। किसी की जबान पर कोई प्रतिबंध नहीं है। लेकिन मेरे पास जो दर्पण है, वह विशेषताओं को ही प्रतिबिम्बित करता है, दुर्बलताओं को नहीं। वैरागी जी के साथ कुछ विशेषतायें हैं, तो कुछ दुर्वलतायें भी। लेकिन अपना कुछ भी लेना-देना नहीं है, कुछ भी देना-पावना नहीं, महज इतना ही कि—

अदा खराब सही,
आदमी खराब नहीं!

रामाज्ञा वैरागी ने प्रायः सम्पूर्ण भारत की यात्रायें की हैं, लेकिन कोई न कोई राष्ट्रीय समारोह उनकी यात्रा का माध्यम रहा है। आर्य महासम्मेलन और अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी के अधिवेशनों को लेकर कश्मीर से कन्या कुमारी तक की यात्रायें की हैं। महाधिवेशनों को देखा है, महान पुरुषों का समीप से दरस-परस किया है, इस प्रकार वैरागी जी ने शिमला की पहाड़ियों को देखा है तो अमृतसर के स्वर्ण-मंदिर को भी, हैदराबाद का अजायबघर देखा है, तो कलकत्ते की चौरंगी का आनन्द भी लिया है। मथुरा वृन्दावन की झाँकियाँ देखी हैं, तो अलवर का ऐतिहासिक दुर्ग भी बहुत निकट से देखा है। राजधानी दिल्ली के चाँदनी चौक और लाल किले को बाहर और भीतर से देखा है। इस देश-दर्शन और देव-दर्शन ने जैसे उन्हें वैरागी बना दिया है।

कहने का तात्पर्य कि रामाज्ञा वैरागी ने आर्य-समाज के माध्यम से भारतीय युवकों के बीच राष्ट्रीय जागरण की अलख जागते रहने का व्रत लिए सम्पूर्ण देश की यात्रायें कीं। आर्यवीर दल के कई प्रशिक्षण शिविर पटना, दिल्ली और मेरठ से स्वयं भी प्रशिक्षण प्राप्त किया। आर्य महा-सम्मेलन के मेरठ अधिवेशन के अवसर पर केन्द्रीय संचालक श्री ओम्-प्रकाश त्यागी ने प्रभावित होकर आर्यवीरदल के केन्द्रीय प्रतिनिधि श्री उर्षबुध के साथ नेपाल भ्रमण और नेपाल में आर्यवीर दल के संगठन के लिए प्रधान संचालक मनोनीत किया। १९५२ के बाद रामाज्ञा वैरागी ने नेपाल को अपना कार्यक्षेत्र बनाया। श्री ५ त्रिभुवन वीर विक्रमशाह देव तथा श्री ५ महेन्द्रवीर विक्रम शह देव का निकट सम्पर्क सुलभ होता रहा। नेपाल की शिक्षण संस्थाओं में बौद्धिक एवं शारीरिक शिक्षण का प्रसार किया। नेपाल प्रवास के संस्मरण, चित्रों के साथ अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। ऐसी पत्रिकाओं में मानव-पथ [१ जून १९५२] भी एक है। श्री ५ महेन्द्र वीर विक्रमशाह देव के राज्याभिषेक के अवसर पर भी वैरागी जी ने अपना योगदान किया। नेपाल के

प्रधान-मंत्री श्रीमातृका प्रसाद कोइराला के साथ भी सम्बन्ध स्थापित रहा।

मेरे इस प्रश्न पर कि यह घुमक्कड़ी प्रवृत्ति आपके भीतर कैसे आयी ? रामाज्ञा वैरागी ने सीधा उत्तर दिया—"कोर्स की किताबें जैसे चिकोटी काटती रहीं लेकिन प्रकृति की मनोरम छटायें अपनी ओर आमंत्रित करती रहीं आत्मिक और अन्तरंग दृश्यावलियाँ। इनके साथ मेरा लगाव बचपन से ही रहा है। मेरी घुमक्कड़ी प्रवृत्ति ने कभी स्थिर नहीं रहने दिया....।" वे आज भी स्थिर नहीं हैं; कल की कौन जाने !

रामाज्ञा वैरागी को यह सच्चाई स्वीकारनी चाहिए कि इन यात्राओं ने प्रकृति को निकट से पढ़ने और चिन्तन करने का अवसर दिया। इस प्रकार स्वाधीन स्वाध्याय के प्रति जिज्ञासा जाग्रत हुई और परिणाम हाथ आया लेखन संस्कार। अनेक यात्रा-विवरण या संस्मरण पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से हिन्दी जगत् के सामने आये।

हिन्दी भाषा के आँगन में विभिन्न विधाओं की पौध विकसित हुई है। उनमें एक उभरता बिरवा यात्रा-साहित्य का है। इस विधा को बिरवा इसलिए कहा जा रहा है कि अभी इस दिशा में बहुत काम नहीं हुआ है। लोग विदेश यात्राओं का येन-केन प्रकारेणजुगाड़ तो बैठा लेते हैं; लेकिन यदि उनसे सवाल किया जाय कि क्या आपने अपने देश को देखा है ? उत्तर के नाम पर एक और प्रश्न-चिह्न लग सकता है। यह स्थिति भाई रामाज्ञा जी के साथ नहीं है। देश की यात्रा करने से पहले ही विदेश-यात्रा की कल्पना, बिलकुल वैसी ही बात है जैसे शास्त्रीय संगीत के अभ्यास के लिए सरगम का ज्ञान आवश्यक है।

भाई रामाज्ञा वैरागी यात्रा के अनुभवों से समृद्ध मानसिकता के साथ विदेश-यात्रा के लिए अनुप्रेरित हुए। इस स्थल पर मुझे यह स्पष्ट कहने दिया जाय कि ऐसी यात्राओं के लिए वे सुविधा के साथ संयोग की

तलाश करते रहे हैं, कहिए कि अवसर की प्रतीक्षा भी करते रहे हैं। यही वह स्थिति है जो उनके सपने को साकार स्वरूप देती रही है। परि-स्थिति को अपने अनुकूल बनाना वे खूब जानते हैं। यही विशेषता उनके लिए सुविधाजनक संयोग सुलभ करती रही है। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन, नैरोबी (पूर्वी अफ्रिका) के प्रतिनिधि के रूप में रामाज्ञाजी की प्रथम विदेश-यात्रा, एक ऐतिहासिक संयोग की दृष्टि से देखी जा सकती है। संयोग बहुतों के जीवन में आते हैं लेकिन उनका उपयोग कम ही लोग कर पाते हैं। रामाज्ञा जी संयोगों का भरपूर उपयोग करने से चूके नहीं हैं। नैरोबी यात्रा के सन्दर्भ-चित्र, ज्वलन्त प्रमाण हैं, यदा-कदा प्रकाशित उनके यात्रा संस्मरण लेखकीय संस्कार क्षमता के प्रतीक। यदि इन यात्रा संस्मरणों का संकलन किया जाय तो जीवन्त मौलिक यात्रा साहित्य हिन्दी को सुलभ हो सकता है। नैरोबी (पूर्वी अफ्रिका) यात्रा के क्रम में किनिया, मोम्बासा, तथा तंजानिया की सीमा तक की यात्रायें भी कीं। भाई रामाज्ञा वैरागी ने बताया—"मैं जहाँ कहीं गया, वहाँ का सविस्तार विवरण जानने की कोशिश की, प्रतिदिन अपनी डायरी लिखता रहा। यह डायरी मेरे पास सुरक्षित है....।" यह प्रमाण है उनके भीतर पलने वाले सुधी साहित्यकार ही नहीं, एक सजग चिन्तक चितेरे का भी।

यह घुमक्कड़ी प्रकृति रामाज्ञा वैरागी के लिए अब तो अनिवार्यता बन गयी है। इस प्रकृति और प्रवृत्ति ने दूसरी विदेश-यात्रा के लिए अनुप्रेरित किया। माध्यम बना अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का लन्दन अधिवेशन, जिसका निमंत्रण नैरोबी आर्य महासम्मेलन के अवसर पर लन्दन आर्य समाज की शाखा की ओर से आया था। भाई रामाज्ञा वैरागी ने बताया —'नैरोबी सम्मेलन के समय ही मैंने संकल्प किया था कि लन्दन के आर्य महा सम्मेलन में जाऊँगा। यह संकल्प पूर्ण हुआ। वैरागी जी के प्रति रक्सौल के मित्रों ने शुभकामनायें अर्पित कीं। लन्दन के लिए विदा होने से पूर्व कई समारोह आयोजित किए गए।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन के एक प्रतिनिधि के रूप में वैरागी जी ने यह यात्रा रक्सौल से दिल्ली और बम्बई होते हुए आरम्भ की। रोम, वेनिस, जेग्रेब, बुडापेस्ट (हंगरी) वियेना, प्राग, म्यूनिख, फ्रैंकफर्ट, आम्सटर्डम, बुसेल्स, डोवर, लन्दन, पेरिस, जेनेवा, मिलान आदि की यात्रायें कीं। यह संक्षिप्त यात्रा अध्ययन और भ्रमण की दृष्टि से अत्यन्त उपयोगी मानी जा सकती है। वैरागी जी के शव्दो में—"मैं जहाँ कहीं भी गया वहाँ की सामान्य से सामान्य सूचनायें भी संगृहीत कीं उन्हें लिपिबद्ध करता गया। इन देशों की सम्पूर्ण भौगोलिक चित्रावली आज भी मेरे मस्तिष्क के फलक पर अंकित है।"

इस यात्रा से सम्बद्ध कई दर्जन चित्र ही नहीं, अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन के अधिवेशन के अगणित चित्र उनके पास सुरक्षित हैं। मेरे यह पूछने पर कि इस यात्रा के समय ऐसे कितने देश मिले, जहाँ अपने भारतीय लोग मिलने आए या मिले? वैरागी जी ने बताया "ऐसे स्थानों में हालैंड, जर्मनी, पेरिस, जेनेवा, वियेना, बुडापेस्ट और लन्दन आदि प्रमुख हैं, जहाँ हमें भारतीय मिले और ऐसी आत्मीयता से मिले कि आज भी उसकीं स्मृति, भावाकुल बना जाती है . . ."

वैरागी जी ने अपने को पारिवारिक दायित्वों से पूर्णतया पृथक कर लिया है। उनके जीवन का एकमात्र उद्देश्य-संकल्प, आर्य धर्म और संस्कृति को विश्व के कोने-कोने में तरंगित-प्रसारित कर देने का बन चुका है। भारतीय यौगिक क्रियाओं के वे गम्भीर अध्येता तो हैं ही— कुशल-निस्पृह प्रशिक्षक एवं प्रवक्ता भी हैं। उनका संयमित जीवन, निस्सन्देह अपने आप में एक साधनादीप्त उपलब्धि है।

रामाज्ञा वैरागी ने इन सांस्कृतिक यात्राओं से जो अनुभव प्राप्त किया है, वह अत्यन्त रोमांचक है। निश्चय ही हमारे भारतीय जहाँ कहीं भी हैं, अपने संस्कारों का अखंड दीप जलाये, अपनी संस्कृति की रक्षा के

लिए कृत संकल्प हैं। सारा भारत एक परिवार है, एक समाज है और कई देशों में छोटा भारत विराजमान है, जिसका दर्शन किया जा सकता है। रामाज्ञा वैरागी को, देश-विदेश की इन छोटी-बड़ी यात्राओं ने अनुभवों से अभिभूत कर दिया है। अपने संस्मरणों की स्मृति लिए कभी वे मेरे पास होते हैं और कभी मैं रामाज्ञा वैरागी के पास होता हूं। इस आधार के साथ कि—

"हमसे मिलने के लिए आये बहुत लोग मगर,
दर्द इन्सान का समझा उसे इन्सान कहा !"

— रमेशचंद्र झा
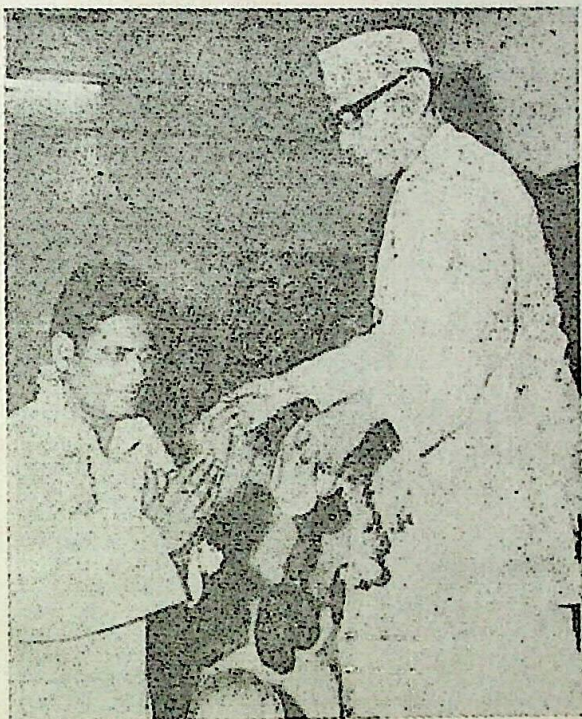
आर्य-समाज, करौल बाग (नई दिल्ली) में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्रीरामगोपाल शालवाले द्वारा लंदन जाते समय लेखक का स्वागत ।

ट्रेवेल कारपोरेशन आफ इण्डिया की ओर से अशोका होटल, दिल्ली के स्वागत समारोह में मित्रों द्वारा अभिनन्दन स्वीकार करते हुए।

रक्सौल से रोम तक

आन्तराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के प्रतिनिधि के रूप में सर्व प्रथम मुझे नैरोबी (पूर्वी अफ्रिका) जाने का संयोग (सन् १९७८) में मिला। इस अधिवेशन के अवसर पर अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की लन्दन शाखा की ओर से अगले अधिवेशन का आमंत्रण मिला, लन्दन मेरी आँखों के सामने झूल गया। वैसे विदेश यात्राओं की चिर-संचित अभिलाषा पूर्त्ति मेरी प्रथम विदेश यात्रा से ही हो गयी थी। यह भी सच है कि मेरी प्रथम विदेश-यात्रा ने ही दूसरी विदेश यात्रा के लिए अनुप्रेरित किया। मेरे दृढ़ संकल्प से मेरी आत्मा ने ईश्वरीय सहयोग प्राप्त किया।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, लन्दन की स्वागत-समिति का आमंत्रण पाते ही मेरा मन विभोर हो उठा उमंग से, उत्साह से। एक बार फिर मेरी आँखें देखने लगीं, सुदूर सात-समुन्दर पार की ओर। एक बार फिर विदेश-यात्रा की मधु-तिक्त अनुभूतियाँ जाग उठीं। एक ही साथ कई कल्पनायें मेरे सामने मूर्त्त हो गयीं। सतरंगे सपने सहसा साकार होकर मुखरित हो उठे। मेरी आत्मा के भीतर प्रतिध्वनि आती रही कि यदि ईश्वर का कृपा हुई तो मेरी यह लन्दन-यात्रा भी सकुशल सम्पन्न होगी।

मैंने अपनी यात्रा के लिए औपचारिकतायें आरम्भ कीं। अपने पासपोर्ट का नवीकरण कराया, फिर लन्दन और दिल्ली से पत्राचार आरम्भ हुए। यात्रा के लिए प्रक्रिया शुरू हो गयी। मित्रों में मेरे लन्दन जाने की चर्चा होने लगी। एक ही साथ मेरी आँखों में भारत और ब्रिटेन के मिले-जुले चित्र अचानक उतर गए। कभी जिन साम्राज्यवादी अंग्रेजों के विरुद्ध स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी थी, उन्हीं अंग्रेजों के देश की यात्रा करने जा रहा था—कम रोमांचक न था। लेकिन दुनिया बहुत बदल चुकी है। अब तो इंगलैंड स्वतंत्र भारत का मित्र देश है।

रक्सौल, भारत नेपाल-सीमा स्थित एक छोटा-सा नगर, जहाँ मेरे कर्ममय जीवन के पाँच दशक बीते हैं और ब्रिटेन की राजधानी लन्दन, जहाँ से कभी हमारे देश पर शासन किया जाता रहा। फिर रक्सौल और लन्दन की अकल्पित दूरी जिसे न कोई माप सकता है न सुविधा के साथ पार कर सकता है। कहाँ रक्सौल, कहाँ लन्दन, ब्रिटिश साम्राज्य की राजधानी जहाँ कभी सूरज नहीं डूबता था, दूर—बहुत दूर, सात समुन्दर पार।

और, अचानक उस दिन मेरे जेल के साथी स्वतंत्रता सेनानी मित्र, हिन्दी के सुपरिचित रचनाकार भाई रमेशचन्द्र झा आए। मेरी लन्दन यात्रा को लेकर काफी देर तक चर्चा होती रही, विचार-विमर्श होते रहे। इस चर्चा के समय भाई रमेश जी ने कहा—'इस यात्रा पर दिया गया समय और किया गया व्यय व्यर्थ सिद्ध होगा, अगर इस की डायरी न लिखी गयी। झा जी ने मेरी इस यात्रा के प्रति अपनी ओर से हार्दिक शुभकामनायें प्रकट कीं और इनके आदेशानुसार ही डायरी लिखने का निश्चय किया। यह आदेश देकर झा जी ने मुझे इस यात्रा के लिए अनुप्रेरित किया।

आर्य समाज, रक्सौल की ओर से विदाई समारोह आयोजित किया गया। इस समारोह के अवसर पर रक्सौल के आस-पास हो रहे मसीही प्रचार के आलोक में काफी समय तक चर्चा-परिचर्चा होती रही। इस समस्या को लेकर मुझे आदेश दिए गए। मेरे जानते इस स्थल पर उनका उल्लेख न समीचीन है और न आवश्यक; लेकिन यह चर्चा करना अप्रासंगक न होगा कि इस यात्रा का आरम्भ करने से पूर्व मेरे भीतर ऊहापोह की स्थिति सदा ही बनी रही। मुझे अपने बेटे आनन्द और सत्यानन्द को लेकर कई प्रकार की चिन्तायें बनी रहीं, कुछ व्यक्तिगत कुछ परिवारिक, लेकिन मेरा कार्य क्रम तो बन चुका था। अपने निश्चित कार्यक्रम के अनुसार मुझे मित्रों ने विदा किया। दिनांक ३ अगस्त १९८० को रक्सौल से चला। मेरे कई मित्र मुझे स्टेशन तक छोड़ने आए।

गाड़ी खुली और तेज पहिए के साथ झनझना उठीं मेरे मस्तिष्क की शिरायें। यह अगस्त की ५ तारीख थी। मुजफ्फरपुर से जयंती जनता की बर्थ पर बैठा

विलकुल अकेला वैरागी मन, इस लम्बी यात्रा को लेकर मन ही मन सोचता-गुनता समय काटता रहा, जो क्षण-क्षण भारी होता जा रहा था। जयंती जनता मुजफ्फर पुर प्लेटफार्म से हिली और वह अपनी पूरी गति के साथ भाग चली समस्तीपुर की ओर और फिर एक के बाद एक अनेक विराम स्थलों को स्पर्श करती हुई अपनी तेज रफ्तार से भागती रही।

उत्तर विहार से दक्षिण विहार ही नहीं, पश्चिम बंगाल और दिल्ली तक को जोड़ने वाली इन रेल-यात्रा सुविधाओं के साथ भूतपूर्व रेल मंत्री (स्व.) श्री ललित नारायण मिश्र का परम-पावन स्मरण मन को सहसा झकझोर देता है और एक कसक बार-बार कचोट जाती है दिल को कि ललित बाबू की हत्या विहार की ही भूमि पर हुई। प्रसिद्ध अमरीकी लेखक लुई फिशर ने महात्मा गाँधी की हत्या को लेकर कहा था कि "बहुत अच्छा होना कितना बुरा है!"

ललित बाबू भी बहुत शालीन व्यक्तित्व के धनी एक कुशल प्रशासक और तेजस्वी पुरुष थे, लेकिन विहार को ललित बाबू भी देखे न गये। ललित बाबू की सौम्य आकृति मेरी आँखों के सामने झूलती रही। यह जयंती जनता उनके योजना भरे मस्तिक की ही देन है। काश, वे हमारे लिए हमारे बीच कुछ दिन और जीवित रह जाते?

विहार की राजधानी पटना के बाद मेरी आँखें खुली: नहीं रह सकीं। मुझे झपकी आने लगी। सुबह हुई तो लगा जैसे लम्बी रात मेरे सिरहाने से गुजर गयी है और जाते-जाते छोड़ गयी है, सुबह की किरणें, दिन का उजाला। दूसरे दिन, दस बजे दिन के बाद हम पुरानी दिल्ली प्लेटफार्म पर थे। पुरानी दिल्ली स्टेशन से हमने स्कूटर लिया। दिल्ली सार्वदेशिक सभा ने लन्दन जानेवाले प्रतिनिधियों के लिए दीवान हाल आर्य समाज की अतिथिशाला को सुरक्षित रखा था। यह अतिथिशाला भरी हुई थी मुख्यतया लन्दन जाने वाले प्रतिनिधियों से। कुछ ही घंटे के भीतर इस अतिथिशाला की चहल-पहल और बढ़ गयी। लन्दन जाने वाले प्रायः सभी प्रतिनिधि अतिथिशाला में आ गए थे।

ऐसे भी बहुत से लोग थे, जिनकी स्वीकृति नहीं थी, उमंग और उत्साह के साथ दिल्ली आ गये थे और लंदन जाने के लिए तेजी के साथ प्रयास करने लगे थे। दीवान हॉल में श्री हरिदास ज्वाल जी से भेंट हुई। सार्वदेशिक सभा के मंत्री जी ने सूचित किया कि इस लंदन-यात्रा की व्यवस्था का सम्पूर्ण भार टी० सी० आई० (ट्रैवल कारपोरेशन ऑफ इण्डिया, को सुपुर्द कर दिया गया है। बिहार के कई मित्र दीवान हॉल में ही मिले और अब हम सभी एक साथ हुए। देश के कोने-कोने से पधारे हुए प्रतिनिधि विभिन्न भाषायें, भिन्न परिवेश लेकिन एक भूमि पर जन्मे, एक भूमि के पुत्र। करोल बाग आर्य-समाज ने ६ अगस्त ८० को अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन, लंदन जाने वाले आर्य प्रतिनिधियों के सम्मान में एक भव्य स्वागत-समारोह का आयोजन किया। सार्वदेशिक सभा के प्रधान लाला रामगोपाल शालवाले वाणप्रस्थ ने माल्यार्पण के साथ इस स्वागत समारोह को सम्पन्न किया। बहनों ने चंदन-टीका लगाकर भावभीनी विदाई दी और अब हमारे सामने थे दिल्ली के फोटो-ग्राफर, क्षण-क्षण कौंधते फ्लेश लाइट के साथ।

चारों ओर नयी उमंग, नये उत्साह की लहर, लहरों पर थिरकते पाँव, चलते जाने को विवश, उड़ने को आकुल। ट्रैवल कारपोरेशन ऑफ इण्डिया की ओर से ८ अगस्त १९८० को एक और स्वागत समारोह का आयोजन अशोका होटल में किया गया। इस आयोजन के माध्यम से विदेश के रहन-सहन तथा वहाँ के वातावरण पर पूर्ण रूप से प्रकाश डाला गया। भारतीय परम्परा और मर्यादा के पालन के लिए कुछ आवश्यक सन्देश प्रचारित-प्रसारित किए गए। अल्पाहार के बाद विदा किया गया। लेकिन अशोका-होटल का यह परिचय समारोह एक अमिट लकीर बन गया, हमारी आत्मा के लिए, हमारे मस्तिष्क के लिए।

हमारी यात्रा की सारी औपचारिकतायें ९ अगस्त १९८० को पूर्ण हो गयीं। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन के प्रतिनिधियों को यह बताया गया था कि १० अगस्त ८० को प्रातः ९ बजे पालम हवाई अड्डे पर आ जाना है। हम ९ अगस्त की ९ बजे रात को ही देखने लगे, लन्दन के सपने, लंदन की सड़कें, लंदन के लोग

लंदन का वन्देमातरम् भवन। अजाने ही हमारी आँखों में झूल गयीं रंग विरगीं कल्पनायें। कैसा होगा लंदन, लंदन का रहन-सहन, आचार-विचार, वेश-परिवेश। सन् १९७८ की नैरोबी यात्रा के समय कुछ ऐसी ही अनुभूतियों से भरी हलचल मेरे प्राणों के भीतर हुई थी। कुछ ऐसे ही कोलाहल के बीच हमारी कई रातें आँखों-आँखों में गुजर गयी थीं। इस प्रकार अनेक कल्पनायें एक साथ थिरक उठी थीं। लेकिन यात्रा प्रारम्भ होने के बाद शांत और मौन हो गयी थीं, वे मुखर कल्पनायें, मधुर उद्वेलित भावनायें। सम्भवतः लम्बी यात्राओं के समय हर किसी को कुछ इसी प्रकार का अनुभव होता है, इसी प्रकार की आशंका भरी अनुभूतियाँ प्राणों को आन्दोलित करती हैं।'

सहसा स्मरण आने लगे मेरे कई मित्र, बन्धु, परिवार के लोग, बेटे आनन्द और सत्यानन्द। मेरे जेल-जीवन के साथी अभिन्न-हृदय भाई रमेशचंद्र झा ने आशंकायें व्यक्त की थीं—आजकल हवाई दुर्घटनायें बहुत होने लगी हैं, अतः जल-मार्ग से जाना अच्छा होगा। उस दिन कुछ देर के लिए अज्ञात आशंकाओं के झूले पर झूलता रह गया था। अपने भीतर अजेय साहस बटोरकर बोल सका था—'एक दिन सभी को मरना है, मृत्यु एक शाश्वत सत्य है फिर भय किस बात का? पानी पर चलने वाला जहाज भी समुद्र की तेज उफनाती लहरों की गोद में जा सकता है, मृत्यु एक चिरन्तन सत्य है, ऐसा सत्य जिसे आज तक किसी ने चुनौती नहीं दी।

इन जागती-सोती कल्पनाओं के साथ काफी समय बीत गया, आँखों की नींद उड़ गयी, एक-एक पल भारी होने लगा। इन्हीं आकुलता भरे क्षणों में, रंग-बिरंगी कल्पनाओं से खेलता हुआ अपने दोनों पुत्रों को आनन्द और सत्यानन्द को पत्र लिखने बैठा—"मेरी हवाई यात्रा कल आरम्भ होगी, कोई चिन्ता की बात नहीं है। हमारा विमान कल पालम हवाई अड्डे से उड़ेगा। किसी प्रकार की आशंका अपने मन के भीतर मत रखना। मुझे सदा ही ईश्वर पर विश्वास रहा है, मेरी यात्रा निरापद समाप्त होगी और मैं सकुशल लौटकर आ जाऊँगा। यदि दुर्भाग्यवश कुछ हो ही गया, तो धीरज के साथ सहन करते हुए, मेरे अधूरे

कार्य को पूरा करना । आर्य-समाज रक्सौल के एक कक्ष का निर्माण कार्य अधूरा रह गया है, उसे पूर्ण करा देना ।"

आनन्द और सत्यानन्द को अपने निजी और पारिवारिक लेन-देन का हिसाव-किताव भी समझाकर लिखा । किसी से लेना, किसी को देना, ये सारी स्थितियाँ जहाँ तक मेरी स्मरण शक्ति काम करती रही, लिखता रहा । इस ऊहापोह के बीच काफी रात बीत गयी । आँखों की नींद जैसे हिरन हो गयी । घड़ी की ओर देखा—रात के दो बज रहे थे । थोड़ी ही देर बाद मेरे मित्र श्री रामलखन जी आर्य तथा श्री राजेन्द्र जी मुझे पालम तक छोड़ने के लिये जग गए थे । तीन वजे के आस-पास मैंने श्री ज्वाल जी को स्नान-गृह की ओर जाते देखा । चार बजते-बजते मैंने अपने को स्नानादि से निवृत्त किया, सन्ध्या-वन्दन और आसन-प्राणायाम-व्यायाम के पश्चात् पाँच वजे प्रातः तैयार होकर नीचे आ गया ।

दीवान हॉल के सामने टैक्सियाँ आ गयी थीं । हम सभी ९ बजते-बजते पालम हवाई अड्डे पर पहुँच गए, जहाँ और भी कई प्रतिनिधियों और साथियों से भेंट हुई । हम सभी परस्पर गले मिले, शुभकामनाओं का आदान-प्रदान किया सकुशल यात्रा के लिए, यात्रा की सफलता के लिए । अव हम सभी कतारों में आ गए थे ।

पालम के हवाई अड्डे पर मुजफ्फरपुर (विहार) के मेरे कई परम मित्र भाई पन्नालाल आर्य तथा उनके भ्रातृज सूरज प्रसाद, यमुना प्रसाद एवं उनके सुपुत्र वेद प्रकाश और रामगोपाल अग्रवाल आदि मिल गए । इन्हें देखते ही मेरे भीतर एक नयी प्रेरणा जाग उठी, मेरे भीतर नये उत्साह का संचार हुआ । हम सभी पालम हवाई अड्डे से साथ हो गए । रामगोपाल अग्रवाल नैरोबी (१९७८) यात्रा के समय भी मेरे साथ थे । इस यात्रा के समय भी उनका साथ मेरे लिए वहुत ही सुखद रहा । इस लंवी हवाई यात्रा की कल्पना कभी-कभी प्राणों को आन्दोलित करती, लेकिन दूसरे ही क्षण हम अपने भीतर साहस का अनुभव करते ।

इस यात्रा में मेरी पिछली नैरोवी यात्रा के कई साथी दिल्ली सार्वदेशिक सभा के सह-मंत्री भाई सच्चिदानन्द शास्त्री भी मिल गए। हम सभी एक परिवार की तरह यात्रा और प्रवास में साथ ही रहे। राजस्थान के श्री वैद्य तथा ओम् प्रकाश जी (दिल्ली) आदि हम सभी एक साथ हुए। मेरी इस यूरोप यात्रा के निकटतम सहयात्री मित्र पन्नालाल आर्य ने अपनी अत्मीय शालीनता से सदा ही मुझे हास-परिहास से भरे वातावरण के बीच रखने का प्रयास किया।

सबसे पहले टी० सी० आई० की ओर से संगृहीत यात्रा टिकट, पासपोर्ट, वीसा आदि प्राप्त हुए तथा आवश्यक व्यय के लिए २५ डालर मिले। फिर सुरक्षा जाँच के पास स्थित प्रतीक्षा-गृह (वेटिंग रूमं) के भीतर बिठाया गया। कुछ ही देर के बाद यह घोषणा की गयी कि बम्बई जाने वाले विमान की उड़ान में अभी विलम्ब है। अब हम अगली घोषणा की प्रतीक्षा करने लगे। समय काटने के लिए चाय की प्यालियाँ सामने आयीं। इसी बीच सूचना भी प्रसारित की गयी कि बम्बई जाने वाला विमान ९-३० बजे प्रस्थान करेगा। कुछ ही देर बाद घोषित किया गया कि लन्दन जाने वाले यात्री तैयार रहें और गेट नम्बर तीन से होकर प्रस्थान करें तथा फ्लाइट नम्बर १२० में अपना स्थान ग्रहण करें।

लन्दन जाने वाले सभी यात्री गेट नम्बर तीन से चले, सामने एयर इण्डिया की बस लगी थी। इस बस ने हमें फ्लाइट नम्बर १२० जम्बो जेट विमान के समीप पहुँचा दिया, जहाँ प्लेन पर चढ़ने के लिए सीढ़ी लगी हुई थी। अब हम एक एक कर वोर्डिंग टिकट दिखाते और उसकी अधकट्टी प्राप्त करते। इन अधकटे टिकटों पर सीटों के नम्बर अंकित किए गए थे। हम अपने वोर्डिंग टिकट की अधकट्टी लेकर ऊपर चढ़ने लगे। जम्बो जेट के मेन गेट पर आकर्षक वेश-भूषा में सज्जित प्रसन्न-मुद्रा लिए, सावधान की स्थिति में एयर होस्टेस (वायु-स्वागतिका) ने अभिवादन करते हुए अन्दर जाने का संकेत किया। फिर दूसरी एयर गर्ल (वायु कन्या) ने वोर्डिंग टिकट की अधकट्टी पर अंकित सीट नम्बर के अनुसार बिठाने का प्रबन्ध किया।

कितनी शालीनता, कितनी आत्मीय-सहजता थी, एयर होस्टेस और एयर-गर्ल की आकृति पर। शान्तचित्त, अनुशासनबद्ध, चेहरे पर मोहक मुस्कान, सहज भाव, सहज स्वभाव। सभी यात्री शान्त होकर अपनी-अपनी निश्चित सीटों पर बैठ गए और कुछ ही क्षणों में जम्बो जेट का दरवाजा बन्द हो गया। अत्यन्त मधुर स्वर में हमने सुना—सभी यात्रियों का सविनय स्वागत है, कृपया आप अपनी सीट की पट्टियाँ बाँध लेने का कष्ट करें। यह भी अनुरोध है कि धूम्रपान न करें। अब हम प्रस्थान कर रहे हैं। दिल्ली से बम्बई तक की यात्रा मात्र एक घण्टा तीस मिनट की है। आप कृपया शान्तिपूर्वक बैठे रहें। एक स्तब्धता-सी छा गयी, कुछ देर के लिए। वायु यात्रा के जो अभ्यस्त थे, वे तो सहज दीख रहे थे, लेकिन हमारे जैसों की मनःस्थिति तो उद्वेग-विह्वल थी ही।

कुछ देर बाद आ गयी हमारे सामने टॉफियाँ और जूस के खूबसूरत गिलास। टॉफी और जूस के साथ बताये जाने लगे दुर्घटना से सम्बन्धित सुरक्षा के नियम और फिर बताया जाने लगा कि ऑक्सिजन कैसे लिया जा सकता है। ये सारी बातें हमें बतायी जा रही थीं, लेकिन ऐसा लग रहा था कि जैसे ये सारे नियम घोलकर पिलाये जा रहे हों, ये सारी हवाई संहितायें बरबस कंठ के नीचे उतारी जा रही हों। टॉफी और जूस के बाद जलपान चाय और काफी की बारी भी आ गयी। ऐसा अनुभव हो रहा था, जैसे हम हवाई घोड़े पर सवार किसी परी देश की सैर कर रहे हों, जहाँ केवल कहानियाँ ही नहीं, कहानियों के रंग-बिरंगे पात्र भी हों।

दिल्ली के पालम हवाई अड्डे से उड़ते समय हमारे देश की राजधानी दिल्ली महानगरी सिमट कर छोटी, बहुत छोटी दिखने लगी थी और देखते-देखते हमारी इस हवाई यात्रा के डेढ़ घंटे बीत गये। एक अजीब सनसनाहट भरा मौसम और अब बम्बई की सौन्दर्यमयी महानगरी हमारी उनींदी आँखों के सामने थी, जो ऊपर, बहुत ऊपर से एक नन्हें नगर की तरह लग रही थी। हम ठीक दस बजे पालम से उड़े थे और ठीक डेढ़ घंटे बाद, साढ़े ग्यारह बजे बम्बई के शान्ताक्रूज हवाई अड्डे के ऊपर हमारा जम्बो जेट मँडराने लगा।
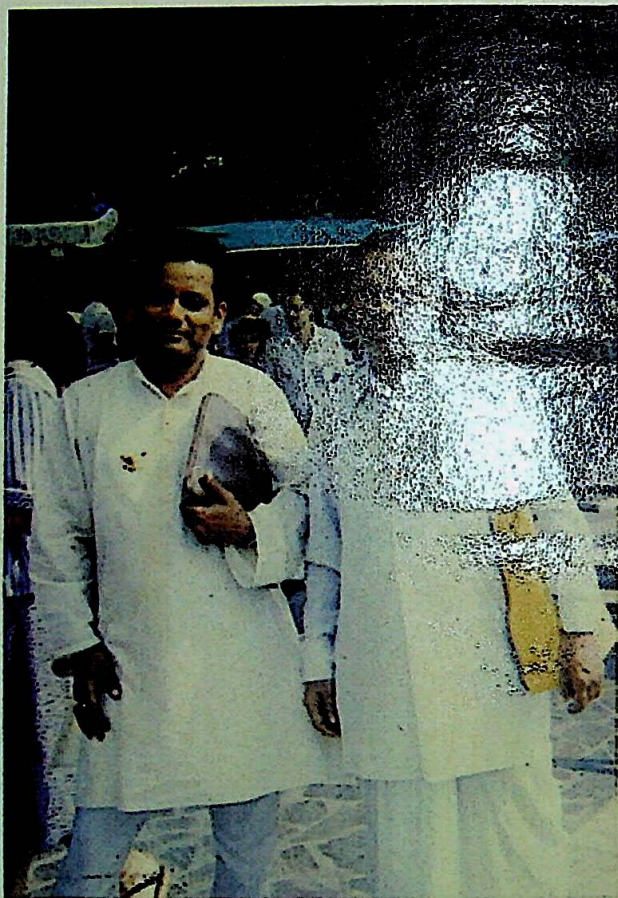
लेखक : के साथ श्री पन्नालाल जी वेलजियम में

बम्वई पहुँचने के पूर्व ही घोषित किया जाने लगा—'अब हम बम्बई पहुँच रहे हैं। पहले ही यह सूचित कर दिया गया था कि बम्बई उतरने वाले यात्री, बाहर की ओर जायेंगे और लन्दन या रोम जाने वाले यात्री अन्तर्राष्ट्रीय प्रतीक्षा-गृह तक जाने के लिए बस पर सवार होंगे। वे बाहर जाने का कष्ट न करें, उन्हें बाहर जाने की अनुमति नहीं है इसलिए कि सुरक्षा जाँच विभाग (सेक्यूरिटी डिपार्टमेंट) को दुबारा जाच-पड़ताल की आवश्यकता पड़ सकती है। हम सभी यात्री अन्तर्राष्ट्रीय प्रतीक्षागृह (इन्टरनेशनल वेटिंग रूम) के भीतर जाकर बैठ गए। यहाँ से एयर इण्डिया के अन्तर्राष्ट्रीय विमान से हमारी उड़ान होने को थी। इस प्रतीक्षा-गृह में हलकी भोजन सामग्री सुलभ हो गयी।

कुछ देर बाद ज्ञात हुआ कि कुछ वैमानिक कर्मचारियों की हड़ताल के कारण कई उड़ानें रद्द कर दी गई हैं और अब हम चार बजे की अन्तर्राष्ट्रीय उड़ान से ही जा सकेंगे। बीच का लम्बा समय, लम्बा अन्तराल अन्तर्राष्ट्रीय प्रतीक्षा-गृह के भीतर काटने को विवश होना पड़ा। लम्बी प्रतीक्षा के बाद, चार बजे शाम को फ्लाइट नम्बर १३५ से हमलोग बम्बई से विदा हुए। हमने अपनी मातृभूमि को प्रणाम किया। अपनी धरती से विछोह को अनुभूति, हमें कुछ देर को उदास बना गयी।

यह विमान भी जम्बोजेट ही था। इस पर लगभग ४०० यात्री सवार थे और ३५००० फीट की ऊँचाई पर प्रति घंटे एक हजार किलो मीटर की गति से उड़ने की शक्ति रखने वाला विमान, खुले आसमान पर तिरता जा रहा था, जैसे गहरे नीले समुद्र में कोई विशालकाय जहाज तैर रहा हो। यह जम्बो जेट बम्बई से रोम के लिए उड़ा था। इस विमान की गति से बम्बई और रोम के बीच की दूरी का अनुमान आसानी से लगाया जा सकता है, लेकिन आज के मानव मस्तिष्क की वैज्ञानिक कल्पना को प्रणाम, जिसने अपने ज्ञान और विज्ञान के कौशल से इन लम्बी दूरियों को समेट कर रख दिया है कि चाय दिल्ली में, भोजन बम्बई में।

सम्पूर्ण साढ़े आठ घंटे तक बिना कहीं विराम या इन्धन लिए, यह भीमकाय

२

जम्बो जेट खुले आकाश को दृढ़-विश्वास के पंखों से मापता रहा। इस विशाल जम्बो जेट विमान की बनावट और रूप-रेखा का अनुमान मात्र इस बात से लगाया जा सकता है कि भूमि की सतह से विमान के ऊपरी प्रवेश-द्वार तक ३२ सीढ़ियाँ थीं। आगे प्रथम श्रेणी, पीछे द्वितीय श्रेणी, मध्य भाग में दो शौचालय तथा दोनों ओर दो-दो शौचालय, कुल मिलाकर छः शौचालय, बिलकुल ही आधुनिकतम ढंग से निर्मित, नये उपकरणों से सज्जित और शौचालय के समीप ही किचेन (रसोई घर) रूम, स्टोर-रूम, किचेन रूम से सटा हुआ एक बड़ा तहखाना, रेफ्रीजेटर खाद्य सामग्रियाँ और पेय-पदार्थ रखने के लिए, फिर उसी के लिए हीटर-बाक्स, जिसमें भोजन का सारा सामान व्यवस्थित ढंग से रखा हुआ, जो बम्बई से स्टोर किया गया था। इस प्रकार समय-समय पर हमें खाद्य-सामग्रियाँ सुलभ होती रहीं। सबसे पहले टॉफी फिर फ्रीज्ड फ्रूट जूस उसके बाद हलका जलपान। चाय-कॉफी और कुछ देर बाद सामिष-निरामिष भोजन, यात्रियों की इच्छानुसार।

यात्रियों के मनोरंजन के लिए इस विमान में फिल्म दिखाने की व्यवस्था भी थी। हमारे मनोरंजन के लिए एक अंग्रेजी फिल्म भी दिखायी गयी। इस प्रकार बम्बई से रोम के बीच की लम्बी दूरी आठ घंटे के भीतर कैसे गुजर गयी, कैसे बीत गयी, कुछ भी अनुभव नहीं हुआ।

हमारे भारतीय जम्बोजेट के रोम पहुँचने से पूर्व कहा गया कि अपनी घड़ियाँ साढ़े चार घंटे पीछे कर लीजिए अब आप रोम के आस-पास हैं। रोम पहुँचने से पूर्व ही डिक्लरेशन फार्म (घोषणा-पत्र) भरा गया, जो विमान पर ही प्राप्त हो गया था। सभी यात्रियों ने फार्म भरकर अपने पास रख लिया था, जो रोम एयर पोर्ट पर विमान से बाहर आने के पहले देना था।

हम रोम के एयर पोर्ट पर उतरे तो हमारी घड़ी साढ़े बारह बजा रही थी और उस समय रोम की भूमि पर धीरे-धीरे सन्ध्या उतर रही थी सूर्यास्त हो रहा था। रोम की घड़ियाँ शाम के आठ बजा रही थीं ! घड़ियों में साढ़े चार घंटे का यह अन्तर विमान पर ही बता दिया गया था और हमने ऊपर, बहुत

ऊपर से रोम की भूमि के दर्शन किए कि अचानक हीघोषित किया गया, अब हम रोम आ गए, धन्यवाद !

समवेत स्वर में आर्य-प्रतिनिधियों ने जयकार किया और ६–६ की पंक्ति बनाकर सभी यात्री जम्वोजेट से बाहर आने लगे। निकास द्वार पर कस्टम डिक्लेरेशन फार्म अधिकारियों को दिया गया। हम सभी के पासपोर्ट चेक किए गये। मुहरें लगायी गयीं, वीसा देखा गया, फिर अपने सामानों की जाँच कराकर हम बाहर आ गये। हमारे लिए दो डि-लक्स वसें प्रतीक्षा कर रही थीं। हम सभी १०४ यात्रियों को, 'ए' और 'वी' ग्रुप बनाकर विभाजित कर दिया गया और इसी क्रम से हम सभी, वस के भीतर बैठ गए। आर्य प्रतिनिधि सभा के सहायक मंत्री श्री हरिदास ज्वाल जी मेरे साथ और ठीक मेरे पीछे पन्नालाल आर्य तथा यमुना बावू वैठे।

रोम की सांस्कृतिक भूमि पर

रोम के साथ इटली का इतिहास भी जुड़ा हुआ है। इटली का प्राचीन इतिहास अत्यन्त गौरवपूर्ण रहा है। इतिहास साक्षी है कि ई० पूर्व तीसरी शताब्दी में रोम-गणतंत्र की स्थापना हुई थी। यह साम्राज्य दिन प्रतिदिन उन्नति करता गया। एक समय ऐसा भी आया जब यूरोप के अधिकांश भाग पर रोम के शासक अधिकार कर वैठे किन्तु मध्ययुग आते-आते रोम का विशाल साम्राज्य छिन्न-भिन्न हो गया और इटली के कई टुकड़े हो गए। अठारहवीं शताब्दी के अन्त तक ये छोटे-छोटे राज्य किसी प्रकार स्थापित रहे परन्तु फ्रांस की क्रांति के समय इटली का भाग्य पलट गया। नेपोलियन वोनापार्ट ने उत्तरी इटली के विभिन्न राज्यों को पराजित कर सन् १७९६ ई० में गणतंत्र राज्य स्थापित किया।

यह वही रोम है, जो इसाई धर्म का केन्द्र है। रोम के पोप कभी समस्त यूरोप के धार्मिक सम्राट समझे जाते थे। पोप का स्थायी निवास रोम ही था। आज भी रोम अपने प्राचीन और महत्वपूर्ण इतिहास का ही नहीं, अपनी कला-प्रियता अपने समृद्ध साहित्य का स्मरण कराता है इसकी विश्वप्रसिद्ध संस्कृति के जीवंत उदाहारण आज भी इस भूमि पर देखे जा सकते हैं। पाश्चात्य देशों में संस्कृति और सभ्यता की महत्ता एथेन्स के बाद अगर किसी देश को मिली है, तो वह है रोम। आप रोम में यदि किसी स्त्री या पुरुष से यह पूछिए कि आप किस देश के निवासी हैं? वह तपाक से उत्तर देगा—"मैं रोमन हूँ....।" वहाँ कोई अपने को इटालियन नहीं कहता।

रोम कैसे बना

रोम को प्राचीन सनातन नगर कहा जाता है। यह कहना कठिन है कि रोम कब बसा, कब बना। यह कहना भी सरल नहीं है कि इसे किसने बसाया या बनाया, लेकिन एक दन्त-कथा रोम के निर्माण को लेकर यहाँ कही-सुनी जाती है। कथा है कि अल्बा लोंगा के एक राजा को उसके भाई ने गद्दी से उतार दिया और उसकी बेटी 'रेआ सिल्विआ' को वेस्ता की पुजारिन बनाया। वेस्ता की पुजारिन होने के कारण रेआ को ब्रह्मचर्य-व्रत स्वीकार करना पड़ा। लेकिन कुछ ही दिनों बाद उसके जुड़वाँ बेटे हो गए। राजा ने बहुत क्रोधित होकर आदेश दिया कि उन्हें नदी में डुबो दिया जाय। एक गुलाम ने उन्हें टोकरी में रखकर नदी में बहा दिया। लेकिन बच्चे डूबे नहीं, बल्कि अंजीर के एक पेड़ के नीचे किनारे आ लगे। जहाँ एक मादा भेड़िया ने उन्हें दूध पिलाया। उसके बाद एक गड़ेरिया बच्चों को उठाकर ले गया और उनका पालन-पोषण करने लगा। उसने उनका नाम 'रोमूलस' और 'रीमस' रखा। बड़े होते ही यह रहस्य चारो ओर

फैल गया। उन्होंने 'अल्वा लोंगा' में गद्दी हथियाने वाले राजा का तख्ता पलटकर और अपने नाना को फिर राजसिंहासन पर बिठा दिया और उससे उन्होंने नया नगर बसाने के लिए आदेश प्राप्त किया। नगर का शिलान्यास करते समय दोनों भाई संघर्ष पर उतर आए। रोमूलस ने रीमस को जान से मार दिया। इस दन्त-कथा के अनुसार नये नगर का नाम पड़ा—'रोम'।

आज रोम इटली की राजधानी है। यूरोप के दक्षिण भाग में, भूमध्य सागर को स्पर्श करता एक प्रायद्वीप बूट की तरह बाहर निकला हुआ है। इटली इसी प्रायद्वीप पर बसा है। इसके उत्तर में आल्प्स पर्वत माला है। इटली यूरोप का एक बड़ा देश है। यहाँ यूरोप में सोवियत संघ, ब्रिटेन और जर्मनी के बाद सबसे अधिक लोग रहते हैं। इसका क्षेत्रफल है—एक लाख सोलह हजार तीन सौ सोलह वर्गमील।

रोम एक प्राचीन नगर है। लगभग दो हजार वर्ष पूर्व रोम एक महान् शक्तिशाली साम्राज्य की राजधानी था। कुछ शताब्दियों के बाद यह साम्राज्य नष्ट हो गया लेकिन तेरहवीं और पन्द्रहवीं शती में इटली ने फिर विकास किया। इसके कुछ नगर यूरोप के सबसे प्रसिद्ध नगर बन गए। द्वितीय विश्व-युद्ध के बाद, इटली एक गणराज्य बना। इटली के साथ सिसिली और सार्डीनिया द्वीप भी शामिल हैं। रोम के दक्षिण-पूर्व में इटली का प्रमुख बन्दरगाह नेपल्स है। इसके पास ही 'विसूवियस' नामक प्रसिद्ध ज्वालामुखी पर्वत है। इटली के स्थापत्य कलाकार, चित्रकार, मूर्तिकार और लेखक विश्व-विख्यात हैं। इटली के पुराने महलों और गिरजाघरों में आज भी अमूल्य कला-कृतियाँ सुरक्षित हैं।

इटली की भूमि बहुत ही उर्वरा है। अच्छी जलवायु इस देश की विशेषता है। यहाँ जैतून, अंगूर, नारंगी और नीबू बहुत अधिक मात्रा में होते हैं, कुछ भागों में चावल और चुकन्दर भी।

रोम इटली की राजधानी ही नहीं, इटली के इतिहास का एक ज्वलन्त अध्याय है। इटली के निर्माता बेनिटो मुसोलिनी को फासिस्ट विचारधारा का

सूत्रधार माना जाता है लेकिन आज का इटली उसके दुस्साहसिक प्रकृति का प्रतीक भी है। रोम से पोप के धर्माचारी प्रभुत्व को मुसोलिनी ने ही क्षीण किया। रोम का लैटरन महल साक्षी है कि इस महल के भीतर ही मुसोलिनी और पोप के बीच सन्धि हुई। इस सन्धि के अनुसार पोप का 'वेटिकन सिटी' पर अधिकार सुरक्षित रहा। वेटिकन सिटी आज भी इटली की राजधानी 'रोम' के मानचित्र पर है। इसका क्षेत्रफल कुछ सौ एकड़ है लेकिन पोप को अपने वेटिकन राज्य में अन्य देशों के राजदूतों को बुलाने तथा अपने राजदूत अन्य राज्यों में भेजने का अधिकार है। उसके अपने सिक्के हैं, अपने डाक टिकट भी। इसी सन्धि के वाद इटली की जनता में मुसोलिनी का प्रभाव गहरा हुआ। रोम आधुनिक इटली का एक समुन्नत नगर है।

रोम के हवाई अड्डे से हम अपने लिए पूर्व निर्धारित होटल मर्कालियो गए और हमको ३१३ नम्वर का कमरा दिया गया। कई औपचारिकताओं को लेकर विमान स्थल पर वहुत विलम्ब हो गया। मेरे लिए सौभाग्य कि पन्नालाल आर्य के साथ ही हम वम्वई से उड़े थे और रोम की भूमि पर उतरने के वाद वस से होटल मर्कालियो गए। इस होटल के भीतर भी एक साथ ही ठहरे। श्री ज्वालजी का सम्पर्क सानिध्य भी मेरे लिए अत्यन्त उत्साहवर्द्धक रहा। इस होटल के भीतर विलम्ब से प्रवेश के वाद भी व्यवस्था को लेकर कोई कठिनाई न हुई। ७ वजे होटल वन्द था पर, मेज पर भोजन हमारी प्रतीक्षा कर रहा था। अपनी इच्छानुसार हमने भोजन किया। इस होटल के साफ-सुथरे कमरे, कमरे के फर्श पर मूल्यवान सुकोमल कारपेट आरामदेह विछावन वाथ रूम के भीतर तौलिया सावुन ठंढे और गरम पानी की व्यवस्था, कहने का तात्पर्य सारी सुविधाओं से सुसज्जित। वम्वई से रोम की लम्बी दूरी, लम्बी दूरी की थकान के वाद रात को गहरी नींद आयी लेकिन इस होटल के भीतर भी हम जैसे दूर-सुदूर आसमान पर चक्कर काटते रहे।

शैशव-काल से ही प्रातः उठने का अभ्यासी, मेरी आँखें निश्चित समय पर खुलीं और आठ वजते-वजते मैं रेस्टोरेन्ट के भीतर आ गया। मेरे

सामने जलपान का पैकेट आ गया एक पोटली के भीतर ब्रेड, बटर आदि के साथ चाय का सामान भी गरम पानी में चाय की छोटी पोटली डाली गयी, अलग से दूध और चीनी बस उत्तम कोटि की चाय तैयार हो गयी। चाय-जलपान के वाद हमलोग बस के समीप लगी छोटी-सी दूकान पर आ गए। वीस लीरा (इटालियन सिक्के) प्रत्येक की दर से हमने कुछ अन्तर्देशीय-पत्र लिए। एक एयरोग्राम, एक डालर का मिला। एक एयरोग्राम के लिए सात सौ लीरा भुगतान किया, भारतीय एक रुपया वरावर है सौ लीरा के।

भारतीय एयरोग्राम की तुलना रोम के एयरोग्राम से करना अनुचित है लेकिन भारत का एक मध्यमवर्गीय परिवार जिस परिवेश के भीतर जीता है, वह रोम के जीवन-स्तर से अत्यन्त ही सुविधाजनक है। सम्भव है कि रोम के नागरिकों की क्रय-शक्ति अधिक सक्षम हो।

हमने देखा पन्नालालजी कुछ कदम पीछे रह गए। शायद उन्होंने अपने लिए टॉफियाँ लीं। आज घड़ी की सुई वड़ी तेज गति से नाच रही थी। नौ वजने में कुछ मिनट वाकी थे। हमने वस में अपना स्थान लिया। ठीक नौ वजते-वजते हमारी वस निश्चित समय पर स्टार्ट हो गयी और अव हम रोम की खुली सड़कों पर भाग रहे थे। सड़क के दोनों ओर खड़े आलीशान भवन लेकिन व्यवस्थित पथ-परिवहन की व्यवस्था आने-जाने के रास्ते अलग-अलग, प्रशस्त फुट पाथ। ये विशाल-भवन अपने स्थापत्य में प्राचीनता की सूचना देते हैं।

अलग से देखने पर लगता है जैसे ये विशाल भवन संगमर्मर के वने हुए हैं। अधिकांश भवनों पर पंखवाले घोड़ों पर दन्त-कथाओं से ली गयीं देवताओं की मूर्त्तियाँ स्थापित हैं। चौराहे वहुत ही चौड़े हैं, जिन पर सुन्दर फव्वारे वने हुए हैं। रोम के एक चौराहे पर वहु त बड़े फव्वारे के बीचोवीच जुपिटर की विशाल-मूर्त्ति है, जो एक पशु को पकड़े हुए है, जिसके मुख से पानी की धारा निकल रही है। इस जुपिटर की मूर्त्ति के चारो ओर देव-मूर्त्तियाँ हैं। सड़कों के दोनों ओर सिडार और चिनार के पेड़ लगे हैं, जो एक मनोहारी दृश्य उपस्थित

करते हैं, जहाँ यायावरमन ठगा-ठगा-सा रह जाता है। हम वैटीकन सिटी देखने गए।

वैटीकन सिटी रोम का एक प्रसिद्ध नगर है। कहा जाता है कि यह वैटीकन सिटी सारे संसार में प्रसिद्ध है। पोप का सुविशाल भवन यहीं है। यहाँ पोप का आदेश प्रत्येक के लिए सर्वोपरि है। वैटीकन सिटी का चर्च जिसे लोग वैटीकन चर्च भी कहते हैं अपनी धार्मिक महत्ता के लिए प्रसिद्ध है। इस चर्च के समीप एक सुन्दर पार्क है, जो अपनी मोहकता से किसी को भी आकर्षित करता है। मुझे बताया गया कि इस पार्क के भीतर प्रदेश निषिद्ध है, उचित आदेश के बिना इस बगीचे के भीतर प्रवेश संभव नहीं है, केवल पोप ही यहाँ टहल सकते हैं।

रोमवासी रोम को 'रोमा' कहते हैं। रोम के विनाश और निर्माण की अपनी विशिष्ट कहानी है। कहा जाता है कि 'रोम वाज नॉट बिल्ट इन-ए-डे' रोम एक दिन में नहीं बना था। यह सत्य है कि कोई भी देश एक दिन में नहीं बनता। हमारी डिलक्स बस रोम की सड़कों से गुजर रही है। यह है वैट्रिकन सिटी चर्च, चर्च के प्रवेश-द्वार पर लिखा था-'इनराटा' (Inr.ta) इन्ट्रेंस के स्थान पर।

रोम एक पुरातन नगर है। इस भूमि से प्राचीनता की झलक अवश्य मिलती है लेकिन ऐसा नहीं कि वहाँ आधुनिक सभ्यता का विकास नहीं हुआ है। यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि इटली एक रोमन कैथलिक देश है। इस देश के निवासियों की विचारधारा, इसी भावधारा से प्रभावित-प्रेरित लगती है।

हमारे दोपहर के लंच का प्रबन्ध 'होटल कोलम्बस' में था। भारतीय आर्य प्रतिनिधियों का यह विशाल समूह पूर्ण अनुशासन के साथ रोमनगर का दर्शन-परिदर्शन करता होटल कोलम्बस, के द्वार पर आ गया। होटल कोलम्बस की व्यवस्था बहुत ही अच्छी थी। इस होटल के भीतर मदिरा पान का ही विशेष प्रबन्ध था। मैंने देखा-अधिकांश लोग पेय पदार्थ ही लेते थे। होटल के बाहर भी मेज और कुर्सियाँ लगी थीं। इन मेजों पर सुन्दर कलात्मम ग्लास सुसज्जित थे। शराब की अनगिनत बोतलें थीं। यह व्यवस्था प्रायः प्रत्येक स्थान पर देखी जा सकती थी, जैसे हमारे यहाँ चाय की दुकानें सजती हैं, हर चौराहे, हर नुक्कड़

पर । कभी-कभी होटल के भीतर से बैरा भी कुछ लाकर पीने को देता था । बाहर लगी मेज-कुर्सियों पर खुले आसमान के नीचे लोग बेझिझक खा पी रहे थे ।

यहाँ के लोगों की वेश-भूषा देखकर मुझे तनिक भी आश्चर्य न हुआ—पुरुषों के शरीर पर पैण्ट, गंजी या जर्सी, स्त्रियों के तन पर भी पैण्ट और गंजी, कुछ लोगों के वदन पर हाफ गंजी और स्कर्ट आदि । 'गोल-गोल गोरे चेहरे, बहुत ही साफ-सुथरे, सौम्य आकृतियाँ ।

यहाँ की सवारियाँ नियमित और व्यवस्थित देखने को मिलीं, अधिकांश गाड़ियाँ शीत-ताप नियंत्रित । हमारी संख्या एक सौ दो थी, इसलिए दो डिलक्स वसें थीं, ५१-५१ व्यक्ति दो ग्रुप में थे-ग्रुप-ए, ग्रुप-बी । हमलोग होटल कोलम्बस से नौ वजे वाहर आए । हमारा सामान वस के तहखाने के भीतर रख दिया गया । होटल कोलम्बस से हम इटली के खूबसूरत नगर 'फ्लोरेंस' के लिए विदा हुए । हमारे बी-ग्रुप की वस एक वजकर तीस मिनट पर चली । एक घण्टे की यात्रा के बाद किसी टुरिस्ट मार्केट के पास आकर रुकी । एक घंटे का विराम इस टुरिस्ट मार्केट के पास मिला ।

इस विशाल मार्केट की ऊपरी मंजिल पर जाने के लिए लम्बी सीढ़ी लगी थी । इस सीढ़ी पर चलकर चढ़ने की आवश्यकता नहीं थी, वह सीढ़ी स्वयं स्वाभाविक गति से चल रही थी, अविराम, बस, आप सीढ़ी पर अपने पाँव रखिए और वड़े आराम के साथ अपने आप ऊपरी मंजिल पर पहुँच जाइए । हम सभी ने उस चलती-फिरती सीढ़ी का आनन्द लिया और हम टुरिस्ट मार्केट की ऊपरी मंजिल पर गए । ऊपर जीवनोपयोगी सामग्री का काउण्टर लगा था । हम घूम-फिर कर फिर अपनी वस के पास आ गए । होटल कोलम्बस से मिले जल-पान के पैकेट खोलकर ब्रेड, वटर और फल लिया ।

हमारी वस फिर तीन वजकर तीस मिनट पर अगली यात्रा के लिए चल पड़ी । साफ-सुथरी और चमकदार सड़क पर बस तेज गति से भाग रही थी । हम अगल-बगल की मधुर प्राकृतिक दृश्यावली अपनी आँखों में उतारते जा रहे थे ।

इस मनोहारी पथ के दोनों ओर ६ फीट की दीवार बनी हुई देखी, जहाँ दीवारें नहीं थीं वहाँ लोहे के खम्भे और गार्डर लगे हुए थे। इन दीवारों, खम्भों और लोहे के गार्डरों को देखकर ऐसा लगा जैसे सुरक्षित और निरापद बस-यात्रा के लिए ही यह विशेष व्यवस्था की गई है, कहीं भी धूल-मिट्टी नहीं इसलिए हमारे बदन के कपड़े इतनी लम्बी यात्रा के बाद भी कहीं गन्दे न हुए। इस विशाल जनपथ से गुजरते समय कभी-कभी ऐसा लगता था, जैसे हम भैंसे से काठमांडो के पर्वतीय मार्ग पर हैं।

कहीं ऊँची कही नीची जमीन लेकिन इस सड़क से हमारी डिलक्स बस बहुत आराम के साथ लिए जा रही थी दूर-सुदूर दिशाओं की ओर। चारो ओर फल के वृक्ष, अंगूर की लतायें, चेरी, आड़ू, चिकू आदि मक्का, धान और जौ, गेहूँ की फसलें जैसे अभी-अभी कटी थीं। ऐसा लगा जैसे सम्पूर्ण कृषि वैज्ञानिक ढंग से होती है। धान के कटे हुए तथा उसका भूसा मशीन से अलग करते हुए, धान निकल जाने के बाद भूसा को अलग छोटे-छोटे टुकड़े कर उसका पैकेट बनाते हुए मुझे नहीं मालूम ये पैकेट कहाँ जाते हैं और किस काम आते हैं लेकिन पैकेट को देखकर ऐसा लगा जैसे यहाँ एक भी तिनके का दुरुपयोग नहीं होता।

यहाँ एक ही आदमी सैकड़ों एकड़ की खेती कर सकता है इसलिए कि सभी कार्यों के लिए मशीनें हैं। इन मशीनों से कोई भी काम किया जा सकता है। इस क्षेत्र में मक्के की फसल अधिक देखी गयी। मक्के के बाद 'सूर्यमुखी' (Sunflower) जिसका तेल होता है। सूर्यमुखी की लम्बी-चौड़ी खेती इस क्षेत्र की मुख्य फसलों में आती है, कहीं-कहीं बाजरे की खेती भी दिखायी पड़ी। एक फल तरबूजे के समान देखने को मिला।

सिंचाई की आधुनिकतम व्यवस्था इटली की विशेषता है, जो इस देश की कृषि को नित नयी सफलताओं के सोपान देती है। दुबली-पतली और छोटी नहरों के अतिरिक्त बोरिंग से फव्वारे का प्रबन्ध, ऐसा लगता था, जैसे आसमान से रिमझिम-रिमझिम वर्षा हो रही है। इस फव्वारे से सारे खेत को सिंचित किया जा रहा था। सभी पौधे कतारों में अत्यन्त ही दर्शनीय लग रहे थे, कहीं तम्बाकू की खेती, कहीं नासपाती की बागवानी और अन्य फल-फूल आदि।

प्रतिमाओं का नगर फ्लोरेंस

आज दिनांक ११ अगस्त १९८० है। हमारी डिलक्स बसें साढ़े सात बजे सन्ध्या समय फ्लोरेंस पहुँचीं। फ्लोरेंस (FLORENCE) इटली का एक प्राचीन नगर है, जो अपने सौन्दर्य के लिए प्रसिद्ध है। इस नगर के बीच से एक नदी बहती है—आर्नो और यह नगर दोनों किनारे पर बसा हुआ है। इस नदी पर नगर के भीतर करीब आधे दर्जन पुल हैं, जिनका अपना ऐतिहासिक महत्व है। कहा जाता है कि रोमन काल में भी यह नगर बहुत ही चर्चित और प्रसिद्ध था। चौदहवीं शती में फ्लोरेंस यूरोप में कला और साहित्य का सबसे बड़ा और महत्व-पूर्ण केन्द्र था। मेरे दुभाषिये ने बताया—"महाकवि दांते, महान शिल्पी माइकेलैं-जिलो और विशिष्ट चित्रकार लियोनार्दो दा विंची की जन्मभूमि ही नहीं कर्म-भूमि होने का सौभाग्य फ्लोरेंस की भूमि को प्राप्त है। इटली की ये अविस्मरणीय महान प्रतिभायें इस नगर की आत्मा बनकर आज भी इस नगर के निवासियों के लिए गौरवमय स्थान रखती हैं।

फ्लोरेंस नगर में भी चर्चों की संख्या बहुत है। कहीं-कहीं चर्च के आगे गेलरी पर नग्न चित्र अंकित हैं जैसे नेपाल के धार्मिक मन्दिरों में और कहीं-कहीं भारत के मन्दिरों में भी। फ्लोरेंस के पहले हमने कई छोटे उप-नगरों को तेज भागती बस के भीतर से देखा छोटी-छोटी मोटर सायकिलें अगल-बगल से गुजर जाती थीं। सभी गाड़ियाँ यहाँ लेफ्ट हैंड ड्राइव मिलीं। फ्लोरेंस के वाकल गोना रोमा में साढ़े आठ बजे डिनर मिला और फिर साढ़े नौ बजे हमारी बसें फ्लोरेंस से चल-कर ब्लोना पहुँचीं। हमें मोटेल एग्रीप (MOTTE LAGRIP) का कमरा नम्बर ४०३ मिला 'मोटेल एग्रीव इटली के प्रमुख नगर ब्लोना का एक अत्यन्त ही आधुनिकतम आवासीय होटल है, जहाँ सारी सुविधायें सुलभ हैं। हमने रात्रि विश्राम किया और फिर दिनांक १२ अगस्त १९८० को प्रातः ६ बजे ही तैयार होकर रेस्टोरेंट के भीतर आ गए, अल्पाहार के लिए। हमारी बस ब्लोना से सात बजे सुबह चलने को थी। इसकी सूचना पहले ही दे दी गयी थी। जलपान चाय के समय पन्नालाल आर्य के साथ इटली के जन-जीवन की चर्चा होती रही विशेषतया कृषि की आधुनिकतम प्रणाली तथा संचार-व्यवस्था को लेकर हम काफी देर तक अपने विचारों और अनुभवों का आदान-प्रदान करते रहे।

हमारी बस व्लोना से आधे घण्टे बाद साढ़े सात बजे खुली। यह इटली की भूमि है। इस भूमि ने जीवन का कठिन उतार-चढ़ाव देखा है। इटली का इतिहास भीषण संघर्ष और क्रान्ति से भरा पड़ा है लेकिन समय-समय पर इटली की जनता को सजग नेतृत्व भी मिलता रहा है। इस भूमि के इतिहास को लेकर कुछ भी कहना विषयांतर हो सकता है, लेकिन यह स्मरणीय है कि इटली के राष्ट्रीय जीवन को प्राणवान बनाकर जोजेफ मेजिनी ने अपने को इटली के राष्ट्रीय आन्दोलन का अग्रदूत सिद्ध कर दिया। मेजिनी ने इटली की जनता को यह अनुभव करा दिया कि इटली एक राष्ट्र है, परिणाम सामने आया क्रांति, संघर्ष, इसके पीछे जन-शक्ति थी, जन-जागरण था। इटली की स्वाधीनता के लिए हुए द्वितीय चरण का नेतृत्व काउण्ट कावूर ने किया।

इटली में नेपोलियन बोनापार्ट, मुसोलिनी और गैरीबाल्डी के नाम आदर के साथ लिए जाते हैं। हमारी बस गुजरती जा रही थी। हमारे दुभाषिये ने दिखाया—'यहाँ से थोड़ी ही दूर पर नेपोलियन ब्रोनापार्ट की माँ का घर है, घर के सामने एक चर्च था जो दूर से देखने पर मन्दिर जैसा लगता था।

हमारी बस अपनी स्वाभाविक गति से आगे निकलती जा रही थी, छोटे-बड़े नगरों-उपनगरों और ग्रामीण अंचलों को पीछे छोड़ती हुई। हमारी बस पीछे छोड़ती जा रही थी ज्वार-बाजरे की लम्बी-चौड़ी खेती, तम्बाकू की आधुनिकतम काश्तकारी। मैंने देखा गेहूँ कटे खेत में ट्रैक्टर चल रहा था, इसके पीछे मशीन लगी थी, जो गेहूँ के पौधे को काटकर छोटे-छोटे टुकड़े कर रही थी। ये टुकड़े बंडल और पैकेट का रूप लिए सहज ही देखे जा सकते थे। ये सारे काम मात्र दो आदमी कर रहे थे। इन क्षेत्रों में आलू-बुखारा तथा अंगूर का फल अधिकाधिक मात्रा में पैदा होता है लेकिन यहाँ के अंगूर का रंग काला और आकार में हमारे देश के अंगूर से बड़ा होता है।

हमारी गाड़ी पागामेन्टो के पेट्रोल डिपो पर पेट्रोल लेने और टोल टैक्स आदि देने के लिए रुकी। हमारे यहाँ टोल-टैक्स देने के लिए जैसे गाड़ियाँ रोकी जाती हैं, उसी तरह यहाँ भी लेकिन विशेषता यह है कि यहाँ कहीं भी चालक या

यात्री को गाड़ी से उतरने भी आवश्यकता नहीं है। गाड़ी रोड पर खड़ी हुई कि चालक टेक्स के रुपये और कागजात बढ़ा देते हैं, कुछ ही मिनट के भीतर यह कार्य निष्पादित हो जाता है, न कहीं विलम्ब होता है, न किसी प्रकार की दिक्कत या परेशानी होती है। हमारी बस कुछ ही मिनट के भीतर आगे बढ़ गयी। हमारे भारतीय प्रतिनिधि गाड़ी के भीतर ही बैठे रहे।

अब हमारी गाड़ी समुद्र के किनारे से पार कर रही थी, दूर-दूर तक फैली सीमाहीन जल राशि, लोग कार और स्कूटर से आकर मछलियों का शिकार करते देखे गए। एक स्थान पर लगे 'नेम-प्लेट' के अनुसार यह 'वेनेजिया पोर्ट' था, जहाँ पानी के जहाज रुकते हैं। कुछ ही दूरी पर लोकल ट्रेन गुजर रही थी और सामने था रेलवे स्टेशन। यह है इटली का एक प्रसिद्ध नगर-वेनिस और हम वेनिस आ गए।

नौकाओं का नगर : वेनिस

आज के विज्ञान का चमत्कार, मानव-मस्तिष्क की जादूगरी कि हम १० तारीख को दिल्ली से चले थे और आज १२ अगस्त १९८० को इटली के वेनिस नगर का दर्शन कर रहे हैं। मेरी आत्मा सोचने लगी है कि इतनी लम्बी दूरी आज सिमटकर कितनी छोटी हो गई है, जैसे किसी समर्थ पुरुष ने इस लम्बी दूरी को अपने सशक्त पंजे के भीतर समेटकर रख लिया है।

आज मेरी यात्रा का चौथा दिन है लेकिन ऐसी अनुभूतियाँ होने लगी हैं कि मुझे भारत से चले काफी दिन हो गए। परिवार विशेषकर बेटे आनन्द एवं सत्यानन्द का स्मरण बार-बार आने लगा है। रोम से डिलक्स बस की तेज गति, तेज गति के बीच यह डायरी, भाषा और बोली की कठिनाई अलग सारा काम दुभाषिए के सहारे यूरोपीय देशों की यात्रा फ्रेंच या जर्मन भाषा के ज्ञान के बिना कभी संभव नहीं है। कहीं-कहीं अंग्रेजी जानने वाले भी मूक होकर देखते रह जाते हैं। मेरा साधारण अंग्रेजी का ज्ञान किस काम का लेकिन मेरे दुभाषिये ने मुझे बहुत सहयोग किया, वर्ना इस डायरी की कल्पना भी संभव नहीं थी।

हम वेनिस पहुँचते ही जरदिनी गार्डेन, एक्स दियाले झील के भीतर स्टीमर पर सवार होकर सेन्टमार्क केथेड्रल चर्च देखने गए। इस चर्च के प्रवेश-द्वार पर

भी ENTRATA और निकास-द्वार पर USCITA लिखा था। इस चर्च के ऊपर पाँच टावर हैं। ३२ फीट गहरे और ३२ हजार पाये पर बना यह स्थान वेनिस का एक अत्यन्त दर्शनीय स्थान है। मेरे दुभाषिए ने बताया कि ग्यारह हजार वर्ष पूर्व इसका निर्माण आरम्भ हुआ। यह भूमि कचरे से भरी गयी और उसी कचरे को आधार बनाकर ३२ हजार पाये बनाये गए। इस प्रकार इस दर्शनीय चर्च का निर्माण सम्भव हुआ। इस चर्च को दूर से देखकर ऐसा लगता है, जैसे चर्च न होकर कोई मन्दिर है। इस चर्च के निर्माण को देखकर रोमन स्थापत्य कला से परिचित हुआ जा सकता है। इस विशाल और आकर्षक गिरिजाघर का निर्माण वेनिस के कुशल अभियन्ताओं या वास्तुकारों ने किया। यह कल्पना भी सहज ही की जा सकती है कि यहां की संस्कृति कितनी प्राचीन, कितनी समुन्नत रही होगी।

इस स्थल पर यह कहना अप्रांसगिक न होगा कि रोम के जितने भी प्राचीन चर्च हैं, उन्हें देखकर किसी भी भारतीय को भ्रम हो जाना स्वाभाविक है, लेकिन नव निर्मित चर्च वस्तुतः कैथोलिक चर्च हैं। इनके आकार-प्रकार और रूप रेखा से किसी प्रकार का भ्रम नहीं होता।

हाँ, तो इस झील से करीब सोलह सौ नहरें (केनाल) निकाली गयी हैं, नहरों के दोनों ओर आलीशान भवन खड़े हैं। बड़ी नहरों से जुड़ी हुई हैं, छोटी दुवली पतली नहरें। ये नहरें परस्पर आलिगन करती हुई चलती हैं जैसे, अत्यन्त ही मनोरम और मनोहारी। ये नहरें संचार का सर्वोत्तम साधन बन गयी हैं। स्मरणीय है कि वेनिस के सेंट मार्क कैथेड्रल चर्च तक जाने के लिए स्टीमर के अलावा और कोई भी विकल्प नहीं है, कोई अन्य संचार-साधन सम्भव नहीं है।

हमारे यहाँ जैसे वड़े-छोटे नगरों उपनगरों में आवागमन के लिए सड़कें हैं, गलियाँ हैं, वैसे ही वेनिस में वड़ी-छोटी नहरे हैं। इन नहरों में यान्त्रिक नावें चलती हैं। आपको कहीं भी जाना है, नाव से ही जाइए, वड़े आराम से यात्रा कीजिए।

वेनिस की वस्ती घनी है और आवादी भी उतनी ही घनी लेकिन आवागमन या संचार-व्यवस्था को लेकर किसी प्रकार की समस्या नहीं है, किसी प्रकार का कष्ट भी नहीं। सड़कें नहीं हैं तो क्या, गली-गली में तेज दौड़ती नावों का जाल विछा है। लोग नावों से उतरकर अपने घरों में चले जाते हैं। पहले अपने यहाँ भी कहीं-कहीं जल परिवहन की व्यवस्था रही है। कलकत्ता वन्दरगाह से पहले गंगा नदी होकर पाटलिपुत्र (पटना) तक माल आता-जाता रहा है कहीं-कहीं आज भी यह व्यवस्था है लेकिन जल का जो सर्वोत्तम उपयोग इटली कर रहा है, वह देखने योग्य है। इस व्यवस्था ने चमत्कृत कर दिया है।

आज वेनिस एक आधुनिकतम नगर का स्वरूप लिए इटली के मानचित्र पर ही नहीं, यूरोप के मानचित्र पर है, साधन और सुविधा की दृष्टि से ही नहीं, सम्पन्नता की दृष्टि से भी। मुख्य नहरों से वोट गुजरते हैं, छोटी नहरों से नावें। कहीं किसी प्रकार की कोई दिक्कत नहीं, कोई परेशानी नहीं, जीवन अत्यन्त सामान्य ढंग से चल रहा है। मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि जहाँ आज का यह नगर 'वेनिस' है, पहले एक छोटा-सा द्वीप (टापू) था। जो कूड़े-कचरे से भरा गया। यह कल्पना सहज ही की जा सकती है कि कितना समय और श्रम लगा होगा।

हमारी डिलक्स-वस दूर खड़ी थी। हमने बस से उतर कर सेंट मार्क कैथेड्रल चर्च तक जाने के लिए चार सौ लीरा (भारतीय चार रुपये) भुगतान किया चर्च तक पहुँचने में आधे घण्टे का समय लगा। लीरा इटली की मुद्रा है, इटली और भारतीय मुद्रा का मूल्य समान है लेकिन कभी-कभी चार सौ लीरा या पाँच सौ लीरा सुनकर परेशानी हो जाती है।

वेनिस इटली का सुविधा-सम्पन्न नगर है लेकिन वेनिस इटली का वहुत मँहगा शहर भी कहा जा सकता है। क्या आप सोच सकते हैं कि एक केले की कीमत पाँच रुपये होगी ? एक छोटा-सा फल भी दो रुपये से कम का मिलना कठिन है। एक शाम के साधारण भोजन के लिए सौ रुपये से लेकर डेढ़ सौ रुपये तक भुगतान करने होते हैं। इस भोजन के साथ थोड़ा सा चावल, सूप और

थोड़ी उबाली हुई सब्जी। बस इससे अधिक कुछ भी नहीं। आवासीय होटल के एक कमरे का किराया, अकेले मतलब सिंगल-बेड के लिए ढाई सौ रुपये और डबल-बेड के लिए साढ़े तीन सौ रुपये से कहीं कम नहीं। वेनिस का सौन्दर्य, वेनिस की संचार-व्यवस्था ने मन को आह्लादित किया था, लेकिन इस नगर की मँहगाई देखकर होश गुम हो गए। कोल्ड-ड्रिंक्स के नाम पर दो सौ मिली लीटर का एक डब्बा कोकोकोला सात रुपये का मिला, चाय और काफी साढ़े तीन रुपये से पाँच रुपये तक। मेरे लिए ही नहीं, मेरे जैसे किसी भी भारतीय के लिए यह नगर भारी पड़ जाता है, मेरे लिए तो बहुत ही भारी सिद्ध हुआ।

अपने एक छोटे से बाक्स को, जिसके भीतर थोड़ा खाने-पीने का सामान था, दूकान से उठाकर डिलक्स बस के भीतर रखने के लिए एक मजदूर लगाया तो उसने सौ रुपये लिए। मेरे आश्चर्य और विस्मय की सीमा न थी। दुभाषिये ने बताया कि इटली के मोटर चालक प्रतिमाह तीन हजार से चार हजार रुपये तक पाते, हैं इन्हें पच्चीस रुपये प्रतिदिन के हिसाब से अलग से भत्ता भी मिलता है।

वेनिस नगर में जगह-जगह यूरिनल बने हुए हैं। आपको यदि पेशाव करना है तो यूरिनल के भीतर जाना अनिवार्य है और एकबार यूरिनल के भीतर जाने के लिए एक सौ पच्चास लीरा निर्धारित है। आप यह काम अन्यत्र नहीं कर सकते। यही कारण है कि वेनिस एक साफ-सुथरा सौम्य नगर नजर आता है। इस नगर के भीतर गुजरने वाली मुख्य नहरों के किनारे बड़े-बड़े होटल बने हुए हैं। इस नहर के तट पर छोटे-छोटे चर्च नजर आते हैं। इन नहरों में छोटी किश्तियों पर चार-पाँच आदमी सुविधा के साथ बैठकर घूम सकते हैं, जिनके लिए सौ रुपये से डेढ़ सौ रुपये तक भुगतान करना होता है।

अभी हम मुख्य नहर से स्टीमर बोट पर सवार आगे खड़ी अपनी बस की ओर आ रहे हैं और उधर जल पुलिस की नाव गुजर रही है। पुलिस नाव पर सवार होकर निरीक्षण कार्य करती है। वायरलेस सेट से लैस इस नाव को अकेले पुलिस विभाग का अधिकारी चला रहा है। वह वायरलेस से बातें भी करता जाता है
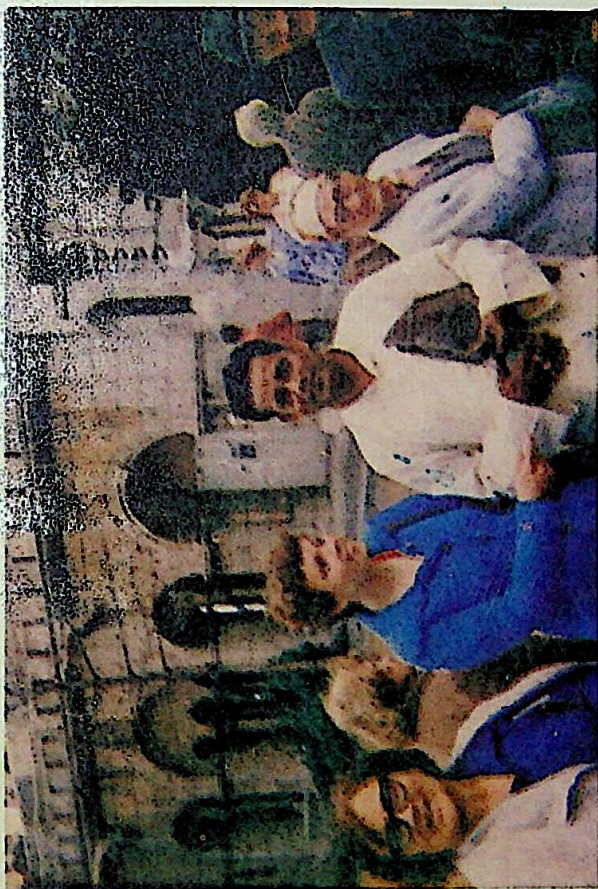
लेखक : चेकोस्लोवाकि़या के प्राग सिटी पुराना कि़ला और चर्च के पास
विदेशी परिवार के साथ

और नाव भी चला रहा है। मेरी आँखों के सामने है—होटल कन्टीनेन्टल, होटल प्रिंस, होटल मान्टा, होटल कार्लोरोना, होटल कैनाल, होटल वाल्टर। इस स्टीमर बोट पर मेरे सामने हैं मित्रवर श्रीहरिदास ज्वाल और भाई पन्नालाल जी। स्टीमर बोट पर हिचकोले खाते हुए भी मेरी नोट बुक मेरे सामने हैं और मैं वेनिस की इस अनुपम दृश्यावली को कागज पर उतार रहा हूँ। मेरा कैमरा मेरा साथी बन गया है। मेरे कई मित्र मेरी ओर देखकर सोचने लगे है—यह क्या कर रहा है? हम जरदिनी गार्डेन एक्सरियाले सेंट मार्क केथेड्रल चर्च से लौट कर वेनिस आ गए हैं। हमारी डिलक्स बस सामने खड़ी प्रतीक्षा कर रही है और हमने डेढ़ बजते-बजते वेनिस छोड़ दिया है। हमारी बस तेज गति से भाग चली है लेकिन वेनिस मेरी आँखो से ओझल नहीं हो सका है। हम देखते रह गए। वेनिस नगर के आस-पास जन-जीवन को, वेनिस के जागरण को, जहाँ श्रम की आरती उतारी जाती है, जहाँ श्रम की वन्दना होती है। मैंने सौन्दर्य के नगर वेनिस को प्रणाम किया।

युगोस्लाविया की ओर

हमारी बस तेज गति से भागती जा रही थी, जैसे पंखों पर तैर रही हो। हमारी आँखें अगल-बगल की दृश्यावली को अपने भीतर समेट रही थीं। हम अपनी खुली-खुली आँखों से उस सौन्दर्य को पी रहे थे। कुछ दूर जाने के बाद हमारी बस आधे घण्टे के लिए लंच आदि को लेकर ठहर गयी। हमने फल और ब्रेड आदि लिए। मेरे दुभाषिये ने बताया-हम अब युगोस्लाविया की ओर जा रहे हैं। पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार हम जेग्रेब जायेंगे।

कुछ ही दूर जाने के बाद सूचित किया गया कि अब युगस्लाविया की सीमा आ रही है। किसी ऊँची पहाड़ी के नीचे एक शहर दिखायी देने लगा। दुभाषिए ने सूचित किया कि सामने है ट्रेस्टे का बन्दरगाह और यह शहर है युगोस्लाविया के बोर्डर के निकट का शहर 'इल्लीमा'। कुछ ही क्षण के बाद

मिला 'सोलोविजा चेक-पोस्ट', जहाँ हमें अपना-अपना स्वास्थ्य-प्रमाण-पत्र, पास-पोर्ट और वीसा आदि चेक-पोस्ट के अधिकारियों को दिखाना पड़ा। हमने पास-पोर्ट आदि दिखाकर मुहरें लगवायीं। हमारी बस आगे बढ़ने लगी। अब हम इटली को पारकर युगोस्लाविया की सीमा में आ गए थे। हमारी बस आगे बढ़ी, बढ़ती रही और अब हम 'लुभंजियाना' होते हुए बढ़ने लगे, यह थी युगोस्लाविया की पर्वतीय भूमि, हमारी बस जब वेनिस से आगे बढ़ी थी, पहाड़ियों की लम्बी कतारें दीखने लगी थीं, कहीं-कहीं जंगल भी। युगोस्लाविया सीमा के पहले एक सुरंग मिली, जिसके भीतर प्रकाश हो रहा था।

यह युगोस्लाविया है

हमारी बस जेग्रेव (युगोस्लाविया) की राह पर भागी जा रही थी। कहीं-कहीं ऊंची पहाड़ियाँ और इन पहाड़ियों के नीचे सरकती हुई रेल-गाड़ियाँ मनोहारी दृश्यावली उपस्थित कर रही थीं। ऐसी दृश्यावसी जो किसी भी यायावर को अपनी ओर सहसा आकर्षित करे, आमन्त्रित करे। हम युगोस्लाविया की भूमि से गुजर रहे हैं और हलकी-हलकी वर्षा शुरू हो गयी है। वर्षा थोड़ी तेज हुई, लेकिन डिलक्स-बस के परिचालन पर इस वर्षा का कोई प्रभाव नहीं है, हमारी बस पूरी गति के साथ भागती जा रही है।

जेग्रेब में

युगोस्लाविया ने यूरोप के इतिहास में अपना विशिष्ट स्थान बना लिया है। युगोस्लाविया की जनता को इसके लिए कठिन संघर्ष करना पड़ा है। कहा जाता है कि जर्मनी का तानाशाह हिटलर सोवियत रूस पर आक्रमण का निर्णय ले चुका था। जर्मनी,इटली और जापान के बीच त्रिदलीय समझौता हो चुका था। बुल्गेरिया और युगोस्लाविया इससे बाहर रह गए थे। हिटलर ने रूमानिया में अपनी सेना जमा करनी शुरू की, अपनी सैनिक गतिविधियों से आतंकित कर युगोस्लाविया और बुल्गेरिया को अपनी नात्सी-व्यवस्था के अधीन करना चाहता था, लेकिन

१ मार्च १९४१ को बुल्गेरिया तो आतंकित होकर नात्सी व्यवस्था के अधीन आ गया परन्तु युगोस्लाविया ने कुछ दिनों तक प्रतिरोध किया और २५ मार्च को वह भी समर्पित हो गया, २७ मार्च को सरकार पलटकर नयी सरकार बना दी गयी, लेकिन युगोस्लाविया के सैनिक अधिकारियों ने इसे उचित नहीं माना और नाजी-व्यवस्था के प्रति अपनी असहमति प्रकट की। हिटलर ने युगोस्लाविया पर आक्रमण कर दिया। पराजित होकर भी युगोस्लाविया की जनता का मनोवल कम न हुआ।

युगोस्लाव कम्यूनिस्ट पार्टी के नेता जोसिप ब्रोज ने अपने संगठन को सशक्त कर आन्दोलन ही नहीं गुरिल्ला-युद्ध शुरू कर दिया। यह युद्ध तव तक जारी रहा, जव तक एक-एक जर्मन सैनिक युगोस्लाविया छोड़कर भाग नहीं गए। इतिहास में मार्शल टीटो का नाम आदर के साथ लिया जाता है और जोसिप ब्रोज ही वाद को मार्शल टीटो के नाम से यूरोप के इतिहास-पुरुष हुए। मार्शल टीटो,युगोस्लाविया की स्वाधीनता के जनक ही नहीं, इस देश के महान निर्माता के रूप में अविस्मरणीय हैं। मार्शल टीटो का स्थान विश्व के इतिहास में गरिमापूर्ण है। मार्शल टीटो के देहान्त से विश्व ने, गुटनिरपेक्ष आन्दोलन का एक सशक्त मसीहा खो दिया है।

इतिहास कहता है कि युगोस्लाविया की स्थापना प्रथम विश्व-युद्ध के बाद हुई। द्वितीय विश्व-युद्ध ने युगोस्लाविया को तहस-नहस कर दिया लेकिन युगोस्लाव जनता और उसका संस्कार पराजित न हुआ। सन् १९४५ में युगोस्लाविया गणराज्य की स्थापना हुई। युगोस्लाविया का क्षेत्रफल ९८,७०० वर्गमील है। इटली, आस्ट्रिया, हंगरी, रूमानिया और बुल्गेरिया इसके पड़ोसी देश हैं। इस देश के दो-तिहाई से अधिक लोग कृषि और पशुपालन पर आधारित हैं। एड्रियाटिक सागर के किनारे की निचली भूमि पर अंगूर और जैतून की खेती की जाती है। उत्तर-पूर्व की ओर निचली भूमि के विशाल भाग पर गेंहू और मक्के की प्रचुर खेती होती है।

यहाँ अनाज काफी होता है लेकिन इतना अधिक नहीं कि निर्यात किया जा

सके । वैसे यह देश अनाज को लेकर आत्म-निर्भर है । पहाड़ी ढलानों पर उगने वाले पेड़ों की लकड़ियाँ विदेशों को भेजी जाती है हैं । युगोस्लाविया की भूसम्पत्ति है, बॉक्साइट शीशा और लोहे की खानें । यह भूसम्पत्ति युगोस्लाविया को औद्योगिक शक्ति और समृद्धि प्रदान करती है ।

युगोस्लाविया ने राजनीतिक उत्थान-पतन का इतिहास लिखा-पढ़ा है लेकिन युगोस्लाविया के निर्माता मार्शल टीटो जैसे विशाल और सशक्त व्यक्तित्व का सबल आधार इस भूमि को प्राप्त रहा है । युगोस्लाविया, भारत का एक परम-मित्र देश है । मार्शल टीटो और कर्नल नासिर भारत-निर्माता पंडित जवाहर लाल नेहरू के परम मित्र रहे । मार्शल टीटो ने युगोस्लाविया की मनोभावना का आदर किया था । कुछ ही वर्ष पूर्व मार्शल टीटो भारत आए थे । भारतीय जनता ने मार्शल टीटो को अपार आदर दिया था ।

युगोस्लाविया, यूरोप का एक छोटा-सा देश है । लेकिन यह छोटा-सा देश आत्म-निर्भरता के लिए कठिन संघर्ष कर रहा है । यह समय और साधना की बात है । बात समय की चल गयी है तो आइए, समय की बात करें । इटली में ८.३० बजे सन्ध्या होती है, ६.३० बजे सूर्योदय होता है । इस प्रकार भारत और रोम की घड़ियाँ पाँच घण्टे के अन्तर पर चला करती हैं । हमारे दुभाषिये ने सूचित किया-अब हम जेग्रेव के समीप हैं, बिलकुल समीप । रात को ११ बजते-बजते जेग्रेव के विशाल होटल लगुना (Hotel Laguna) के मुख्य-द्वार पर आ गए । हमारी बस होटल के सामने थी । हमने अपना लगेज उतारा और भीतर पहुँचते ही भोजन (डिनर) के लिए मेज पर गए । होटल लगुना ने संतोषजनक भोजन दिया-चावल, उबाली हुई सब्जी और सूप आदि । इस होटल का कमरा नम्बर ४१० डबल बेड का मिला । हमारे परम मित्र श्री हरिदास ज्वाल फिर हमारे साथ ही ठहरे । रात को बारह बजते-बजते हम अपने कमरे के भीतर थे । सारी सुविधायें इस कमरे के साथ सुलभ थीं पानी, बाथरूम टायलेट आदि । हमने अपने कपड़े साफ किए और एक बजे के

वाद सोने गए। बस की यात्रा और पहाड़ी रास्ते ने थकान भर दिया था। रात को गहरी नींद आयी।

× × ×

प्रातः सात वजते-वजते हम लोग स्नान सन्ध्या वन्दन से निवृत होकर नीचे रेस्टोरेंट के भीतर आ गए। आठ वजे-ब्रेड वटर, चाय आदि जलपान किया। कुछ देर के लिए हम समीप की दूकान आदि देखने गए। मेन रोड से ट्राम- वे गुजर रही थी, सड़कें साफ-सुथरी, सड़कों पर कहीं भाग-दौड़ नहीं, आराम के साथ चलते हुए लोग ।

जेग्रेव नगर की सफाई-व्यवस्था भी अनुपम थी। प्रातःकाल था। हर एक आवासीय-मकान के सामने कचरे- कूड़े का पैकेट पोलीथीन के थैले पड़े हुए कार्पोरेशन की गाड़ी आती थी, पैकेट गाड़ी पर उठा लेती फिर उसे प्रेस कर दिया जाता। प्रेस करने की मशीन कारपोरेशन की गाड़ी पर ही लगी हुई थी। गाड़ी आती और कूड़े-कचरे के पैकेट समेट कर आगे निकल जाती। हम जेग्रेव नगर के भीतर कहीं गन्दगी नहीं देख सके। सड़कों के किनारे वड़े-वड़े ड्रम रखे हुए थे। कहीं-कहीं लोग उनमे भी कचरे डाल रहे थे लेकिन पोलीथीन का पैकेट वनाकर ही ढक्कन खोलकर भीतर डाल दिया। हर मकान आगे फूल, पत्तियाँ लगी हुईं, साफ-सुथरा अड़ोस-पड़ोस, साफ-सुथरे घर-आंगन।

मेरा मन सोचने लगा है। यह डायरी लिखना भी आसान नहीं है।तेज गति के साथ भागती हुई बस पर डायरी लिखना, फिर होटल के भीतर डायरी लेकर उलझते रहना। हम होटल लगुना के ठीक सामने खड़े हैं, लोग हमारी ओर देख रहे हैं। किसी की आकृति पर किसी प्रकार के विस्मय की रेखा नहीं है। हमारी आकृति, हमारी वेश-भूषा ही भारत का प्रतिनिधित्व करती है, भारतीय संस्कृति कहिए, आर्य-संस्कृति का प्रतिनिधित्व।

आज १३ अगस्त १९८० है। तेज गति के साथ भागता समय, वह समय जो वीत जाता है, वापस नहीं आता लेकिन यह घड़ी है, जिसकी सुई अविराम

चलती रहती है। रोम और युगोस्लाविया के समय में एक घंटे का अन्तर आता है। भारतीय समय से रोम में पाँच घंटे का तो युगोस्लाविया से छः घंटे का अंतर है। यह गति है समय की और कमाल है घड़ी का, घड़ी की सुई का कि वह चलती जाती है, अनवरत अविराम।

यहाँ चेक-पोस्ट पर एक्सचेंज आफिस भी है, जहाँ लोग अपनी करेंन्सी बदलते हैं। युगोस्लाविया में एक डालर का चौवीस दीनार होता है। दीनार ही युगोस्लाविया का सिक्का है।

जेग्रेब की सड़कें भी बहुत साफ और सुन्दर बनी हैं। इन सड़कों पर छोटी या बड़ी गाड़ियाँ सुविधा के साथ आती जाती हैं। इन गाड़ियों में भी (लेफ्ट हैंड ड्राइव) बायीं ओर से संचालन की व्यवस्था है लेकिन गाड़ियाँ दाहिनी ओर आगे बढ़ती हैं। अपने यहाँ जैसे 'कीप लेफ्ट' बाँये से चलिए का निर्देश है, यहाँ दाहिनी ओर से जाने का आदेश है। किसी प्रकार की असुविधा नहीं है। हमारी बसें भी दाहिनी ओर से अपनी गति के साथ बढ़ रही हैं। यह युगोस्लाविया का ग्रामीण क्षेत्र है। हमारी गाड़ी बीच से गुजर रही है। इस चौड़ी सड़क से कुछ ही दूर छोटे-छोटे एक मंजिल के मकान, किसी पर छप्पर किसी पर कर्कट का वितान तना हुआ, किसी पर टीन की चादरें बिछी हुईं लेकिन हर मकान की दीवारें ईंट की देखी जा सकती है, कहीं-कहीं भारत के समान दो-चार खपरैल-घर भी देखने को मिलते रहे और कहीं-कहीं बंगलानुमा मकान भी देखने को मिले।

इस क्षेत्र को देखकर यह कल्पना सहज ही बलवती होती है कि भारतीय ग्रामीण जीवन और युगोस्लाव ग्रामीण-जीवन के साथ अनोखा साम्य है। सूर्यमुखी और मक्के की खेती इस ऋतु की प्रसिद्ध खेती है और अंगूर? अंगूर की खेती ही युगोस्लाव जनता का जीवन है। थोड़ा आगे बढ़ते ही पहाड़ी इलाके शुरू हो गए, छोटे-छोटे पहाड़ पहाड़ियाँ और पहाड़ियों पर बने छोटे-छोटे मकान, एकदम खिलौने जैसे रहे हैं। इन पहाड़ियों की गोद में बसे छोटे उपनगर भी

दिखायी दे रहे हैं। मेरे साथ बैठे भाई पन्नालाल आर्य जैसे इस दृश्यावली को अपनी खुली आँखों से देखते हुए आश्चर्य चकित से हो रहे थे।

एक शहर के मकान पर लिखा था "परोटेका मनो करमा"। इस शहर के प्रत्येक मकान पर फूलों के खिलते हुए गमले रखे हुए थे। ये फूल-पत्तियाँ साक्षी होकर मुस्करा रही थीं और यह बता रही थीं कि युगोस्लाव जनता भी प्रकृति के निकट रहना चाहती है। थोड़ा आगे बढ़ने पर 'वेडेन-ज़ू' नामक स्थान तथा वेडग्रेड मार्केट भी मिला।

हमारे दुभाषिए ने बताया—'अब हम हंगरी की ओर जा रहे हैं।' युगोस्लाविया की राजधानी है—'बेलग्रेड'। इस बेलग्रेड नगर को कई बार अन्तर्राष्ट्रीय समस्यायें सुलझाने का संयोग प्राप्त है। आज भी यूरोप के राजनीतिक धरातल पर युगोस्लाविया की अपनी अहम् भूमिका है। हमारी बस अभी जहाँ कुछ देर के लिए रुकी है, वहाँ से हंगरी की राजधानी 'बुडापेस्ट' लगभग ४०० किलोमीटर दूर है लेकिन यह दूरी भी क्या है? यह लम्बी दूरी कुछ ही घंटे के भीतर सिमट कर छोटी हो जायेगी, आज के विज्ञान ने यह चमत्कार दिखा दिया है।

मुझे आश्चर्य हो रहा है कि बैलगाड़ी कहीं दिखायी नहीं दे रही है। हाँ, घोड़ा गाड़ियाँ अवश्य ही दीख जाती हैं, कहीं-कहीं। हमारी बस युगोस्लाविया की सीमा के भीतर ही 'वेडेन्चा' नामक नगर के एक रेस्टोरेंट के सामने रुक गई है, कुछ देर का विराम मिला। सूचित किया गया कि अब यहाँ से हंगरी की सीमा-रेखा समीप है। हम अब हंगरी के निकट आ गये हैं। हमारी बस फिर खुल गयी हैं, कुछ ही दूरी पर मिला—'वर्जदोन स्टेशन' बोर्डर से पहले, जहाँ से रेलगाड़ियाँ जाती हैं। कुछ देर बाद एक बैलगाड़ी देखने को मिली, चारो ओर मक्का की फसलें कहीं और कोई फसल नहीं, कहीं-कहीं फूल के पौधे कहीं-कहीं साँवा-मडुवा की खेती, गेहूँ और जौ की फसलें पहले काटी जा चुकी थीं। मेरे दुभाषिये ने कहा—इस भूमि पर गेहूँ और धान कम लेकिन मक्का अधिक होता है। 'कोरोकन' के कुछ ही दूर आगे युगोस्लाविया का अंतिम चेक-पोस्ट मिला। इस चेक-पोस्ट पर भी हमारा वीसा वगैरह देखा गया लेकिन विलम्ब न हुआ।

हंगरी की भूमि पर

युगोस्लाविया की भूमि पीछे छूट गयी है। हमारी बस तेज गति से आगे बढ़ रही है, यह सामने है बुडापेस्ट का चेक पोस्ट। इस चेक-पोस्ट पर भी हमारा 'वीसा' पासपोर्ट आदि विधिवत् चेक किया गया। मुहरें लगायी गयीं। इसी चेक पोस्ट पर हमने अपना लंच लिया। बुडापेस्ट के चेक पोस्ट पर हमारी बस डेढ़ बजे पहुँची थी और तीन बजकर पन्द्रह मिनट पर हम बुडापेस्ट नगर की ओर रवाना हो गये।

हमारी बस हंगरी की भूमि पर है और हंगरी हमारी आँखों के सामने। हंगरी की मुद्रा है फौरिन्ट एक डालर बराबर होता है २१ फौरिन्ट के और दो फौरिन्ट का एक भारतीय रुपया होता है। इस तालिका से भारतीय मुद्रा का मूल्य सुविधा के साथ निकाला जा सकता है।

आप भी कहेंगे यह वैरागी विचित्र व्यक्ति है, वह बस पर सवार होकर हंगरी और भारतीय सिक्के की तुलना कर रहा है। क्षमा कीजिए, हमारी बस बुडापेस्ट शहर के समीप अबुराग केवरो नगर के पास है और इस नगर के बिलकुल समीप है, ब्लुसेन मर्ग टोटामोटो लाटरी एजेन्सी। अभी शाम के साढ़े चार बज रहे हैं और हमारी बसें ब्लुसेन मर्ग पहुँच गयी हैं। यहाँ एक दर्शनीय झील है। लम्बी दूरी तक फैली जलराशि आकर्षित करती है, मन-प्राणों को। इस झील के किनारे खड़ी हैं पुरुष और नारी की प्रस्तार मूर्तियाँ जो पूर्णतया नग्न हैं। इन प्रस्तर नग्न मूर्त्तियों को देखने के लिए बड़ी भीड़ जमती हैं, अक्सर मनचले जोड़े इन मूर्त्तियों के पास बैठे हास-परिहास उल्लास की मुद्रा में देखे जा सकते हैं, कभी-कभी घोर प्रेमालाप और प्रगाढ़ आलिंगन की मुद्रा में भी। इन नग्न प्रस्तर मूर्त्तियों के पास खड़े होकर लोग तस्वीरें खींचते-खिचाते हैं। मेरे जैसे वैरागी मन को आप क्या कहेंगे। मेरे आटोमेटिक कैमरे ने मेरा सहयोग किया और दो-एक स्नैप मैंने भी लिया। प्रायः सवा-पाँच बजते-बजते हमने इस झील के किनारे को छोड़ दिया और अब हम बुडापेस्ट नगर के किनारे आ गए। छोटे-छोटे मकान, छोटे परिवार सुखी परिवार हंगरी की विशेषता।

हंगरी : इतिहास के पन्नों में

प्रथम विश्व-युद्ध से पूर्व आस्ट्रो-हंगरी, यूरोप का एक अत्यन्त सम्पन्न और और महत्वपूर्ण देश था। १० सितम्बर १९१९ को आस्ट्रिया और मित्र-राष्ट्रों के बीच पेरिस के समीप सांजर्मे (St. Germain) नामक प्राचीन स्थान पर हुई सन्धि के अनुसार 'आस्ट्रिया-हंगरी' का बहुत विशाल साम्राज्य विभाजित हो गया। युद्ध के पूर्व इस साम्राज्य के अन्तर्गत विभिन्न जातियाँ निवास करती थीं। इन जातियों में राष्ट्रीय-भावना का पूर्ण रूप से विकास हो चुका था। इस सन्धि के अनुसार ये जातियाँ स्वतन्त्र हुईं और इनके अलग-अलग राज्य स्थापित हुए। आस्ट्रिया ने हंगरी को भी स्वतंत्र राज्य के रूप में स्वीकार किया। हंगरी के अतिरिक्त पोलैण्ड, चेकोस्लोवाकिया और युगोस्लाविया को भी स्वतंत्र राज्यों के रूप में स्वीकार किया गया।

युद्ध के कारण हंगरी की स्थिति दुर्बल हो गयी थी। सन् १९१९ के पूर्व यहाँ कोई संगठित सरकार भी स्थापित न हो सकी। अतः हंगरी के प्रतिनिधि काउन्ट एलबर्ट एपीनी के सामने एक सन्धि-पत्र प्रस्तुत किया गया, जो त्रियानो का समझौता कहा जाता है। एपीनी ने सन्धि-पत्र का विरोध किया लेकिन मित्र-राष्ट्र मानने को तैयार न हुए और ४ जून १९२० को, इस सन्धि-पत्र पर हंगरी को हस्ताक्षर करना पड़ा। सन्धि के अनुसार हंगरी को अपने पड़ोसी राष्ट्रों को अपने भू-भाग से कुछ न कुछ हिस्सा, देना ही पड़ा। हाँ, हंगरी को आस्ट्रिया का पश्चिमी हिस्सा, बीर्जनलैंड प्राप्त हुआ।

त्रियानों की सन्धि के अनुसार जनसंख्या और क्षेत्रफल के हिसाब से हंगरी एक छोटा और साधारण राज्य हो गया। युद्ध के पूर्व हंगरी की जनसंख्या दो करोड़ दस लाख थी, इस संधि के बाद हंगरी की आबादी मात्र पचहत्तर लाख रह गयी। अभी हंगरी अपने को स्थिर कर ही रहा था कि यूरोप द्वितीय विश्व युद्ध की लपटों में घिर गया।

सोवियत रूस ने बाल्कन प्रदेश पर हमला किया। पड़ोसी रूमानिया ने शीघ्र ही युद्ध विराम-संधि-शर्तों को स्वीकार करने की घोषणा की, लेकिन रूस की सेना निरन्तर बढ़ती रही और डेन्यूब के किनारे-किनारे आगे बढ़ती हुई बुल्गेरिया और युगोस्लाविया तक आ गयी। बुल्गेरिया ने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध घोषित किया तथा युद्ध-विराम संधि के लिए अनुरोध किया। बुल्गेरिया की सेना ने भागती जर्मन सेना को परेशान करना आरम्भ किया। पूर्वी यूरोप में जर्मनी के मित्रों में उसका साथ छोड़ने वाला हंगरी अन्तिम मित्र था परन्तु रूमानिया के जर्मन पक्ष को त्याग देने के पश्चात्, उसकी स्थिति कठिन हो गयी। अक्तूबर १९४४ के प्रारम्भ में सोवियत सेना ने रूमानिया से हंगरी की सीमा को पार किया और तेजी से बढ़ती हुई बुडापेस्ट से ६५ मील की दूरी तक चली गयी। यहाँ पर जर्मनी और हंगरी की सेना ने डटकर मुकाबला किया, लेकिन हंगरी की सेना का एक भाग तथा उसका सेनापति रूसी सेना से आ मिले।

जर्मनी प्रभावित क्षेत्रों पर सोवियत सेना का दबाव बढ़ा। यह दबाव बढ़ता गया। अन्त में जर्मनी की राजधानी बर्लिन पर आक्रमण हो गया। हिटलर ने आत्म-हत्या की और ४ अप्रैल १९४५ को हंगरी एक स्वतंत्र समाजवादी गण-तान्त्रिक देश का स्वरूप लिए सामने आया। सन् १९५६ से यहाँ भूमि-सुधार लागू किया गया। आज हंगरी एक विकासशील राष्ट्र के रूप में अपने को प्रकाशित कर रहा है। हंगरी का क्षेत्रफल है ९३ हजार वर्ग किलोमीटर। हंगरी की राजधानी है—बुडापेस्ट बुडा योग पेस्ट।

आइए, थोड़ी-चर्चा बुडापेस्ट को लेकर करें। हंगरी के रोमांचकारी इतिहास, गौरवमयी संस्कृति और आधुनिकतम सभ्यता का चरम उत्कर्ष और अलौकिक सम्मिश्रण है-बुडापेस्ट। बुडापेस्ट के दो भाग हैं, एक भाग है-बुडा और दूसरा भाग है—पेस्ट, बीच से डेन्यूब नदी की धारा प्रवाहित है और इस प्रकार बना है—बुडापेस्ट, हंगरी की राजधानी बुडापेस्ट। हंगरी के लोग श्रम और साधना की आरती उतारते रहे हैं। हंगरी एक समाजवादी गणतान्त्रिक देश है। यहाँ हर दिशाओं में सरकार का नियंत्रण है। कृषि, उद्योग, व्यवसाय एवं प्रत्येक सामाजिक

तथा सार्वजनिक स्थान पर प्रशासन का अधिकार है। सरकार की ओर से लोगों के लिए छोटे-छोटे मकान बनाकर दिए गए हैं, प्रतिमाह उनके वेतन से एक निश्चित राशि कटती रहती है। इस प्रकार एक साधारण श्रमिक, सुविधा के साथ अपने आवास का स्वामी हो जाता है।

बुडापेस्ट, हंगरी की राजधानी है। यही कारण है कि यहाँ राजधानी जैसी हलचल हमेशा बनी रहती है। इस नगर के भीतर, कदम-कदम पर हंगरी के बहादुर शासक, वीर सैनिक, राष्ट्र-भक्त कलाकारों के स्मारक देखे जा सकते हैं। हंगरी की जनता आत्म-विश्वास से भरी लगती है, कठिन से कठिन श्रम इस देश की जनता कर सकती है, करती है। वह श्रम करती है, अपने देश को समुन्नत करने के लिए। लोग अपनी जीविका को रोजी-रोटी का साधन नहीं वरन् अपने देश की अर्थ व्यवस्था को सक्षम बनाये रखने का आधार और माध्यम मानते हैं।

हंगेरियन लोगों की आकृति भारतीय मूल के लोगों से मिलती-जुलती लगती है। मध्य एशिया अर्थात् भारत की ओर से भटकते हुए लोग, यूरोप महादेश की भूमि पर आए और फैलते चले गए। कुछ लोग डेन्यूब के किनारे आकर बस गए। डेन्यूब एक अन्तर्राष्ट्रीय महानदी है, जो पश्चिम जर्मनी; आस्ट्रिया, रूस, रूमानिया, बल्गारिया, युगोस्लाविया और चेकोस्लोवाकिया से भी होकर गुजरती है।

यूँ इतिहास हमारा विषय नहीं है, लेकिन आजीवन यात्रायें करना मेरी प्रमुख दिनचर्या हो गयी है। हंगरी और बुडापेस्ट को लेकर ये कुछ वाक्य अनायास ही निकल आए। हाँ, तो मेरे दुभाषिए ने कहा—"हमारी डिलक्स-बस बुडापेस्ट नगर के बीच से होकर गुजर रही है। वह सामने है बुडापेस्ट का होटल पनोरमा। हमारी बस होटल पनोरमा के मुख्य द्वार पर आ गयी है।" हमने अपना सामान उतारा। काफी देर के बाद कमरा नम्बर ३१३-ए मिला, फिर हम डिनर के लिए गए। डिनर के बाद अपने कमरे के भीतर आ गए। बुडापेस्ट का यह होटल भी बहुत ही साफ-सुथरा-शान्त लगा। एक दरवाजा, दो कमरे ३१३ ए, ३१३ बी०, एक ओर बाथ-रूम, एक ओर शौचालय, बीचोबीच दो आलमारियाँ

हैंगर लगी हुई, तौलिया, साबुन आदि। हमारे दुभाषिए ने बताया था—'हमारे देश हंगरी की जनसंख्या आज एक करोड़ सत्तर लाख के आस-पास है। हिटलर के बर्बर हमले के बाद हमारे देश ने अपने को विश्व के मानचित्र पर उभारने का प्रयास किया। सफलतायें हमारे समीप आयीं।' हंगरी की धरती पर सब कुछ व्यवस्थित है, दूकानें, होटल, बैंक, स्कूटर और व्यवसाय प्रशासन के अधीन। इनके भीतर काम करने वाले सभी लोग सरकारी कर्मचारी हैं। यहाँ सभी को समानता का अधिकार और आधार प्राप्त है, बिलकुल बराबरी का दर्जा। हंगरी के लोग अपने जीवन के लिए उपयोगी सामग्रियों में से अभी ४० प्रतिशत का ही उत्पादन कर पाते हैं, शेष के लिए आयात की व्यवस्था है। यहाँ सभी कुछ राष्ट्रीयकृत है। द्वितीय महायुद्ध के पूर्व जिस हंगरी को २० लाख भिखमंगों का देश कहा जाता था, आज वही हंगरी यूरोप के मानचित्र पर ही नहीं विश्व के मानचित्र पर आत्मनिर्भर-समृद्ध देश के रूप में विख्यात है।

हंगरी की निर्यात स्थिति भी सक्षम है। हंगरी से बिजली के सामान, टेलीविजन, बस, ट्रक, ट्रैक्टर, मोटर सायकिल, ग्रामोफोन, टेप-रेकार्डर, शराब, सेब, अंगूर आदि का निर्यात होता है। आधुनिक कृषि-संयत्र बनाकर हंगरी ने कृषि को उद्योग का स्वरूप दिया है। आश्चर्य की बात यह है कि हंगरी अमरीका को भी निर्यात करता है। हंगरी जर्मनी को पीने के लिए शराब दिया करता है।

मेरे जैसा नियमबद्ध-निरामिष आदमी किसी यूरोपीय देश की यात्रा करे—कितनी कठिन हो सकती है यह यात्रा, इसकी कल्पना सहज ही की जा सकती है। लेकिन मुझ पर इसका कोई प्रभाव नहीं। मेरे लिए ब्रेड, बटर और उबाली हुई हरी सब्जी ही पर्याप्त है। मुझे कभी किसी होटल की मेज पर किसी प्रकार की कठिनाई न हुई। मैंने सदा ही संतोष किया लेकिन यूरोप की यात्रा में शराब की चर्चा तो आनी ही चाहिए। इसी बुडापेस्ट के लोगों के लिए मुहावरा है कि स्वस्थ रहना चाहते हो तो बीयर पिओ....' लेकिन शुद्ध जल पीकर स्वस्थ रहने की अभिलाषा हमारी आर्य-संस्कृति है, कहिए भारतीय संस्कृति है।

होटल पनोरमा के कमरे के भीतर रात्रि विश्राम के लिए विस्तर पर पड़ा-पड़ा सोचने लगा है मेरा यात्री मन, कितने गौरवशाली हैं, हंगरी के लोग, जो हिटलर की सेना से मसली हुई भूमि को अपने श्रम से सींचकर यह रूप देने में सफल हो गए। आज भी किसी क्षेत्र में किसी प्रकार की शिथिलता नहीं है। लोग निष्ठा के साथ काम करते हैं दफ्तरों, कल-कारखानों में, वस एक ही सपना इनकी आँखों में है हंगरी का विकास, हंगरी का विन्यास।

होटल पनोरमा के भीतर रात कट गयी। हम साढ़े आठ वजते-वजते तैयार होकर अपनी वसों में आ गए। हमारी वसें चल पड़ीं। दुभाषिए ने संकेत किया — "यह सामने वाला चर्च १४वीं शती का और वह दूसरा चर्च ११वीं शती का वना है, वीच से एक नदी वहती है....। बुडापेस्ट का हंगरी कोर्ट १९वीं शती का निर्माण है।"

मुख्य वाजार के बाद ३० मीटर ऊँचा एक गुम्वद दिखायी दिया, जिसके चारो ओर दरवाजे थे। मुझे वताया गया कि यह पोर्ट है, जहाँ से निर्यात होता है। सामने सिटी पार्क है, सिटी-पार्क के वीच से ट्राम्व-वे का रास्ता है। इस रास्ते से ट्रामें गुजरती हैं। इस नगर के अधिकांश भवन प्राचीन-काल के निर्मित लगे, पत्थरों के वने हुए। हंगरी का म्यूजियम भी सिटी-पार्क के भीतर ही अवस्थित है। सिटी-पार्क की दाहिनी तरफ कई प्रस्तर मूर्त्तियाँ स्थापित हैं। सोवियत रूस की क्रांति के स्मारक के साथ ही हंगरी के स्वतंत्रता सेनानियों की आदमकद मूर्त्तियाँ भी लगी हैं। इन मूर्त्तियों को देखकर किसी का भी मस्तक झुक सकता है। इस पार्क के समीप ही एक और पार्क है जिसे विक्टोरिया के मूर्त्तिकार ने सजाकर रख दिया है। इस पार्क के भीतर खड़े वड़े-वड़े पेड़ प्रस्तर मूर्त्तियों को छाया दे रहे हैं। ये मूर्त्तियाँ हैं स्वतंत्रता सेनानियों की ही लेकिन स्वाधीनता-संग्राम की कहानियाँ कहतीं हुईं। इस पार्क की शोभा है, यहाँ की आर्ट-गैलरी। पता किया तो ज्ञात हुआ कि इसका निर्माण १६वीं शती में हुआ था। आर्ट-गैलरी के पास ही वने म्यूजियम के भीतर प्रथम विश्व-युद्ध के मोर्चे पर वीर-गति प्राप्त सैनिकों और राष्ट्रवादियों की प्रस्तर मूर्त्तियाँ स्थापित हैं। ये मूर्तियाँ सहसा दिल्ली के इन्डिया गेट

की याद दिलाती हैं। इनका निर्माण १९वीं शती में हुआ है। बुडापेस्ट में कई बड़े पुस्तकालय और ओपेरा हाउस बने हुए हैं।

मेरे दुभाषिए ने बताया—'नृत्य और संगीत हंगेरियन लोगों का जीवन है। कला इनके जीवन की संगिनी बन गयी है।" सामने सेन्ट्रल स्टेशन पर बड़ी कोच बसें रुकती हैं। आगे की ओर प्रायः ९६ मीटर ऊँचा एक टावर और दाहिनी ओर बस-स्टेशन, फिर कुछ ही दूरी पर हंगेरियन राजा मार्मर की मूर्त्ति विराजमान है। ठीक उसके सामने देख रहा हूँ—पोर्ट्स चर्च, नेशनल बैंक। हमारे सामने है हंगरी का पार्लियामेंट हाउस, कांग्रेस हॉल, राजनीतिक लायब्रेरी। हम पार्लियामेंट से होकर, नदी के किनारे से जा रहे हैं और बिलकुल समीप दिखायी दे रहा है 'सेन्ट मार्गरेट ब्रिज', जहाँ सेंट मार्गरेट की मूर्त्ति लगी हुई है। यह है पेरिस-ब्रिज, जिसका निर्माण १९७२ में हुआ था। पेरिस-ब्रिज के उस पार एक रेस्टोरेंट, टावर के ऊपर देखा और उसके आस-पास कई स्टेचू भी लगे देखे।

भारतीय दूतावास में

हमारी बस भारतीय दूतावास के पास आ गयी है। इस स्थान पर कई दूतावास हैं अफ्रिकन और अमेरिकन ही नहीं, अन्य कई देशों की एम्बेसियाँ भारतीय दूतावास के आस-पास ही हैं। हम अपने भारतीय दूतावास के मुख्य द्वार पर आ गए और अपने राजदूत श्री अरुण कांति दास से मिले। सौजन्य से भरे श्री दास ने हमारा हार्दिक स्वागत किया। हंगरी के अपने भारतीय दूतावास के भीतर अचानक ही एक लघु भारत का रूप निखर आया। आर्य प्रतिनिधियों की इस टोली में भिन्न-भिन्न प्रांतों के लोग विभिन्न भाषाओं और बोलियों के लोग, निश्चय ही लघु भारत का स्वरूप लिए। कभी वायु-मार्ग से और कभी स्थल-मार्ग से चल रहे थे। राजदूत के साथ हमारे सामूहिक चित्र लिए गए।

भारतीय दूतावास से विदा होने के बाद अली मुस्तफा का स्टेचू, टर्की-बाथ तथा रोमन इम्पायर देखने के बाद हम रिफोर्ष्ट चर्च की ओर गए। सेन्चुरी चर्च को बिल्कुल समीप से देखने का संयोग मिला। रिफोन्र्ट चर्च संभवतः १४वीं शती का बना हुआ है। मेरे दुभाषिये ने बताया कि "मंगोलियन-हंगेरी युद्ध के समय हंगेरियन अपनी मातृभूमि के लिए प्राणों से खेल गए। हंगरी की भूमि पर ऐसे ऐतिहासिक स्मारकों की लम्बी कतार देखी जा सकती है।'

मेरे जानते हंगेरी के ये दर्शनीय स्थल. मात्र दर्शनीय ही नहीं वन्दनीय भी हैं। मैंने बुडापेस्ट का वह चर्च भी देखा जिसके भीतर एक प्रकार की ध्वनि होती है। यह चर्च बिलकुल आधुनिकतम तकनीक से बना है। वैसे इसका निर्माण-काल अठारहवीं शती का बताया जाता है। इस चर्च के भीतर नंगे सिर जाने का विधान है, टोपी या पगड़ी वाले को प्रवेश नहीं करने दिया जाता। इस चर्च के भीतर शीशे का उपयोग बहुत कलात्मक ढंग से हुआ है।

यह है बुडापेस्ट का सबसे बड़ा होटल—इंटर नेशनल होटल, जो हंगरी की पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत कै० उपापाक के निर्देशन में निर्मित हुआ। हंगरी एक जनवादी गणतंत्र है। यहाँ की सरकारी सेवा ६५ वर्ष की आयु पर समाप्त होती है। पहले सेवा-निवृत्ति की आयु ६० वर्ष थी।

हंगरी की पार्लियामेंट ३४४ सांसदों की है। इनमें ८४ महिलायें हैं। यह विधान संगत है। हंगरी की महिलायें, अपने देश के पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करने के लिए कृतसंकल्प दीखती हैं। युद्ध के समय या उसके बाद यहाँ की महिलाओं के भीतर राष्ट्र-निर्माण की भावना प्रबल रही है। परिणाम सामने है—हंगरी का विकास। यहाँ की महिलायें सौन्दर्य-प्रसाधन का प्रयोग कम करती हैं और मैक्सी के स्थान पर 'स्कर्ट' पहनना पसन्द करती हैं। स्कूल-कालेज जाने वाली लड़कियों को मिनी स्कर्ट, मिडी स्कर्ट और बेलबाटम पहने देखा जा सकता है।

हंगरी के निवासियों की निधि है, ईमानदारी के साथ काम करने का संकल्प और इसका मूलाधार है। यूरेनियम (ओरेनियम) और बोक्साइट जैसी खनिज सम्पदा। बोक्साइट से अल्मुनियम बनता है, अल्मुनियम के सामान बनते हैं। हंगरी में भूरे रंग का कोयला (Brown Coal) निकलता है और काले रंग का कोयला पोलेण्ड से आयात होता है। एक कोयला खान के पास एक कोकस्ट (Cocust) का स्मारक स्थापित है। यहाँ एक श्रमिक को प्रतिमाह एक हजार फौरिन्ट से ऊपर पारिश्रमिक प्राप्त होता है।

हमारी बुडापेस्ट की संक्षिप्त यात्रा इसलिए संक्षिप्त न रही कि हमने समय का सदुपयोग किया और हमारे दुभाषिये ने हमारे अमूल्य समय को नष्ट नहीं होने दिया। अभी बुडापेस्ट की घड़ी दोपहर के बारह बजा रही है और हमारी डिलक्स-बस बुडापेस्ट नगर से बाहर होने लगी है। हंगरी की राजधानी हमारी आँखों से धीरे-धीरे ओझल होने लगी है। मेरे दुभाषिये ने कहा—'कोसोनम्' (धन्यवाद)

हंगरी की राजधानी, बुडापेस्ट पीछे छूट गया है। हमारी बस आगे चली जा रही है, चमकदार चौड़ी सड़क से तेज गति के साथ—मक्के और सूर्यमुखी की घनी खेती को अगल-बगल छोड़ती हुई। यह हंगरी का ग्रामीण अञ्चल है। मिट्टी का रंग काला है। यह अनुमान मिट्टी को देखकर ही लगाया जा सकता है कि यह भूमि उर्वरा है। मेरे दुभाषिये ने कहा—"हंगरी के परिश्रमी किसान आधुनिकतम कृषि संयत्र के बल पर ऊसर-बंजर भूमि को उर्वर बनाकर जीने लगे हैं। थोड़ी ही दूर आगे जाने के बाद पर्वतीय भूमि मिलने लगी है, जिसे हंगरी की रत्न गर्भा भूमि भी कहा जा सकता है। इन पहाड़ियों के आस-पास कई प्रकार की खान हैं। मैं देख रहा हूँ, इन पहाड़ियों के समीप श्रमिकों की भारी भीड़ और कहीं-कहीं घनी हरियाली भी। यह कर्म-भूमि है हंगरी की धरती के बेटों की, कहीं आम, कहीं चिकु फल के पेड़, हरे भरे खेत।
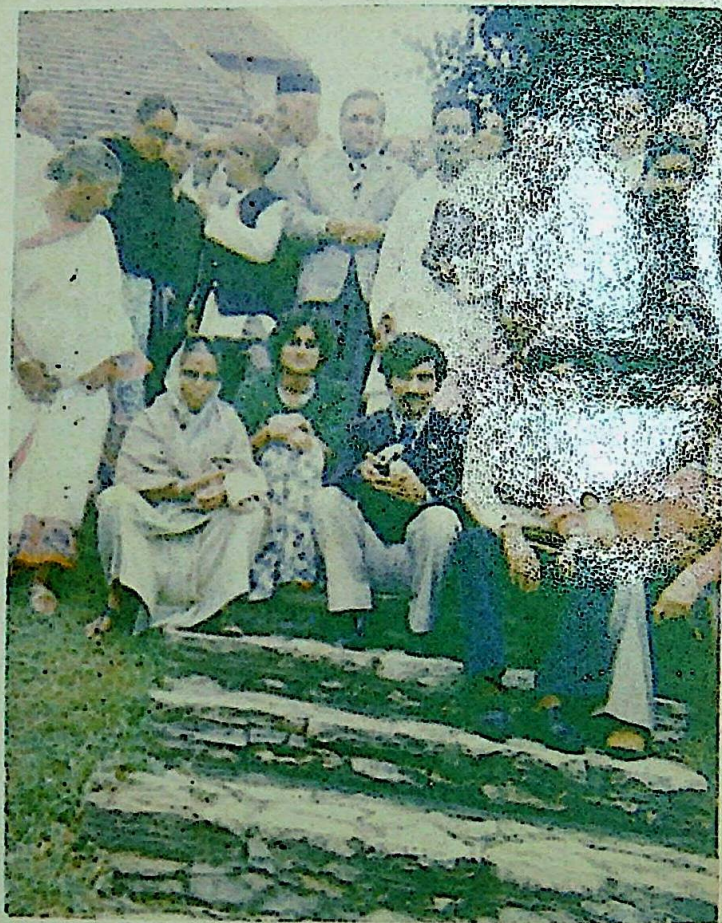
लेखक : वुडा पेस्ट हंगरी के भारतीय राजदूत के माथ
चारों तरफ मु [illegible] खड़े हैं।

सूचित किया गया कि हम रोमन सिटी आ गए। इस रोमन सिटी की आयु दो हजार वर्ष की है। इटली और जर्मनी के युद्ध का इतिहास इस नगर की आत्मा है। ८ वीं शती का निर्माण है इस नगर का एक्समस चर्च और नव-निर्माण की यादगार है——फ्रैंक इम्पोरियम। रोमन सिटी शती १८ और १९ आते-आते अपने विकास की देहरी पर आ गया। इस नगर को विकास के नये अध्याय मिले——औद्योगिक क्षेत्र, कल-कारखाने, टेक्सटाइल फेब्रिक्स, सूगर फैक्टरी, पेस्ट्री फैक्टरी, कारपेट के कारखाने खुल जाने से। आज रोमन सिटी हंगरी का प्रसिद्ध औद्योगिक नगर बन गया है। यहाँ के लोगों का जीवन अस्त-व्यस्त रहने लगा है। कुछ ही दूर जाने के बाद एक विशाल टावर मिला। मेरे दुभाषिए ने बताया—"यह टावर वोरोक़ो म्यूनिसपैलिटी का है। लीजिये, आगे मिला–सिटी जरें और यह सामने है सिटी जरें का फाइव-स्टार होटल—होटल रावा आइए, यहाँ लंच लिया जाय।"

सिटी जरें के इस फाइव-स्टार होटल रावा के भीतर हमने लंच लिया। इसमें आवास को व्यवस्था भी बहुत ही अच्छी लगी। पूरी रात के लिए एक कमरे का किराया ५·५० फोरिन्ट, ब्रेक-फास्ट के साथ और बिना ब्रेक फास्ट के ४·८० फौरिण्ट, डिनर या लंच के लिए ११० या १५० फौरिण्ट।

"होटल रावा" ने लंच के समय हमलोगों को पहले फ्रूट-जूस दिया, फिर मधुर फ्रूट पोलाव, तथा फ्राइ किया चावल और 'बंजवा', (हमारे यहाँ बचका या रिकोंच कहते हैं।) प्लास्टिक ग्लास के भीतर पेक किया गया दही फिर अंत में जाम लगा पेस्टी। हम होटल रावा के भीतर दो बजे आये थे और अब चार बजने को है। कुछ देर आस-पास घूमने-फिरने के बाद हम लोग मेन मार्केट होते हुए वियेना (आस्ट्रिया) के लिए चल पड़े। बताया गया कि वियेना के बोर्डर से पहले हंगरी का बोर्डर है, बिलकुल आस-पास। हमारी बस तेजी के साथ आकर हेजी सलाम चेक-पोस्ट पर सहसा रुक गयी है। हमारा पासपोर्ट देखा जा रहा है। हेंजी सलाम का यह चेक पोस्ट हंगरी का अन्तिम चेक-पोस्ट है। स्थल-मार्ग

से वियेना (आस्ट्रिया) जाते समय यही चेक-पोस्ट मिलता है–हेजी सलाम, इसे हंगरी से बाहर निकलने का द्वार भी कहा जा सकता है।

आस्ट्रिया की ओर

हंगरी की भूमि पीछे छूट गयी है, लेकिन साथ रह गयी है, हंगरी की यादें, हंगेरियन लोगों के साहस और संकल्प की गाथायें, ऐसी गाथायें, जो प्राणों में साहस भरती हैं। इस देश के निवासियों में अपनी स्वाधीनता के लिए जूझने वाले स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति आज भी असीम आदर है, सम्मान है। देश के लिए वीर गति प्राप्त आत्माओं के प्रति हंगेरियन अपनी आत्मा के अर्घ्य अर्पित करते हैं। यह एक बहुत बड़ी बात है, जो हंगेरियन जनता को साहस और संकल्प के स्वर देती रही है।

हमारी बसें आस्ट्रिया की ओर भाग रही हैं। यह सामने है—आस्ट्रिया का बोर्डर, चेक-पोस्ट जोलामट। इस चेक पोस्ट पर हमारा पास पोर्ट देखा गया, उस पर मुहरें लगायी गयीं। हमारी बस आस्ट्रिया के प्रसिद्ध नगर 'वियेना' के लिए चल पड़ी है। अभी शाम के साढ़े सात बजे हैं। मेरे दुभाषिये ने बताया– "यहाँ से वियेना बहुत दूर नहीं है, फिर भी दो-ढाई घण्टे का समय लग सकता है।"

सूरज धीरे-धीरे झुकने लगा है। हम साफ-सुथरी चौड़ी सड़क के दोनों ओर खड़े लोगों की आँखों में देख रहे हैं—ग्रामीण जीवन की झलक के साथ संघर्षशील देश आस्ट्रिया की ललक भी।

इतिहास की लहरों में : आस्ट्रिया

प्रथम विश्व युद्ध के समय आस्ट्रिया एक बड़ी शक्ति थी। प्रथम विश्व-युद्ध के मोर्च पर पराजित होने के बाद इसकी बहुत सी भूमि चेकोस्लोवाकिया, युगोस्लाविया, इटली और पोलैण्ड को दे दी गयी। आज के आस्ट्रिया का क्षेत्रफल है बत्तीस हजार तीन सौ उनहत्तर वर्ग-मील लेकिन अब भी आर्थिक या राजनीतिक दृष्टि से इसका विशेष महत्व है इसलिये कि एक तो डेन्यूब नदी इसकी भूमि से होकर बहती है, दूसरे यह यूरोप के केन्द्र में स्थित है। आस्ट्रिया के उत्तर में जर्मनी और चेकोस्लोवाकिया, दक्षिण में युगोस्लाविया तथा इटली, पूर्व में हंगरी और पश्चिम में स्विट्जरलैंड है।

आस्ट्रिया एक पर्वतीय देश है। यह अपने सुन्दर पहाड़ों, जङ्गलों, नदियों और झीलों के लिए प्रसिद्ध है। आस्ट्रिया के कुछ इलाके बहुत घने बसे हैं और कुछ भागों में आबादी बहुत ही कम है। देश की एक तिहाई जनसंख्या राजधानी वियेना में निवास करती है, जो डेन्यूब के किनारे पर स्थित है।

आइए, हम थोड़ा और पीछे चलें। उन्नीसवीं शताब्दी के आस्ट्रिया का इतिहास, यूरोप के अन्य देशों के इतिहास से अधिक उलझन पूर्ण है इसलिए कि पहले आस्ट्रिया कोई राष्ट्र नहीं था। नेपोलियन के पतन के बाद. वियेना-कांग्रेस के निर्णयानुसार आस्ट्रिया का साम्राज्य यूरोप में सबसे अधिक विशाल तथा महत्वपूर्ण बन गया था। इसका सारा श्रेय मेटरनिक को है। उन्नीसवीं शती के पूर्वार्द्ध में यूरोपीय इतिहास का प्रतिक्रिया वादी युग नायक मेटरनिक था। आस्ट्रिया के साम्राज्य में विविध जातियों के लोग निवास करते थे। कहीं किसी प्रकार की समानता न थी। मुख्य समस्या यह थी कि इन पर किस प्रकार शासन किया जाय कि उनके भीतर साम्राज्य से निकल जाने की प्रवृत्ति का विकास न हो सके। आस्ट्रिया के साम्राज्य को बचाने के लिए मेटरनिक ने एक पद्धति का शुभारम्भ

किया—'फूट डालकर शासन करो' वैसे यह साम्राज्यवादियों की सनातन नीति रही है। मेटरनिक इस नीति का प्रबल पक्षपाती था लेकिन वह समय भी आया जब आस्ट्रिया की भूमि पर असन्तोष की भावना जगी। आस्ट्रिया की जनता सामन्तवादी दासता से मुक्त होना चाहती थी इसलिए कभी-कभी किसान विद्रोह कर उठते। धीरे-धीरे राष्ट्रीय-दल जोर पकड़ने लगे। सन् १८४८ आते-आते इसने विकराल रूप धारण किया। आस्ट्रिया की भूमि पर क्रांति के बीज फ्रांस से आये, जब लुई फिलिप के विरुद्ध हुई क्रांति ने सारे यूरोप को प्रभावित किया। आस्ट्रिया भी क्रांति की लपटों में आ गया। इस क्रांति ने आस्ट्रिया की हुकूमत को हिला दिया।

लम्बे अन्तराल कहिये, द्वितीय विश्व-युद्ध की समाप्ति के बाद मित्र राष्ट्र स्वतन्त्र आस्ट्रिया के गठन को लेकर सहमत हुए। लम्बी अवधि तक वाद-विवाद और विचार होते रहे और अन्ततः एक सन्धि द्वारा २७ जुलाई १९५५ को आस्ट्रिया को स्वाधीनता और सर्वोच्च प्रभुता प्राप्त हुई। आस्ट्रिया राज्य की इस संधि पर १५ मई १९५५ को संयुक्त राज्य अमेरिका, सोवियत-संघ और ग्रेट-ब्रिटेन तथा आस्ट्रिया ने हस्ताक्षर किये, इसके अनुसार आस्ट्रिया ने स्वीकार किया कि वह जर्मनी के साथ राजनीतिक या आर्थिक संघ का निर्माण नहीं करेगा।

आज का आस्ट्रिया एक छोटा देश होकर भी अपने विकास के लिए निरन्तर प्रयत्नशील है। यहाँ की मिट्टी बहुत ही ऊर्वरा है। यहाँ गेंहू, चुकन्दर आदि की खेती अच्छी होती है। यहाँ वैज्ञानिक उपकरण, बिजली की मशीनें और महीन कपड़े बनाने के कारखाने हैं, जो प्रायः पन बिजली से सञ्चालित होते हैं।

यह आस्ट्रिया है, जिसके माथे पर युद्ध के बादल घिरे, घिरे और बरसे। तानाशाह हिटलर के खौफनाक पंजे का शिकार आस्ट्रिया जर्मनी के साथ मिला लिया गया लेकिन द्वितीय विश्व-युद्ध के समय मित्र-राष्ट्र सक्रिय हुए। मास्को सम्मेलन के मंच से जर्मनी द्वारा आस्ट्रिया के एकीकरण को अवैध घोषित किया गया तथा फिर से आस्ट्रिया की स्थापना का निश्चय किया गया।

आज आस्ट्रिया अपने संकल्प लिए अपने प्राणप्रण से संचेष्ट और नये विकास को बंसरी बजा रहा है। विकास की इस बंसरी की ध्वनि, यूरोप ही नहीं सारा संसार सुन रहा है।

रेशमी नगर वियेना

आस्ट्रिया की भूमि निश्चित ही कठिन संघर्ष का ज्वलन्त प्रतीक है। कई घण्टे की यात्रा के बाद हम रात के दस बजते-बजते वियेना के शालीमार होटल के सामने आये और भोजन (डीनर) किया। वहीं से दूसरे दिन की लंच के लिए पैकेट भी मिल गया। हम शालीमार होटल से 'सिटी रामा' होटल गए। कुछ ही देर बाद हमारी व्यवस्था हो गयी और हमको कमरा नम्बर ४६८ मिल गया। बाथ-रूप बेड सभी कुछ ठीक लेकिन शौचालय अलग। अभी तक हमें ऐसे होटलों का आतिथ्य मिलता रहा है जहाँ सारी सुविधायें एक साथ थीं लेकिन वियेना के इस होटल में वैसी व्यवस्था न मिली।.अधिक विलम्ब और रात हो जाने के कारण हम अपने कपड़े आदि भी साफ न कर सके लेकिन हम संतोष करते रहे कि शालीमार होटल ने बिलकुल भारतीय भोजन पोलाव, रायता, कई प्रकार की सब्जियाँ देकर परितृप्त किया। हमने 'सिटी रामा होटल, के भीतर रात्रि विश्राम किया। थका-थका मन, थके प्राण थकी-थकी आँखें।

आज १५ अगस्त १९८० है। अपने देश का स्वाधीनता-दिवस। स्वातंत्र्य-संग्राम की स्मृतियाँ मानस में घुमड़ आयीं। प्रातः सात-बजते-बजते हम तैयार होकर नीचे रेस्टोरेन्ट की मेज पर अल्पाहार के लिए आए, फिर वही ब्रेड, बटर, चाय। आठ बजे प्रातः हम बस पर सवार हुए। कुछ ही क्षण के बाद हमारी बस खुल गयी। अब हम रेलवे-स्टेशन सेन्ट्रल के समीप हैं। यह स्टेशन, कई भागों में बटा हुआ है। रेल गाड़ियाँ ऊपर से गुजरती हैं और नीचे स्टाल लगे हैं, कहीं-

कहीं ट्रेन भूमि के नीचे से गुजरती है। एक ही ट्रेन कभी नीचे और कभी ऊपर से पास कर जाती है। ऐसे क्षणों में एक मनोहारी दृश्य उपस्थित हो जाता है। रेल सेवा के साथ वियेना की भूमि पर ट्राम-सेवा भी पूरी तरह व्यवस्थित है।

वियेना के दर्शनीय स्थानों में मेरिया थेरेसिया (Meria Theresa) आस्ट्रिया की रानी का भवन है। यह अठारहवीं शताब्दी का विशाल भवन है जिस पर कभी रूस का अधिकार, कभी युगोस्लाविया और कभी हंगरी का अधिकार रहा है। आज इस भवन पर आस्ट्रिया सरकार का अधिकार है। इस भवन के भीतर १४०० कमरे १४० स्नान घर और भोजन-गृह हैं, जगह-जगह फव्वारे लगे हुए, खिलते खुलते बाग-बगीचे, कुल मिलाकर एक अत्यन्त ही दर्शनीय ऐतिहासिक भवन।

एक आधुनिकतम नगर है वियेना सारी सुविधायें सुलभ हैं, इस नगर को। स्वच्छता-सफाई की व्यवस्था विशेषता है, इस नगर की, लेकिन यहाँ भी वेनिस की तरह यूरिनल जाने के लिए एक सिलिंग भुगतान करना होता है। वियेना की यह व्यवस्था और तकनीकी है—एक सिलिंग डाल देने के बाद ही यूरिनल का दरवाजा खुल सकता है। यह स्वचालित व्यवस्था एक क्षण के भीतर किसी को भी चकित कर सकती है। मेरे एक मित्र को इसी प्रकार की मुश्किल का सामना हो गया और उनके लिए एक सिलिंग का प्रबन्ध करना पड़ा। कुछ इसी प्रकार की व्यवस्था भारतीय नगरों और उप-नगरों में शुरू हो गयी है, लेकिन वेनिस और वियेना के समान नहीं।

आस्ट्रिया का सिक्का है—सिलिंग। एक डालर का बारह सिलिंग होता है, भारतीय एक रुपया बराबर है डेढ़ सिलिंग के। यह वियेना नगर रेल के जरिये जर्मनी, पोलेंड, स्विट्जरलेंड और फ्रांस के साथ जुड़ा हुआ है।

हम 'मेरिया थेरेसिया' का भ्रमण करने के बाद आस्ट्रिया का 'पार्लियामेंट हाउस' देखने गये। आस्ट्रिया का सदन १८३ सदस्यों का है और ९० वर्ष तक के लोग मतदान के अधिकारी हैं। निर्वाचन चार वर्ष के बाद होता है। आस्ट्रिया के

संसद-भवन के बाद हम भारतीय दूतावास गए लेकिन हमारा दुर्भाग्य कि हमें अपने भारतीय राजदूत डाँ० केस्लेकर के दर्शन न हुए। हम भारतीय दूतावास से चर्च देखने गए लेकिन समयाभाव के कारण 'बेलेडोरे पैलेस (म्यूजियम) नहीं देख सके। आस्ट्रिया सरकार की ओर से शनिवार और रविवार को साप्ताहिक बन्दी रहती है।

आज हमारे भारत का स्वाधीनता दिवस है न, इसलिए हमारे दुभाषिये ने कहा—'आस्ट्रिया की जनता अपने किसी भी मित्र देश की स्वाधीनता का सम्मान करती है, इसलिए कि आस्ट्रिया को विश्व के मानचित्र से हटाने का प्रयास लम्बी अवधि तक जारी रहा लेकिन आस्ट्रिया का अस्तित्व उभर कर सामने आ गया।' मेरे मन-प्राण आकुल हो उठे, काश आज हम भारत में होते। इतनी लम्बी यात्रा करने के वाद. अनुभव-अनुभूतियाँ संचित करने के बाद भी इस एक सूत्र का कहीं भी उत्तर नहीं है—'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।'

आज हमारे लिए उमंग-उल्लास का दिन है और अचानक हमारी बस वियेना सिटी के उस स्थान पर आ गयी हैं, जहाँ ऑटोमेटिक झूले लगे हैं। यह है वियेना सिटी का मनोरंजन पार्क। इसे यहाँ एम्यूजमेंट पार्क (Amusement Park) कहा जाता है। इस पार्क में तरह-तरह के झूले लगे हैं, नीचे-ऊपर क्या प्रत्येक दिशाओं से घूमने वाले झूले, कोई मोटर-कार की तरह, कोई रेल-डब्वे के समान। इन झूलों पर भिन्न-भिन्न नाम अंकित हैं, सुट्रन (Sutran) गेट स्टार (Get Star) टरबोस्टार (Tnrbo-Star) आदि। एक बिजली की कार जमीन पर चक्कर काट रही है, 'ऑटोडिसोमी' (Aoto Desomi) लेकिन सबसे बड़ा झूला 'मिकाडो' है, (Micado), जो कई सौ फीट ऊपर जाकर नीचे की और लौटता है। इसका आकार रेल के डब्बे जैसा है। इसके भीतर बीस आदमियों के बैठने का स्थान है। इन झूलों पर झूलने के लिए १० से लेकर १५ सिलिंग तक किराया देना होता है। लोगों को झूलते देखकर जैसे मेरा मन भी झूल गया 'मिकाडो' पर। कमजोर दिलवालों के लिए यह झूला नहीं है। होश हिरन हो सकता है। यूरोप में ऐसा झूला कहीं और नहीं देखा।

आस्ट्रिया की वियेना सिटी को छोड़ने के पहले दो-चार शब्द और—वियेना की जनसंख्या है, साढ़े सात मिलियन। यह नगर भी मेरे जानते, यूरोप का वहुत मँहगा नगर है। उदाहरण के लिए मक्के के भुने पैकेट (पोपोकन) लीजिए। अपने यहाँ एक रुपया प्रति पैकेट मिलता है, उसी पैकेट के लिए यहाँ दस सिलिंग दिया है, दस सिलिंग बराबर है भारतीय सात रुपये के। एक कोकोकोला कहीं सात और कहीं आठ रुपये भारतीय का मिला और जूते ? मत पूछिए, जूते की कीमत ९०० सिलिंग से १४०० सिलिंग तक, आप अनुमान लगा सकते हैं कि हमारा रुपया ६०० से ९०० तक बैठ जाता है। कुल मिलाकर यह फिर कहने दिया जाय कि वियेना यूरोप का सबसे खर्चीला और मँहगा नगर है।

हमारी बस खुल गयी है। पूर्व-निर्धारित योजना के अनुसार हम वियेना सिटी के शेष भाग का चक्कर लगा रहे हैं—यह है—चर्च सेन्टी पीटर, स्पेनिश कोर्ट, राइडिंग स्कूल, ओपेरा हाउस, वेलीवेडेर कैसल, टाउन हॉल, होटल कारेन्ट एट्रे-वे, सेन्ट स्टीफेन केथेड्रल चर्च, द मोटेल चर्च, स्कोन ब्रोन ग्लोरियो, स्कोन बर्न पैलेस, हिरोज स्क्वायर, प्रिन्स युगोन मनुमेन्ट (स्मारक), ओल्ड इम्पेरियल थिएटर, जॉन स्ट्राउस मनुमेंट (स्मारक) सेन्ट याले चर्च, ग्रीचेन ब्रिसेल-ग्रीन्जील, डेन्यूब टावर। यह डेन्यूब टावर ७२ फीट ऊँचा है और उसके ऊपर घूमता हुआ रेस्टोरेंट। इस रेस्टोरेंट के भीतर कॉफी के साथ झूले का आनन्द लिया जा सकता है। वियेना सिटी के भीतर कई झीलें हैं, नदी भी दिखायी पड़ी. मोटर लगी किश्तियाँ तेजी के साथ भागती हुई।

वियेना की संचार-व्यवस्था का अनुमान इस व्यवस्था से लगाया जा सकता है कि भीड़ भरी सड़कों को पार करने के लिए आपको ऊपर से गुजरने की जरूरत नहीं है, अंडर-ग्राउन्ड क्रास बने हुए हैं और आटोमेटिक सीढ़ियाँ लगी हुईं, आप अपने पैर सीढ़ी पर रखिये, विना कदम बढ़ाये ही आप ऊपर जा सकते हैं। ये सारे दृश्य, ये दृश्यावलियाँ हम अपनी बस के भीतर बैठे-बैठे देख रहे हैं। हमारी बस सम्पूर्ण वियेना सिटी का चक्कर लगाकर इस महानगर से बाहर निकलने जा रही है।

आस्ट्रिया के चर्चों को ही नहीं, इस देश के धार्मिक स्थलों के साथ एक अनुशासित नियम है कि आप किसी भी चर्च या धार्मिक स्थल पर धार्मिक चर्चा ही कर सकते हैं, राजनीतिक चर्चा नहीं। किसी भी चर्च का कोई भी अधिकारी राजनीति में भाग नहीं ले सकता। चर्च के भीतर प्रशासन की आलोचना नियम विरुद्ध है।

आस्ट्रिया, हंगरी, इटली, युगोस्लाविया आदि देश एक ही प्रकार के संघर्ष से जूझकर स्वाधीनता को प्राप्त हुए हैं। आस्ट्रिया एक सम्पन्न राष्ट्र के रूप में विकसित हो रहा है। यहाँ कोई गरीब नहीं, सभी लोग श्रम करते हैं, उपार्जन करते हैं और जीते-जागते हैं। खेती मशीनों के द्वारा होती है! यहाँ प्रायः सभी उद्योगों, कलकारखानों का राष्ट्रीयकरण किया जा चुका है।

हमारी बस अब चेकोस्लोवाकिया के लिए चल पड़ी है। अभी हम आस्ट्रिया की भूमि से गुजर रहे हैं। अगल-बगल के खेतों में जौ और गेहूँ के लहलहाते पौधे प्रमाण हैं कि आस्ट्रिया के किसान कृषि-उत्पादन की दिशा में आत्म-निर्भरता के लिए अथक परिश्रम कर रहे हैं। मेरी आँखों के सामने हैं आस्ट्रिया के कटे खेत, जहाँ कुछ फसलें कट गयी हैं, कुछ कट रही हैं।

हमारी बसें अब आस्ट्रिया के अन्तिम छोर पर हैं, कहिए सीमा पर हैं। यह है आस्ट्रिया का बोर्डर चेक-पोस्ट। इस चेक-पोस्ट पर भी हमारा पासपोर्ट, वीसा वगैरह चेक किया गया, मुहरें लगायी गयीं। हमारी बसें चल पड़ीं। हमने आस्ट्रिया की भूमि को नमन किया।

चेकोस्लोवाकिया की सीमा पर

हमारी बस चेकोस्लोवाकिया की सीमा के भीतर आ गयी है। हमारे दुभाषिये ने बताया—'आगे चेकोस्लोवाकिया का चेकपोस्ट है, यहाँ से हमारी नयी यात्रा

आरम्भ हो रही है....।' कुछ ही क्षणों के वाद हमारी बस आकर रुकी। हमारे पासपोर्ट वगैरह फिर देखे गये, स्टाम्प लगे, लेकिन इस चेकपोस्ट पर काफी समय लगा। हम यहाँ दो बजे पहुँचे थे और साढ़े पाँच बजे प्राग के लिए प्रस्थान कर सके। इतना अधिक समय किसी अन्य देश के चेक-पोस्ट पर कभी न लगा। हमारी बस चेकोस्लोवाकिया के सघन ग्रामीण क्षेत्र से गुजरने लगी है। अगल-बगल गेहूँ और मक्के की फसलें, कुछ खड़ी, कुछ कटती हुई, कहीं-कहीं आलू जैसी खेती भी लगी है, कहीं-कहीं टमाटर की खेती भी। कभी-कभी पाट (पटसन) की खेती भी देखने को मिल रही है। चारो ओर हरियाली, हरे-भरे खेत लेकिन ऊँची-नीची जमीन, पहाड़ी इलाके जैसा दृश्य, छोटे-छोटे खपरैल मकान। अगर कोई शहर मिलता है, वहाँ चार, ६ या आठ मंजिला भवन भी दिखायी देता है। कभी-कभी आशंका होने लगती है कि यहाँ का शहरी जीवन भी भारत जैसा है, ग्रामीण जीवन, बिलकुल भारतीय ग्रामीण जीवन के समान। रात के ग्यारह बजे हम प्राग नगर के भीतर आए, ऐसा लगा जैसे हम अचानक ही किसी नये लोक में आ गये, विशाल भवन, कहीं दस, कहीं पन्द्रह और कहीं वीस मंजिली आलीशान इमारतें जैसे सारा ऐश्वर्य इस नगर के भीतर सिमट आया है। हमारी बस सीधे काजेटंका (Kejetanka) होटल के सामने आकर रुकी और हम इस होटल की १३ वीं मंजिल के कमरा नम्बर १३१-ए में ठहराये गये। फिर साढ़े ग्यारह बजे रात को एक अन्य होटल 'मेटोर' (Meteor) गए और भोजन (Dinner) किया, विश्राम के लिए पुनः अपने पूर्व निर्धारित 'होटल काजेटंका आ गए।

और अब प्रयाग में

प्राग, चेकोस्लोवाकिया की राजधानी है। जो सौन्दर्य किसी देश की राजधानी को प्राप्त है, वह सारा सौन्दर्य, रौनक प्राग को भी सुलभ है। 'होटल काजेटंका'

के कमरे के भीतरी काफी देर तक सोने का उपक्रम करता रहा, लेकिन आँखें खुली की खुली रह गयीं। सोचता रहा—"इटली, हंगरी, आस्ट्रिया के साथ इतिहास ने जो अन्याय किया, वही अन्याय चेकोस्लोवाकिया के साथ भी हुआ। यूरोप का इतिहास साक्षी है कि आस्ट्रिया के बाद आदर्श प्रजातन्त्रीय गणतन्त्र की छाया के नीचे विकास की दिशा की ओर अपने कदम बढ़ा रहा था – चेकोस्लोवाकिया। इस देश का अपराध मात्र यह था कि उसके सुडटेनलैंड प्रदेश में पैंतीस-छत्तीस लाख जर्मन रहते थे और यूरोप की भूमि पर फैली हुई जर्मन जाति का साम्राज्य-संगठन हिटलर का उद्देश्य हो गया था। हिटलर ने सुडटनलैंड-जर्मन दल तैयार कराकर हैनलीन को नेता बना दिया और इसी भूमि पर बगावत की आग भड़का दी गयी। उधर जर्मनी की सेना सीमा पर अभ्यास करने लगी लेकिन ब्रिटेन और फ्रांस ने जर्मनी को सावधान किया कि यदि हिटलर ने आक्रामक रुख अपनाया तो परिणाम बुरा होगा। अन्ततः वह समय भी आया कि चेकोस्लोवाकिया का वह भाग जहाँ जर्मन जाति के लोग रहते थे, जर्मनी के साथ मिला दिया गया और एक दिन ऐसा भी आया, जब सम्पूर्ण चेकोस्लोवाकिया जर्मनी के साथ मिला दिया गया। एक लम्बी अवधि के बाद 'चेकोस्लोवाकिया' स्वतन्त्र राष्ट्र का स्वरूप लिए यूरोप के मानचित्र पर आया और सन् १९६५ में पूर्ण स्वाधीनता को प्राप्त हुआ। मेरे सामने है—यूरोप का इतिहास, आधुनिक यूरोप का इतिहास लेकिन इसकी पृष्ठभूमि के साथ है चेक जाति का संस्कार। इतिहास कहता है कि यह जाति अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करना जानती है। यही कारण है कि चेकोस्लोवाकिया अपना अस्तित्व जीवित रख सका है। चेकोस्लोवाकिया आज विश्व के मान-चित्र पर है।

लेकिन इस भूमि ने इतिहास के लिए अपना बहुत रक्त दिया है। प्रथम विश्व युद्ध के बाद पराजित जर्मनी और आस्ट्रिया हंगरी के कुछ प्रदेश लेकर एक नया देश बनाया गया। इस नये देश में चेक और स्लोवाक जातियाँ रहती थीं, इसीलिए इसका नामकरण किया गया—चेकोस्लोवाकिया। चेकोस्लोवाकिया एक कम्यूनिस्ट देश है। इसका क्षेत्रफल उन्चास हजार तीन सौ चौवन वर्गमील है।

यह देश समुद्र-तट से बहुत दूर है, लेकिन एल्ब और डेन्यूब नदियाँ यहाँ का माल समुद्र तक पहुँचाती हैं। देश के पूर्वी भाग को स्लोवाकिया कहते हैं। अधिकांश स्लोवाक लोग इसी भाग में रहते हैं। ये लोग प्रायः कृषक हैं। यहाँ के लोगों का मुख्य धन्धा कृषि और पशुपालन है, पश्चिमी भाग बोहेमिया के नाम से प्रसिद्ध है, जहाँ लोहे, कोयले, सोने, चाँदी, यूरेनियम और अन्य कई धातुओं की खानें हैं। प्रसिद्ध स्कोडा स्टील वर्क्स, यूरोप का विशालतम इस्पात कारखाना है। यहाँ का शीशे और चीनी मिट्टी का सामान तथा वोहेमिया के वीयर सारे संसार में प्रसिद्ध हैं। यहाँ जई, चुकन्दर और आलू की खेती बड़े पैमाने पर होती है।

चेकोस्लोवाकिया की राजधानी 'प्राग' कभी वोहेमिया साम्राज्य की राजधानी था। आजकल प्राग इस देश का सबसे बड़ा नगर है, यहाँ प्राचीन बोहेमिया साम्राज्य के अवशेष देखे जा सकते हैं। यह रूप-रेखा है 'चेकोस्लोवाकिया' की लेकिन समय की मोटी पर्त्त ने इन ऐतिहासिक अवशेषों को अपने भीतर छिपा लिया है। यह स्वीकार किया जाय कि किसी भी देश के प्राचीन इतिहास से ही उसके आधुनिक अभ्युदय का अनुमान लगाया जा सकता है।

आज की रात मेरे लिए कठिन हो गयी। काफी रात गये मेरी आँखों में झपकी आ सकी। नियमित दिनचर्या के अनुसार सूर्योदय से पूर्व ही मेरी आँखें खुल गयीं और सात वजते-वजते श्री ज्वाल जी के साथ तैयार होकर वाहर आ गया और साढ़े सात बजे हम अपनी सुरक्षित बस से 'ब्रेक-फास्ट' लिए फिर 'होटल मेटोर' गए, जहाँ विगत रात को भोजन किया था, फिर वहीं ब्रेड, बटर, चाय, विशुद्ध शाकहारी जलपान किया। नौ वजे हम अपनी बस से ही प्राग नगर के परिभ्रमण को निकल गए। मेरे दुभाषिये ने वताया—'यह प्राग शहर नवीं शती का निर्माण है। इस नगर की जनसंख्या तीस लाख तीन हजार है। प्राग के नये भाग 'न्यूपार्ट' की आबादी तीस हजार के आस-पास है। यहाँ ६५ प्रतिशत महिलायें और ३५ प्रतिशत पुरुष हैं...जनसंख्या का यह प्रतिशत आपको विस्मित कर सकता है लेकिन इस सच्चाई से आश्चर्यचकित होने की आवश्यकता नहीं है कि चेकोस्लोवाकिया बीयर (मदिरा) और ग्लास के लिए बहुत प्रसिद्ध है।"

प्राग नगर में

हाँ, तो हमारी बस आगे बढ़ने लगी है यह रहा 'हेलेण्ड' टावर तीस मीटर की ऊँचाई पर और यह सामने आ रहा है—हास्पीटल, फेडरेशन, इनकन्टीनेण्ट, आगे बढ़ते ही सामने आ जाते हैं—सोशलिस्ट रिपब्लिक भवन और कई औद्योगिक संस्थान, फिर नेशनल थिएटर, ग्रेट कौंसिल, व्राट-ब्रिज और ६३ मीटर ऊँचा ग्रेट-टावर मनुमेन्ट, ग्रेट लायब्रेरी, यूनिवर्सिटी, आर्ट म्यूजिक हाल, सभी भवन एक शृंखला लिए राजधानी 'प्राग' की शोभा-मृद्धि ही नहीं करते वरन् देश-विदेश के पर्यटकों के लिए आकर्षण-केन्द्र बने हुए हैं।

हम प्राग को एक विकसित औद्योगिक नगर ही नहीं, वरन् चर्चों का शहर भी कह सकते हैं। यहाँ कैथोलिक चर्च ही नहीं, कुछ प्रोटेस्टेन्ट चर्च भी हैं। धार्मिक विचारधारा को लेकर यहाँ कोई विवाद या संघर्ष नहीं है।

प्राग की संचार-व्यवस्था आधुनिकतम है। स्मरणीय है कि चेकोस्लोवाकिया सन् १९६५ से एक स्वाधीन राष्ट्र के रूप में सम्मानित है और सन् १९६७ में भूमिगत पथों का निर्माण कर लिया गया। ये रास्ते कहीं-कहीं तंग नजर आते हैं लेकिन किसी प्रकार की असुविधा नहीं है। यहाँ जिला को 'प्रहा' कहते हैं। राजधानी 'प्राग' एक से अठारह 'प्रहा' के भीतर व्यवस्थित है। प्रहा में एक ही भारतीय दूतावास है। कुछ ही दूर जाने के बाद रिभल नदी के पार 'यंगमेन राइटर्स' का स्मारक स्वरूप 'ग्रेट टावर' स्टेचू भी है। चेकोस्लोवाकिया पर हुए सोवियत आक्रमण से हुई क्षति के निशान आज भी सुरक्षित देखे जा सकते हैं।

हम लोग बस से 'अन्डर-ग्राउन्ड' पथ से सिटी देखने गए, जहाँ से फिर लौटकर ऊपर आ गये। १४वीं सती का बना सेंट जार्ज चर्च देखा, जिसका निर्माण कार्य सन् १९१८ में समाप्त हो सका, इस चर्च का एक भाग अभी भी निर्माणाधीन है। केशल के प्राचीन किले का परिभ्रमण किया और अब हम

लौटकर 'बरताबा' नदी के तट पर आये, जहाँ स्नान करने के लिए बहुत ही सुन्दर घाट बने हुए हैं। एक किनारे पर नौकायें लगी हुईं। लोग इन नावों पर नदी की सैर भी करते हैं। इस नदी पर 'चेक-ब्रिज' है, जिससे होकर ट्राम गुजरती है। इस नदी के मनोरम तट पर नंगे तन लोग देखे गये, जैसे ये धूप-स्नान कर रहे हों। यह स्थान केशल (किले) से कुछ ही दूर हटकर है, किले के समीप से भी यह दृश्य देखा जा सकता है। यहाँ दूर देशों के बहुत से पर्यटक देखे गये।

चेकोस्लोवाकिया की भाषा है—'चेक' और 'स्लोभा'। आम निर्वाचन से सरकार का गठन होता है, उसके बाद पार्लियामेंट के सदस्य निर्वाचित होते हैं। पार्लियामेंट ३०० सदस्यों की होती है, २०० पुरुष और १०० महिलायें। केशल (किले) के भीतर है राष्ट्रपति भवन, चर्च और दो अन्य प्रतीक। एक—टैंक इस स्मृति के लिए कि इसी टैंक की शक्ति से स्वाधीन हुए, दूसरा—गोलियों और संगीनों की नोंक दिखायी गयी है कि इनके बल पर ही चेकोस्लोवाकिया की स्वाधीनता चेक जनता के द्वार पर आ सकी। ये दो प्रतीक निश्चय ही चेक जनता के आत्म-विश्वास की अप्रतिम स्मृतियाँ हैं। इन प्रतीकों से कोई भी स्वाधीनता-प्रिय व्यक्ति अनुप्रेरित होगा।

प्राग चेकोस्लोवाकिया की राजधानी ही नहीं, वरन् एक औद्योगिक निर्माण की कर्मभूमि भी है। यहाँ इलेक्ट्रीकल्स गुड्स और अल्मूनियम के कई बड़े-बड़े कारखाने भी संचालित हैं। यहाँ का न्यूनतम वेतन दो हजार और उच्चतम वेतन दस हजार है। यहाँ का सिक्का है—क्राउन और एक डालर बराबर हैं बीस क्राउन के और बीस क्राउन बराबर होता है भारतीय आठ रुपये के।

प्राग शहर के भीतर भी कूड़ादान के भीतर ही कूड़े-कचरे रखने का निर्देश है जिसका पालन आवश्यक है, जगह-जगह ढक्कन लगे 'कूड़ादान' (ड्रम) रखें हुए मिले, ढक्कन उठाकर कूड़े-कचरे डालिए, फिर ढक्कन को बन्द कर दीजिए।

यहाँ भी 'रेस्टोरेंट' को लोग 'रेस्टोरेंस' कहते हैं। मेरे जानते यह मात्र उच्चारण का अन्तर है। चेकोस्लोवाकिया की राजधानी 'प्राग' को हम अब छोड़

रहे हैं। अभी दिन के दो बज रहे हैं और हमारी बस 'प्राग' से प्रस्थान कर रही है। मेरे सामने प्राग की चौड़ी सड़कें हैं और यह खुली हुई डायरी लेकिन प्राग से विदा होते समय घर का स्मरण आने लगा है। आनन्द, सत्यानन्द की याद मन को भीतर-भीतर मसलने लगी है और डायरी ? यह लम्बी यात्रा, इस लम्बी यात्रा की डायरी भी लिखते जाने का आग्रह मित्रों का, समय और सुविधा का अभाव। चेकोस्लोवाकिया के लोग ईश्वर पर विश्वास नहीं करते, यहाँ के लोग शक्ति पर विश्वास करते हैं। एक विशुद्ध ईश्वरवादी के रूप में मेरी यह लम्बी यात्रा आरम्भ हुई थी और बिना किसी बाधा व्यवधान के जारी है। हमारी बस चेकोस्लोवाकिया की अन्तिम सीमा के पास आने लगी है। मेरे दुभाषिये ने कहा—"अब प्राग की अन्तिम सीमा कहिये—चेकोस्लोवाकिया की आखिरी सीमा के पास आ गये हैं। हमारी घड़ी पाँच बजा रही है" हमारी बस चेकोस्लोवाकिया के चेक-पोस्ट के सामने आकर रुक गयी है। इस चेक-पोस्ट के अधिकारी हमारे पासपोर्ट और वीसा देखने लगे हैं लेकिन वे इतना समय लगा रहे हैं कि कई प्रकार की आशंका होने लगी है। लीजिये चार घंटे के बाद हम इस चेक-पोस्ट से विदा हो रहे हैं, अपनी आगे की यात्रा के लिए, अगले सफर के लिए।

यह पश्चिम जर्मनी है

यह जर्मनी का चेक-पोस्ट है, पश्चिमी जर्मनी का। म्यूनिख पश्चिम जर्मनी का दूसरा मुख्य नगर। इस चेक-पोस्ट पर अधिक समय न लगा लेकिन चेकोस्लोवाकिया के चेक-पोस्ट से लेकर पश्चिम जर्मनी के चेक-पोस्ट से उलझते सुलझते रात को दस बज गये। पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार हमें दस बजे तक म्युनिख पहुँचना था। हमारी बस चेक-पोस्ट से दस बजे चली। हम अब पश्चिमी जर्मनी की भूमि से होकर गुजर रहे हैं। जर्मनी का नाम सामने आते ही अचानक हिटलर का स्मरण हो आना स्वाभाविक है। नेपोलियन बोनापार्ट के बाद यह एक

ऐसा नाम है, जिसने यूरोप-विजय का ही नहीं, विश्व-विजय का सपना देखा था लेकिन उसके सारे सपने सोवियत रूस की गलियों के भीतर मिट गए, बुरी तरह पिट गये लेकिन परिणाम से प्रभावित होकर जर्मनी विभाजित हो गया।

जर्मनी के विभाजन या एकीकरण से अपना कुछ भी लेना-देना नहीं है। हमारी बस अगल-बगल के ग्राम-नगरों को पीछे छोड़ती हुई तीव्र गति के साथ भागी जा रही है और हमारा मन तेजी के साथ भागने लगा है, इस कल्पना के साथ कि सारी रात कहीं इस बस-यात्रा के साथ ही न बीत जाये। इस लम्बी यात्रा के दौर में यह पहली रात है, जो हमारी खुली आँखों में डूबती जा रही है, लीजिये मेरे कई मित्र मीठी-मीठी झपकियाँ लेने लगे हैं। भाई पन्नालाल जी नींद से परेशान हैं। मेरी आँखें भी झपकने लगी हैं, लेकिन जाग रहे हैं, हमारी बस के पहिये, अचानक दुभाषिये ने कहा—'अब हम म्यूनिख पहुँच रहे हैं।" मेरी आँखें घड़ी की ओर गयीं, तो देखकर विस्मित रह गया—चार बजा रही थी। अब हम म्युनिख नगर के भीतर प्रवेश कर रहे हैं। हमारी गाड़ी पूर्व निर्धारित आवासीय होटल के सामने खड़ी हुई, संभवतः विलम्ब से पहुँचने के के कारण आवास की व्यवस्था न हुई। हमने समीप के एक दूसरे होटल की शरण ली। हम जैसे ही इस होटल के भीतर प्रविष्ट हुए, उस होटल में पहले से ठहरे हुए कुछ विदेशी जो विभिन्न देशों से आये थे, अपने-अपने कमरे की खिड़कियाँ खोलकर हमारी ओर आश्चर्य चकित दृष्टि से देखने लगे। स्वाभाविक था हम अपनी ओर देखने वालों की नजरों का देखने लगे, हर्ष और विस्मय के साथ यह परस्पर देखा-देखी विचित्र कौतूहल का दृश्य उपस्थित करती रही। कुछ देर तक हम यह दृश्य देखते रहे। इस प्रकार हमारी रात कट गयी।

म्यूनिख की यादें

आज १७ अगस्त १९८० है। रात बीत गयी है। रात के सिरहाने से सूरज निकल आया है। सुबह के नौ बजे हैं। हम सभी तैयार होकर बस के पास आ

लेखक : लन्दन आर्य समाज के वन्दे मातरम् भवन के सामने

गए हैं। मैं साफ देख रहा हूं भाई पन्ना लाल जी की आँखों की अकुलाहट, अपलक पलकें, लगता है उनकी आंखों से नींद गयी नहीं है। रात की यात्रा, रातभर की परेशानी इस पूरी यात्रा पर छायी रह गयी।

हाँ, तो हमारी बस दस बजते-बजते म्यूनिख की सड़कों पर आ गयी और अब हम रिभर पार्क, सेंट फ्रींसिस म्यूजथिम के समीप खड़े-खड़े इस म्यूजियम के विशाल आकर्षक-भवन की पाँचवीं मंजिल पर लगी क्रेन को देखने लगे, जो नीचे का सामान उठाकर ऊपर छत पर बहुत आराम से रखती जा रही थी। देखने से म्यूनिख भी कैथोलिक और प्रोटेस्टट चर्चों का नगर-सा लग रहा है। लोग कहते हैं कि यहाँ कैथोलिक चर्च अधिक हैं, प्रत्येक चर्च के आगे ऊँचे-ऊँचे टावर बने हुए। एक ऐसे ही टावर का नाम बताया गया—'मेरिस स्क्वायर' यहाँ प्रतिदिन ठीक चार बजे प्रस्तर मूर्तियों द्वारा संगीत और नृत्य आरम्भ हो जाता है, सुहावने संगीत, लुभावने नृत्य। प्रस्तर की इन मूर्त्तियों के साथ स्वचालित यंत्र लगा है, जो निश्चित समय पर अपना कार्यक्रम आरम्भ कर देता है।

सिटीहाल और मेरिस स्क्वायर आमने-सामने हैं। मेरिस स्क्वायर टावर के समीप कई चर्च हैं, एक प्राचीन किला भी है। लोगों ने बताया कि यह किला प्रायः ग्यारह सौ वर्ष प्राचीन है। आश्चर्य हुआ कि यह किला अभी तक कैसे खड़ा है यह रूप लिए ?

इस म्युनिख नगर में जहाँ चारो ओर चर्चों की महिमा गयी जाती है, जैसे अपने यहाँ मंदिरों की गाथा, वहीं दूसरी ओर विज्ञान का चमत्कार भी हमें सम्मोहित करता है। मेरे सामने है, सिगरेट की छोटी-सी दूकान करीने से सजा सँवरा काउण्टर, बिलकुल छोटी-सी गुमटी के समान लेकिन अत्यन्त आकर्षक आधुनिकतम ऑटोमेटिक व्यवस्था से सम्पूर्ण। सिगरेट के मूल्य उसके सामने अंकित हैं। आप इस मूल्य के सिक्के डालिए कि दूसरे ही क्षण सिगरेट की पैकेट

५

अपने आप खट से बाहर आ गयी। काउण्टर पर कोई आदमी नहीं। यह चमत्कारी व्यवस्था पत्र-पत्रिकाओं के साथ भी है। आप निश्चित मूल्य के सिक्के डालिए : ऑटोमेटिक प्रणाली आपके हाथों में पत्रिकायें समर्पित करती है।

हिटलर : म्यूनिख में

जर्मनी का स्मरण सामान्यतया हिटलर जैसे व्यक्तित्व और उसके पौरुष को लेकर ही किया जाता है। संसार के ऐसे कई देश हैं, जिनका इतिहास इस साहसी व्यक्तित्व का स्मरण करता है। इन देशों का नाम सभी जानते हैं, यह कहने की आवश्यकता नहीं है लेकिन इतिहास कहता है कि सन् १९१२ से लेकर १९१६ तक हिटलर इसी म्युनिख की ही गलियों में आकर भटकता रहा। इस म्युनिख नगर में उसके मित्रों तथा परिचितों की लम्बी कतार थी। वह अपने साथियों के साथ जर्मन वर्कर्स पार्टी का सदस्य बन गया। इस राजनीतिक पार्टी में हिटलर के प्रवेश के बाद, वह पूर्ण रूप से विकसित हुई। कुछ ही दिनों बाद इस पार्टी का नाम बदलकर "राष्ट्रीय समाजवादी पार्टी कर दिया गया।

इतिहास गवाह है कि हिटलर के अभ्युदय की सीढ़ियाँ म्युनिख नगर से ही आरम्भ हुईं। कहने का तात्पर्य कि इस म्युनिख नगर का अपना गौरवशाली इतिहास भी है। जर्मनी का इतिहास साक्षी है कि सन् १९·० और १९३९ के युद्ध के बाद म्युनिख का जीर्णोद्धार हुआ है, यह है पिचर गार्डेन, चिलीरिंग गार्डेन, नाइट-क्लब, नाइट डांसिंग पैलेस, रेवा गार्डेन. कम्यूनिष्ट जर्मनी टावर, तीन सौ मीटर ऊँचा ऑलम्पिक टावर, बी. एम. डब्ल्यू० कार फैक्ट्री बौक्सिङ्ग हाल, ग्लास और प्लास्टिक के कारखाने, नेटिंग प्लांट, आगे बढ़ने पर आता है, आगस्टीन गार्डेन, जस्टिस क्वार्टर फिर स्टेशन मार्केट और वर्कर्स क्रेडिट

बैंक, बैंक के प्रमुख द्वार पर इस प्रकार–Verkehrs Kredit Bank अंकित देखा।

हम इस बैंक से अपने डालर भुनाकर मार्क लेने गये। २० डालर का ३३ मार्क मिला। म्युनिख की चाय के लिए एक मार्क सवातीन पेनींग मतलव साढ़े-सात रुपये भारतीय भुगतान किया। कहीं-कहीं एक डालर की एक चाय मिली, एक फिल्म चालीस रुपये की मिली वही फिल्म जिसके लिए रोम में बाइस रुपये लगे। कैमरे मँहगे, घड़ियाँ और मँहगी यहाँ सस्ता कुछ भी नहीं। वेनिस और वियेना से भी यह शहर मँहगा लग रहा है। यहाँ एक सायकिल ४६५ से ५०० मार्क की आती है–भारतीय डेढ़ हजार से दो हजार तक। कार १५ हजार मार्क, जिसका भारतीय ७५ हजार होता है। छोटी बेत्री कारें ४० हजार की थीं, किसी-किसी कार की कीमत एक लाख भी थी।

मेरे दुभाषिये ने कहा—इस म्युनिख नगर की आबादी एक लाख तीन हजार है। म्युनिख के होटल—एक बेड वाले कमरे का २०० से ३०० तक और डवलबेड वाले कमरे का ४०० से ९०० तक किराया निर्धारित है।

म्युनिख के होटल, म्युनिख की दूकानें नयी प्रणाली और आधुनिकतम व्यव-स्थाओं से युक्त हैं। होटलों में काउण्टर बने हुए हैं, सारे सामान कतारों में सजे-सजाये अपनी इच्छानुसार सामान लेकर आगे बढ़िये। निकासद्वार पर काउण्टर है, पैसा दीजिए और चलिए। जैसा सामान है, वैसी ही कीमत भी। होटल में आपको जो खाना है स्वयं लीजिए, काउण्टर पर पैसा दीजिए, कुर्सी-मेज पर खाइए, प्लेट टेबुल पर छोड़ दीजिए, खाली हो जाने पर बेयरा उठा ले जायेगा। बेयरा आपको कोई सामान लाकर नहीं देगा। चाय की मशीन लगी है, नीचे कप रखिये, स्विच दवाते ही उबलता गर्म पानी आ जायेगा, फिर चीनी का स्विच दबाइये, चीनी आ गयी। चाय की पोटली अलग है, दूध का पैकेट अलग, चाय और दूध डालिए, आपकी चाय तैयार है।

यदि आपको म्युनिख नगर के भीतर जाना है, स्टेशन चलिए। यहां भी स्वचालित मशीन लगी है, लिस्ट-चार्ट देखकर पैसे डालिए, उतने का टिकट सामने निकल आता है, फिर तिथियों के लिए अलग मशीन लगी है, अपना टिकट डालिए तिथि और समय अंकित हो जाता है। जितने घण्टे के लिए टिकट है, उतने घण्टे ही यात्रा कीजिए, उससे अधिक नहीं। यदि आपने नियम की अवहेलना की तो अर्थ-दण्ड के भागी होंगे। नगर की रेल-सेवा अंडर ग्राउण्ड है, बिजली की रेलगाड़ियाँ हवा से बातें करती चलती हैं। ऊपर दो मंजिला स्टेशन, जमीन के नीचे भागती हुई रेलगाड़ियाँ। ये सारे दृश्य चकित कर देते हैं। म्युनिख शहर में आसमान छूती मँहगाई है, लेकिन ईमानदारी भी है। यहाँ ट्राम्वे और ट्रेन दोनों ही सेवायें सुलभ हैं।

हमें मार्केट जाना था। एक घण्टे के लिए दो मार्क का टिकट लिया, मार्केट गए और लौट आए। मान लीजिए, आप किसी दूकान के सामने गए मगर दरवाजा बन्द दिखायी देता है। सामने स्विच लगी है, दबाते ही दुकानदार आ जाता है। सिगरेट आदि का कुछ ऐसा ही ऑटोमेटिक कारोबार है। यहाँ लोग लैट्रिन को डब्ल्यू-सी (W. C.) रेस्टोरेन्ट को रेस्टोन्स और मार्केट को 'मार्क्ट' कहते हैं।

हमने होटल रिमोली को छोड़ दिया। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार आज की रात भी म्युनिख नगर के लिए है। हमारी बस म्युनिख के प्रमुख दर्शनीय स्थलों से गुजर रही है—यह है म्युनिख का रेलवे अन्डर ग्राउण्ड स्टेशन यहाँ भी सारी व्यवस्था आटोमेटिक ही है। निधारित यात्रा के लिए टिकट दरें निश्चित हैं। आप आटोमेटिक काउण्टर पर जाकर इसके लिए निर्धारित सिक्के डालिए, टिकट आपके सामने होगा। यदि आपने कम सिक्के डाले तो यह आटोमेटिक मशीन कुछ क्षण तक शेष पैसे के लिए प्रतीक्षा करेगी फिर पहले डाले गए सिक्के बाहर फेंक देगी। ठीक वैसे ही जैसे आप किसी दूकान पर कोई सामान खरीद रहे हैं और आपने दूकानदार को कम पैसे दिए हैं तो वह लौटा देता

है। कहने का अर्थ कि आज का विज्ञान मनुष्य के मस्तिष्क के समान काम करने लगा है। सच कहा जाय तो विज्ञान मनुष्य पर हावी होता जा रहा है।

म्यूनिख के अण्डर ग्राउण्ड रेलवे स्टेशन की स्वचालित व्यवस्था देखकर इन मशीनों की ईमानदारी को लेकर सोचने लगा कि आज के विज्ञान ने वह सब कुछ कर दिया है, जिसकी कल्पना मानव समाज ने की थी लेकिन यह क्या ? मेरी दृष्टि उस जोड़े की ओर चली गयी, जो स्वचालित मशीन की तरफ आया और क्षण भर के लिए ठहर गया। युवक-युवती का जोड़ा पहले एक-दूसरे की ओर देखने लगा फिर एक दूसरे का प्रगाढ़ चुम्बन लेते हुए, वेझिझक चिपक गया निस्संकोच। युवक ने युवती को अपने भुजपाशों में बाँध लिया। मेरा कैमरा मेरे साथ था। मेरी अंगुलियाँ अचानक बटन पर गयीं। दूसरे ही क्षण मेरे संस्कार ने मुझे नियंत्रित किया। इस जोड़े के नाराज होने का भय भी था। ऐसे कई दृश्य, ऐसी कई स्थितियाँ मेरे विश्वासी कैमरे की लेन्स पर आयीं। मैंने म्युनिख में कहीं-कहीं ऐसी मशीनें लगी देखी हैं, एक मार्क डालिए एक ब्लेड अपने आप निकल आता है, आराम के साथ अपनी दाढ़ी बना लीजिए। म्युनिख के दर्शनीय स्थानों में आता है—'बियर गार्डेन' मेरे जैसे व्यक्ति के लिए बियर का क्या महत्व ? लेकिन बियर म्युनिख निवासियों के लिए अनुपम पेय है। बियर पीने के लिए लोग 'बियर गार्डन' जाते हैं। सुना कि यहाँ के लोग नशा के लिए नहीं, औषधि के रूप से बियर पीते हैं। यहां के अधिकांश लोग बियर ही पीते हैं।

आज हमने होटल यूनिकम जाकर दिन का भोजन किया, जहाँ पूर्ण भारतीय भोजन रोटी-दाल-सब्जी मिली। दस दिन के बाद यह पहला अवसर है कि भारतीय भोजन सुलभ हो सका है। सारा दिन चक्कर काटने के बाद रात को फिर हम 'होटल यूनिकम' की मेज पर भोजन के लिए बैठ गए। भोजन के बाद हम विश्राम करने के लिए होटल कारमेन आये।

होटल कारमेन की रात आराम के साथ बीत गयी। सुबह छः बजते-बजते ही अपना सामान लेकर नीचे आ गए, रेस्टोरेन्ट में जलपान के लिए और सात बजते-बजते हम सभी बस के भीतर हो गए। लंच का पैकेट यहीं से ले लिया गया, यह सोचकर कि आगे चलकर खा-पी लेंगे। हम म्युनिख नगर को छोड़ रहे हैं और जनसंख्या के अनुपात को लेकर सोचने लगे हैं कि यहाँ ६० प्रतिशत महिलायें और ४० प्रतिशत मिलाकर पुरुष कैसे जीते हैं। यह अनुपात बहुत कुछ सोचने के लिए विवश करता है। यही कारण है कि यहाँ के पुरुष, स्त्रियों के कन्धे से कन्धा मिलाकर चलते हैं अब हम चल रहे हैं पश्चिम जर्मनी के अन्य प्रमुख औद्योगिक नगर 'फ्रैंकफर्ट' के लिए।

आज १८ अगस्त १९८० है। हमारी डि-लक्स बस म्यूनिख नगर से बाहर निकलने के लिए अपनी गति तेज कर रही है। सुबह के ७ बज रहे हैं, हमारी बस के प्रभारी श्री चन्द्र जी चकित होकर देखने लगे हैं कि कहीं कोई छूट तो नहीं गया? यह आशंका उन्हें अक्सर बनी रहती है। हमारे साथ एक बस पर ५२ यात्री हैं, कहने के लिए ही नहीं वरन् देखने से ऐसा लगता है कि महर्षि दयानन्द का सन्देश, महात्मा गांधी का आशीर्वाद लिए भारतीय आर्य-प्रतिनिधि पश्चिम जर्मनी की भूमि पर अपने विचारों की अंजली देते हुए, चल रहे हैं। ऐसा लगता है, जैसे एक नन्हा भारतीय परिवार विश्व-बन्धुत्व की अनुभूतियां लिए एक साथ चल रहा है।

हमारी गाड़ी पश्चिमी जर्मनी के ग्रामीण इलाके से गुजर रही है। यह पहाड़ी इलाका है। चारो ओर हरी-भरी हरियाली, कहीं जौ-गेहूं, कहीं गोबी की खेती। थोड़ी दूर आगे जाने के बाद एक प्लेट लगा देखा, इस प्लेट पर अंकित था—रैम पोक्लेन (Ram poclain) यह जगह है—ऑस्फर्ट (Ausfart) के समीप। ज्ञात हुआ कि कई कारखाने हैं यहाँ। म्युनिख और

और फ्रेंकफर्ट के बीच ऐसे कई स्थान मिले, जहाँ सघन कृषि होती है लेकिन खेतों में अधिक आदमी काम करते हुए कहीं न मिले। सारी खेती मशीनों से की जा रही है। ऐसा लगता है, जैसे यहाँ कृषि को उद्योग की रूप-रेखा दी जा चुकी है। ज्ञात हुआ कि यहाँ खेतों तथा जंगलों में भी शौच-आदि निषिद्ध है। इसके लिए स्थान निश्चित हैं निर्मित हैं। सड़कें चौड़ी और साफ-सुथरी, कहीं कोई गन्दगी नहीं।

हमारी बसें स्टटगर्ट के पास आकर रुक गयी हैं। हमलोग कुछ देर के लिए उतर गए। टहल फिर कर थोड़ा विश्राम लिया। अभी दिन के बारह बजे हैं। बसें चल पड़ीं। कुछ ही मिनट बाद बेन्जीन (Bengin) नामक जगह मिली, देखा बगल के खेत में कोई बड़ी मशीन चल रही है, जिसके पीछे १० फीट लम्बी कोई पूँछ-सी लगी है, जिसके साथ घास-पात लिपटी हुई है। मैंने अनुमान लगाया कि यह कोई घास-पात साफ करने की मशीन होगी। हमारी बस तेजी के साथ चल रही है और इस तेज गति के साथ मेरी डायरी भी लिखी जा रही है, लेकिन ये भागते हुए दृश्य, भागती हुई दृश्यावलियाँ किसे आँखों में समेट लूँ और किसे छोड़ दूँ, कुछ भी समझ नहीं पाता। थोड़ी ही दूर जाने के बाद लिखा मिला 'फ्रेंकफर्ट४ (Frunk furt A Main) ऐसा लगा जैसे फ्रेंकफर्ट सिटी अब समीप है, लेकिन यह दूरी कम होने की अपेक्षा बढ़ती ही जाती है। हमारे सामने से गुजर गया, लीडर बोन (Leder Bown) और डोजेन बोन (Dossen Bown) इन उप नगरों को देखकर लगता है, ये औद्योगिक इलाके हैं। इन उप नगरों के भीतर कलकारखाने हैं। हमारी बस आगे बढ़ती जा रही है। हमारे सामने एक लक्ष्य है यात्रा का। इतनी लम्बी यात्रा के बाद भी मेरे भीतर किसी तरह की थकान नहीं आयी है। इस बस के सभी यात्री मिलकर एक परिवार जैसे हो गए हैं, विशुद्ध भारतीय परिवार।

अब हम उस क्षेत्र से आगे बढ़ रहे हैं, जो कृषि के क्षेत्र हैं, ग्रामीण इलाके हैं। इन क्षेत्रों को हरियाली आत्मा को सुख दे रही है, कहीं मक्के की खेती, कहीं तम्बाकू के पौधे बिलकुल कतारों में लगे हुए। हम देख रहे हैं कहीं एक कहीं दो आदमी मशीन से गेंहू काट रहे हैं। ऐसा लगता है कि यहाँ भी खेती के लिए अधिक आदमी की आवश्यकता नहीं पड़ती है। इसका अर्थ यह लगाया जा सकता है कि यहाँ खेती मशीन से की जाती है। यहाँ के किसानों ने खेती को नयी तकनीक अपना ली है। हमारी बस फिर एक उपनगर के समीप से गुजरने लगी है, आगे बड़ा-सा नेम-प्लेट दिखायी दे रहा है। इस नाम-पट्ट पर भी वही लिखा है-फ्रैंकफर्ट ए-मेन (Frank furt A. main) और कहीं-कहीं 'असफर्ट' (Ausfurt) लिखा भी देख रहे हैं। यह अनुमान लगाना कठिन हो रहा है कि फ्रेंकफर्ट कितनी दूर है, कितना समीप है।

और अब फ्रैंकफर्ट में

हमारे दुभाषिये ने कहा-"सामने फ्रैंकफर्ट का हवाई--अड्डा है और फ्रैंकफर्ट नगर बस तीन किलोमीटर की दूरी पर है।" देखते-देखते हम फ्रैंकफर्ट पहुँच गए। अभी हमारी घड़ी दो बजा रही है। हमने रुक कर अपना लंच ले लिया। म्युनिख से फ्रैंकफर्ट पहुँचने में सात घंटे का समय लगा है। हमारे सामने दिखायी दे रहा है 'बोन औफ' स्टेशन, बुश कम्पनी का कारखाना। इस कारखाने के सामने अंकित है-Bucch। इस बुश कम्पनी का भवन ४० मंजिला है, दो भागों में विभाजित। दुभाषिये ने बताया-'पश्चिम जर्मनी' पूरी तरह स्वतंत्र नहीं है। इस पर अमेरिका, फ्रांस और ब्रिटेन का नियन्त्रण है। अब हम फ्रैंकफर्ट, पहुँच गये हैं। पश्चिम जर्मनी का एक प्रसिद्ध नगर "हम अब 'फ्रैंकफर्ट' में हैं, यह नगर बिलकुल हमारी आँखों के सामने है। हम देख रहे हैं। यहाँ की भूमिगत (अंडर-ग्राउन्ड) संचार-व्यवस्था, चार मंजिल नीचे है, भूमि की सतह से।

यहाँ भी सारा काम स्वचालित (ऑटोमेटिक) है, आप पैसे डालिए, आपका टिकट सामने आ जाता है। इन ईमानदार मशीनों को देखकर हम सोचने लगे हैं कि आज के इन्सान की ईमानदारी को चुनौती देती हुई ये लोहे की मशीनें नये युग के लिए आश्चर्य हैं। ये मशीनें इतनी चेतन-प्रणाली से बनी हैं कि विस्मय से भर जाना पड़ता है। मान लीजिए, आपने किराया कम डाल दिया, ये मशीनें कुछ देर तक प्रतीक्षा करेंगी, अगर आपने बाकी पैसे डाल दिए, तब तो ठीक, आपका टिकट आपके सामने आ जायेगा अन्यथा मशीन आपके पैसे आपके सामने कर देगी। रेल-टिकट के काउन्टर्स पर प्रातः साढ़े छः बजे से आठ बजे तक और सन्ध्या साढ़े चार बजे से छः बजे तक भारी भीड़ लगी रहती है किराये का रेट स्विच दबाते ही अंकित हो जाता है। ये मशीनें सारे रेट सही-सही बताती हैं। यहाँ बिना टिकट कोई नहीं चलता, बिना पैसे डाले, कोई टेलीफोन नहीं करता, बिना पैसे डाले कोई भी आदमी शौचालय का प्रयोग नहीं करता। यदि किसी ने किसा प्रकार दुस्साहस किया और पकड़े गए तो यहाँ रिश्वत देकर बचना कठिन है, पुलिस पकड़ लेती है। इस छोटे अपराध के लिए ४० मार्क (भारतीय दो सौ रुपये) का जुर्माना भुगतान करना होता है। यहाँ सड़कों को पार करने के लिए भी नियम निर्धारित हैं। कूड़े रखने तक के लिए भी नियम बने हुए हैं। लोग इन नियमों का पालन करते हैं और अनुशासित जीवन जीते है यहाँ के लोग। नियम-विरुद्ध आचरण दंड का भागी होता है। किसी भी नियम के विरुद्ध आचरण करने पर २०० मार्क तक आर्थिक दंड का प्रावधान है।

कई छवि-गृह इस नगर के भीतर देखे गए। किसी भी हॉल में सिनेमा का एक टिकट आठ मार्क तात्पर्य भारतीय चालीस रुपये से कम नहीं है। कई अच्छे मार्केट 'अन्डर ग्राउन्ड' हैं, तीन मंजिल नीचे। अपनी पसन्द के सामान चुनिए, एकत्र कर काउण्टर पर जाइए, कम्प्यूटर मशीन लगी है, वह कीमत जोड़कर बता देती है। इन दूकानों की प्रत्येक सामग्री के सामने ऑटोमेटिक कैमरे लगे हुए हैं, यदि आपने कोई सामान छुपाकर झटक लिया, लिया या

या कोई सामान छुपाकर रख लिया, तस्वीरें खिंच जायेंगी, आपको पता भी नहीं चलेगा लेकिन काउन्टर का सेल्स-मैन निश्चय ही देख लेगा और पलक मारते पुलिस आपको गिरफ्त में ले लेगी, फिर आपका छूटना मुश्किल है।

मेरे दुभाषिये ने कहा—'यहाँ मजदूरी प्रतिमाह एक हजार से दो हजार मार्क मिलती है जो भारतीय पाँच हजार से दस हजार तक होता है। यहाँ भारतीय रुपये से चावल दस रुपये, आटा पाँच रुपये प्रति किलो और हजामत की दर प्रति व्यक्ति पच्चास रुपये है। यहाँ फल-मूल आदि भारत से कही पाँच गुना तो कहीं सात गुना अधिक है। ऐसा लगता है यहाँ के लोगों की क्रय-शक्ति वनी हुई लगती है।

हम किसी रेलवे-स्टेशन के पास खड़े हैं, इस स्टेशन के अन्दर जाने के रास्ते पर प्रवेश के स्थान पर EINKAVFS PASSAGE अंकित है। दो मंजिल नीचे स्टेशन फिर उसके दो मंजिल नीचे तेजी के साथ भागती रेल-गाड़ियाँ, रेलगाड़ियों में विजली की गति। आज का सारा दिन चक्कर काटते बीत गया है और अब हम 'होटल इंडिया' में रात का भोजन ले रहे हैं। होटल इंडिया, एक भारतीय सरदारजी का है। सरदार जी ने हमे सादर आमंत्रित किया। होटल इंडिया ने शुद्ध भारतीय भोजन कराकर हमें परितृप्त किया। यूरोपीय देश की भूमि पर भारतीय भोजन चावल, चपाती, आलू-गोवी, मटर दाल की सब्जी, रायता, दही। इस प्रकार का भोजन हमारी सम्पूर्ण यात्रा के क्रम में दो-तीन देशों में ही सुलभ हो सका।

होटल इंडिया से आज हम होटल जोरसन (Hotel yorsonne) आ गए हैं। हमारे लिए कमरा नम्बर एक सौ सुरक्षित हो गया है, हम अपने कमरे के भीतर हैं। यह स्थान फ्रेंकफर्ट से ४० मील दूर है, लेकिन ऐसा लगता नहीं कि हम मुख्य नगर से बाहर या बहुत दूर हैं। हमारी लम्बी यात्रा के दौरान अभी तक जितने भी होटल मिले, उनमें सारी सुविधायें साथ थीं लेकिन फ्रेंकफर्ट के इस होटल की व्यवस्था विलकुल विपरीत है। यहाँ-४-५ कमरे के लिए वस एक ही सम्मिलित टायलेट व्यवस्था है। यह होटल वैसे बहुत बुरा नहीं है लेकिन

सामान के नाम पर बस एक तौलिया रखा हुआ, साबुन तक नहीं। इसके पूर्व के होटलों में कहीं दो कहीं तीन तौलिए रखे मिलते थे। आज १८ अगस्त की रात को भारतीय स्वाधीनता दिवस-कार्यक्रम के क्रम में नार्थ-फैंकफर्ट के थिएटर हाल में भारत एसोसियेसन्स की ओर से भारतीय सांस्कृतिक कार्य-क्रम प्रस्तुत किया गया। पश्चिम जर्मनी में पुरुषों को हेरेन (Herren) और महिलाओं को डेमेन (Damen) कहते हैं।

आज १९ अगस्त, १९ अगस्त, १९८० को प्रातः उठा और सात बजते-बजते दैनिक दिन-चर्या से निवृत्त होकर हमने जलपान लिया, बस वही नित्य प्रति की तरह ब्रेड, बटर, जाम और फिर चाय। पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार आठ बजे अपनी बस पर सवार हुए। हमारी बस खुल गयी है और जू-हाउस सिटी, बैंक आफ टोकियो, चाइना हाउस के समीप से गुजर रही है। हमारी दृष्टि अचानक 'सेक्स—शाप' (Sex Shop) पर जाती है, बाहर एक नंगा-कहिए विभत्स चित्र लटक रहा था। 'मेरे दुभाषिये ने बताया—इस 'सेक्स–शाप, के भीतर नंगे चित्र दिखाये जाते हैं। बाहर लटक रहे चित्र को देखकर लगा कि यहाँ लज्जा नाम की कोई वस्तु नहीं है। इस 'सेक्स-शाप' के भीतर जाने की कल्पना भी मेरे लिए कठिन है।

यहाँ ऐसी पत्रिकायें भी बिक रही थीं, जिनमें नग्न-चित्र मुद्रित किए गए थे, सभी चित्र मौलिक बिलकुल स्पष्ट। कहीं-कहीं केवल नग्न चित्र भी बिकते देखे गए। यहाँ ब्लू-फिल्में भी धड़ल्ले से दिखायी जाती हैं, इन्हें हम घोर अश्लील चित्र कह सकते हैं। इन 'ब्लू-फिल्मों' के लिए लगभग ९ मार्क (भारतीय चालीस रुपये) और कहीं-कहीं १० मार्क तक के टिकट मिला करते हैं। ये "सेक्स-शॉप" मैंने जीवन भी कभी नहीं देखे।

अकेले फ्रंक-फर्ट में दो सौ के करीब देशी-विदेशी बैंक हैं, होर्समैन, जर्मनी बैंक, फेडरल बैंक आदि। आप किसी भी देश का सिक्का यहाँ बदल सकते हैं। इस नगर की आयु प्रायः दो हजार वर्ष की होगी लेकिन सन् १९४५ से इस नगर का विकास आरम्भ हुआ। आज यह पश्चिमी जर्मनी का

सबसे विकसित नगर माना जाता है। इस नगर की आबादी ६ लाख है और पूरे पश्चिम जर्मनी की जनसंख्या पाँच करोड़ से ऊपर है।

फ्रैंकफर्ट के बीच से एल्टी नदी बहती है। इस नदी के किनारे छोटी-छोटी मोटर लगी नौकायें खड़ी हैं, आप किराया देकर घूम सकते हैं। इस नगर के नीचे भी मार्केट है, ऊपर भी नीचे भी सवारियाँ चलती हैं और गहरी भूमि के नीचे रेल गाड़ियाँ और ऊपर ट्राम्वे! चीफ मिनिस्ट्री, इन्स्यूरेंस कम्पनी जर्मनी इन्स्यूरेंस कम्पनी आदि के विशाल भवन दीखते हैं। बैंक-बिल्डिंग्स भी आलीशान लग रहे हैं। बड़े-भवन २० से ३० मंजिल के हैं लेकिन फ्रैंकफर्ट का सिटी-हाउस ४३ मंजिल का है। यह भवन, इस नगर का सबसे बड़ा भवन है। फ्रैंकफर्ट नगर के बीच एल्टी नदी पर विशाल ब्रिज बना हुआ है। इस पुल से होकर ही लोग इस पार से उस पार जाते हैं। इस नदी के तट पर हैं मेटल कम्पनी' इंटर-नेशनल पैलेस आदि।

यह हैं फ्रैंकफर्ट का स्टेशन जहाँ से भूमिगत रेलवे की यात्रा की जा सकती है। बहुत कम पढ़ा-लिखा आदमी भी रंगों के सहारे इस विशाल नगर की यात्रा कर सकता है। यहाँ जोन (क्षेत्र) नम्बर १, २, ३, ४ लिखा हुआ है, हरेक जोन का नक्सा लगा हुआ है, अलग-अलग जोन का बिलकुल अलग-अलग रंग है, अलग-अलग संकेत लगे हुए। आपको जिस जोन की यात्रा करनी है, उसी रंग के लेबुल के नीचे लगे स्विच दबाकर देखिए—इस जोन का कितना किराया है, अपने आप अंकित हो जायेगा, फिर उतने पैसे काउण्टर पर डालिए, अपने आप टिकट निकल आयेगा, आप अपनी यात्रा कीजिये।

मेरा ध्यान इस नक्से पर था। मैं उस नक्से की प्रक्रिया जानने के लिए बहुत उत्सुक लोचनों से देख रहा था। हमारे सहयात्री इधर-उधर चहलकदमी कर रहे थे। अचानक एक भारतीय मिल गए। मेरे चरण सहसा उनकी ओर बढ़े। वे स्वयं भी मुझे देखकर मेरी ओर बढ़ आए। मालूम हुआ कि वे यहाँ पढ़ रहे हैं और किसी टेलीविजन कम्पनी में काम भी करते हैं। भारतीय ने बड़ी सहानुभूति के साथ मेरे प्रति जिज्ञासा की। उसने फ्रैंकफर्ट में रेल-यात्रा की सारी प्रकिया

समझाकर मुझे आश्वस्त किया। मैंने तीन-चार स्टेशनों की यात्रा भी की और फ्रैंकफर्ट की रेल-यात्रा का आनन्द भी लिया।

हमने पूरे नगर की परिक्रमा की, पी० गार्डेन होटल, यूरोपा होटल को समीप से देखा, नेपोलियन टावर को देखकर अचानक नेपोलियन बोनापार्ट की याद आयी विश्व के इतिहास का एक अत्यन्त शक्तिशाली व्यक्तित्व।

हमारा फ्रैंकफर्ट का समय समाप्त होने लगा है। अब हम अपनी अगली यात्रा के लिए तैयार होने लगे हैं। पश्चिम जर्मनी को छोड़ने से पहले दो शब्द और— "जर्मनी का सबसे सुन्दर नगर है–बर्लिन, जो कभी जर्मनी की राजधानी रहा है। इतिहास ने करवट लिया और जर्मनी के दो भाग हो गए। समय के गतिशील चरणों ने बर्लिन के दो भाग किए। आज आधा बर्लिन पश्चिम जर्मनी के अधीन है आधा बर्लिन पूर्वी जर्मनी के अधीन लेकिन शांति की सीमा रेखा सुरक्षा करती है। पूर्वी जर्मनी पर सोवियत रूस का नियंत्रण है। पश्चिम जर्मनी में दो राजनीतिक पार्टियाँ सक्रिय हैं एक है क्रिश्चियन डेमोक्रेटिक पार्टी दूसरी सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी।

अभी दिन के साढ़े ग्यारह बज रहे हैं और हमारी डिलक्स बस फ्रैंकफर्ट से आम्स्टर्डम (Amsterdam) के लिए प्रस्थान कर चुकी है। हमने अपने लंच का सामान ले लिया है। अभी हम पश्चिम जर्मनी की भूमि से ही गुजर रहे हैं। डेढ़ घंटे की तेज गति से यात्रा के बाद एक पेट्रोल पम्प पर आकर हमारी गाड़ी रुक गयी है। यहीं पर हमने अपने लंच लिए। हमारी गाड़ी यहाँ से दो बजे खुली है और चार बजते-बजते हम पश्चिम जर्मनी की अंतिम सीमा पर आ गए हैं। यह आखिरी चेक-पोस्ट है पश्चिमी जर्मनी का। इस चेक-पोस्ट पर हमारा पास-पोर्ट आदि देखा गया, स्टाम्प लगाए गए। थोड़ा विलम्ब और हुआ लेकिन कोई विशेष विलम्ब नहीं। यहाँ नासपाती बिक रही है, कीमत मत पूछिए, पाँच रुपये की एक। हम यहाँ प्रायः सभी प्रकार के फल देख रहे हैं लेकिन बहुत मँहगे, इतने मँहगे कि साधारण आदमी खरीदने की हिम्मत न कर सके। हम अब नेदरलैंड की भूमि पर हैं।

हीरे का देश नीदर लैंड

उत्तर-पश्चिमी यूरोप का यह छोटा-सा देश नीदरलैंड उत्तरी सागर के पूर्वी किनारे पर स्थित है। इस देश की आधी से अधिक भूमि समुद्र-तल से नीचे है। एक समय था, जब समुद्र इस देश को हानि पहुँचाता था। समुद्र की अपार जल-राशि आशंका और आतंक के झूले पर झुलाती रहा है, नीदरलैंड के जन-जीवन को लेकिन इस साहसी देश के उद्यमी और परिश्रमी निवासियों ने समुद्र से संघर्ष कर अपनी वहुत-सी भूमि वापस ले ली है। जिस भूमि भाग पर पहले समुद्र का पानी भर जाता था, अव उस भाग पर हरे-हरे चारागाह नजर आते हैं। आज इन चारागाहों में पशुओं को चरते हुए देखा जा सकता है।

नीदरलैंड के कुशल अभियन्ताओं ने समुद्र को बाँध दिया है, समुद्र की लहरों को नियन्त्रित कर दिया है और उसका मनचाहा उपयोग किया जाने लगा है। समुद्र के अतिरिक्त विश्व-युद्ध तथा दूसरे युद्धों ने भी इस देश को तहस-नहस किया लेकिन यहाँ के परिश्रमी और संकल्पी निवासियों ने हर वार अपने देश को वना लिया।

नीदरलैंड में डेरी-उद्योग को सवसे अधिक महत्व दिया जाता है। यहाँ से क्रीम, मक्खन, पनीर, दूध की चाकलेट और सुखाया हुआ दूध विश्व के अधिकांश देशों को निर्यात किया जाता है। इस निर्यात से अपार विदेशी मुद्रा नीदरलैंड को प्राप्त होती है। यहाँ का व्यापार और उद्योग भी पूर्ण रूप से विकसित है। यहाँ के छोटे-बड़े नगरों और शहरों में अनेक कारखाने हैं। इन कारखानों में जूते, कपड़े, बिजली का सामान, चीनी मिट्टी के बर्तन और जहाज बनते हैं। आम्स-टर्डम हीरों के तराशने और पालिश करने के लिए विश्व-प्रसिद्ध है। रोटडंम की गिनती यूरोप के अच्छे वन्दरगाहों और इस देश के वड़े नगरों में की जाती है। यहाँ राजतंत्रीय शासन है।

नीदर लैंड की सीमा के भीतर प्रवेश करते ही, फिर हमारा पासपोर्ट देखा गया, मुहरें लगायी गयीं। हम इस चेक-पोस्ट पर चार वजे आए और पाँच बजते-बजते विदा हो गए। हमारी डिलक्स-वस ग्रामीण क्षेत्र से गुजर रही है।

रोम के वाद हमारी यात्रा वस से आरम्भ हुई, हमने कई देश पार किए, कई देशों के जन-जीवन को समीप से देखा लेकिन गाय-वछड़े कहीं देखने को न मिले लेकिन नेदरलैंड की सीमा के भातर प्रवेश करते ही गायें मिलीं, वछड़े मिले। यहाँ के लोग गायें बहुत पालते हैं कहीं-कहीं वड़े-वड़े चारागाह भी दिखायी देने लगे। हम इन चारागाहों में गायें देख रहे हैं, कभी-कभी घोड़े भी दिखायी पड़ जाते हैं। गाय की नस्लें उत्तम कोटि, की चितकवरी और काली गायें अधिक देखने को मिलीं। गायों के थन बड़े-बड़े दोख रहे हैं। अनुमान किया कि ये गायें अधिक दूध देती होंगी। कहीं-कहीं भेड़ भ दीख रहे हैं लेकिन भैंस कहीं नहीं दिखायी देती।

यह सड़क जिससे होकर हम गुजर रहे हैं, बहुत ही साफ ओर चौड़ी है, वीच में फूल पोधे और पेड़ लगे हुए, दानों आर चौड़ी सड़क है। इस सड़क पर एक ओर से तीन गाड़ियाँ पास कर सकती हैं। लम्वी दूरी तै करने के वाद कहीं पहाड़ न मिले, पथरीली भूमि न मिली किन्तु अगल-वगल, जंगल और झाड़ियाँ वहुत मिलीं, कहीं फल के पेड़ तो कहीं दूर-सुदूर तक फैली हरी-भरी हरियाली। कुछ ही दूर जाने पर एक वड़ो नदी मिली। इस नदो को धार पर स्टीमर चल रहा थी। लम्बे-लम्बे शीशम के पेड़ जैसे बहुत पेड़ दिखायी दिये। चारो ओर खेती कहीं तम्वाकू, कहीं मक्के लगे हुए, सुन्दर वाग और वगीचे। वहुत ही सुहावना दृश्य हमारी आँखों के सामने से गुजर रहा है, कहीं वहते नाले, कहीं नहरें कहीं नदियाँ। सड़कों पर कहीं धूल-धक्कड़ नहीं, हमारे कपड़े गन्दे नहीं होते इन देशों को यात्रा के क्रम में हमने प्रतिदिन प्रायः पाँच सौ किलोमीटर की यात्रायें कीं लेकिन कहीं भी धूल-मिट्टी न मिली, चारो ओर साफ सुथरी सड़कें और जमोन भो साफ सुथरी।

हमारी निगाहें दूर-सुदूर तक जा रही हैं, हम देख रहे हैं इस भूमि पर बिछा हुआ है नहरों का जाल, सिंचाई का उत्तम साधन। इटली में फल-मूल की अधिक खेती की गयी देखी थी हमने, उससे कम आस्ट्रिया और हंगरी में उसी प्रकार उससे कम या बराबर पश्चिम जर्मनी में लेकिन नीदरलेड में फलों की

खेती कम देखी गयी । गेंहू की साधारण खेती यहाँ होती है । जहाँ-कहीं नदी मिलती हैं, लोग मछली मारते हुए मिल जाते हैं । जमीन का रंग भूरा- मटमैला है । हमारी बस भागती जा रही है, बस की तेज गति के साथ हमारा धड़कता हुआ मन भी भागा जा रहा है, दूर-सुदूर की ओर । कुछ क्षणों के लिए घर की याद आ जाती है । कुछ क्षणों के लिए बच्चों की तस्वीर सामने आ जाती है और आकुल प्राण जैसे लौट आते हैं, अपने घर में अपने देश भारत में । लेकिन यह डि-लक्स बस भागी जा रही है 'नीदरलैंड' के प्रसिद्ध नगर 'आम्स्टडंम की ओर । आम्स्टडंम से पहले यह कोई नगर है, सुन्दर सुन्दर भवन । यह रहा सामने विशाल होटल थ्री स्टार यह है नोवोटेल होटल (Hotel Novotel) सन्ध्या के साढ़े आठ बज रहे हैं और हमारी बस इस होटल के सामने आकर रुक गयी है । यह १५ मंजिल का होटल है । कमरा नम्बर ७१६ हमारे लिए सुरक्षित मिल गया है । इस होटल में कई लिफ्ट लगे हैं । दस बजे रात को हमने भोजन (Dinner) किया-ब्रेड, सलाद, गोबी के पत्ते, गाजर, और थोड़ी उबाली हुई सब्जियाँ ।

होटल नोवोटेल, बहुत ही साफ-सुथरा, नीचे से ऊपर तक कालीन बिछी हुई, कहीं भी खाली जगह नहीं, कालीन भी ऊँचे किस्म की बिल्कुल स्पंज के समान कि अगर कोई सामने से गुजर जाये तो आवाज न आये । साफ-सुथरा बाथरूम, बाथ- मेट, तीन तौलिए, एक हाथ-मुँह पोंछने के लिए, दूसरा स्नान के बाद बदन पोंछने के लिए और तीसरा नहाने के लिए । इस लम्बी यात्रा के दौरान कहीं भी अपना तौलिया निकालने की आवश्यकता न हुई, जो भी ५-स्टार होटल मिले, सभी आवश्यक साधन से सज्जित मिले; मात्र पश्चिम जर्मनी के फ्रेंकफर्ट का एक होटल मिला, जहाँ थोड़ी असुविधा हुई ।

इस नोवोटेल होटल के काउन्टर पर रिसेप्शन (Receiption) के स्थान पर Recepteco लिखा मिला । 'हमने होटल नोवोटेल' के भीतर रात बितायी, कठिन थकान के कारण गहरी नींद भी आयी ।

लेखक : समुद्र में ऊपरी मंजिल जहाज पर वेस्टेन्ड से डोभर होकर इंगलैंन्ड जाते हुए।

आज २० अगस्त १९८० है। हम नित्य की तरह आज भी प्रातः काल उठ गए और निवृत्त होकर सात बजते-बजते नीचे रेस्टोरेंट तक आ गए। प्रातः जलपान के समय एक ग्लास फ्रुट-जूस फिर ब्रेड बटर, बाद को चाय लेकर ९ बजे बस पर सवार होकर नगर के परिभ्रमण के लिए निकल गए। इस नगर के भीतर बहुत ही चहल-पहल थी, लोग तेजी के साथ अपनी-अपनी दिशाओं की ओर जा रहे थे, कारखाने, दफ्तरों की ओर भागते हुए लोग। यह नगर श्रमिकों का ही नगर है। यह सामने है – आम्स्टर्डम फौरेस्टडायमण्ड फैक्ट्री, जहाँ पत्थरों को तराशकर हीरा निकाला जाता है और क्वालिटी के अनुसार अलग भी किया जाता है। एक कैरेट के बढ़ियाँ किस्म के हीरे की कीमत आठ हजार डालर, मध्यम कोटि के हीरे का मूल्य ६००० डालर और उससे अन्न क्वालिटी का हीरा ४००० डालर का था, जिसका भारतीय ४ हजार होता था। इस डायमंड फैक्ट्री की यह विशेषता दर्शनीय रही कि काउण्टर पर बैठा अधिकारी हम लोगों को भीतर दिखाने ले गया, वह अन्दर एक मेज पर बैठ गया, हमलोगों को सामने खड़ा करा दिया और बाहर से फाटक बन्द कर दिया। ज्ञात हुआ कि यहाँ हर जगह कैमरे लगे हैं और टेलीविजन के सहारे हमें अपने कमरे के भीतर से देख रहा है, अगर किसी ने जरा भी कुछ छिपाने का प्रयास किया, पुलिस पकड़ ले जायेगी। बाहर पुलिस खड़ी मिली। यह व्यवस्था विचित्र लगी।

नीदरलैंड की मूल्यवान निधि है, यह डायमंड फैक्ट्री। हम कोई हीरे के सौदागर या खरीदार नहीं। लेकिन यह जानकर आपको आश्चर्य होगा कि यहाँ सात हजार आदमी काम करते हैं और यह आम्सटडंम के दर्शनीय स्थानों में से एक है। ऐसा लगता है जैसे ये ईमानदार मशीनें आदमी के ईमानदारी के साथ जीने को प्रेरित करती हैं। इस नगर की आबादी सात लाख बीस हजार है। हजार के आस-पास भारतीय लोग भी यहाँ रहते हैं। यह नगर १९ वीं शती का ही निर्मित है। यहाँ फ्रुट मार्केट और अन्य कई ओपेन मार्केट हैं।

मेरे दुभाषिये ने बताया कि प्रति सप्ताह १५० डालर श्रमिक-वर्ग का पारिश्रमिक है। विदेशी लोग ५० डालर तक अपने देश को भेज सकते हैं, यह सुविधा

सुलभ है। श्रमिक-वर्ग के लिए छोटे-छोटे फ्लैट बने हुए हैं, वैसे एक किचेन के साथ चार कमरे का मकान किराया १५० डालर मासिक है जो किश्तों में दिया जा सकता है। नीदर लैंड एक समाजवादी व्यवस्था का देश है लेकिन यहाँ अधि-कांश कल-कारखाने और उद्योग निजी क्षेत्रों के अधीन हैं, केवल बिजली उत्पादन और वितरण सरकार के अधीन है।

और बिजली का करिश्मा है यह पवन चक्की, जिसकी पंखी हवा के सहारे चलती है, जमा हुआ पानी निकालकर अपने आप समुद्र की ओर उछाल देती है, पानी बढ़ने नहीं देती। इसके सामने झील या बड़े पोखरे जैसा देखा, कि जहाँ से पाइपकनेक्शन लगे हुए हैं। यह पवन चक्की और उसकी पंखियाँ पानी बढ़ते ही अपने आप चलने लगती हैं और सारा पानी समुद्र की ओर उछाल देती हैं। यहाँ विजली चमत्कार बन गयी है। 'आम्स्टर्डम' नगर के चारो ओर केनाल हैं, नहरें हैं। यह सामने है कनवेन्सन हॉल, प्रिसन केनाल, सेन्ट्रल केनाल, जिनमें छोटी-छोटी नावे चलती हैं। प्रिसन केनाल, फेन्स केनाल, ये सभी मार्केट हैं, बीच से नहरें और दोनों ओर मार्केट, जगह-जगह छोटे-छोटे पुल। यहाँ के सारे भवन १७ वीं शती और १९ वीं शदी के बने हुए है। यह है रेलवे स्टेशन, जिसकी बगल से नहरें पास कर रही हैं, चारो ओर नहरें, चारो ओर पुल, पुलों के ऊपर साफ-सुथरे मार्केट कंक्रीट से बने किनारे, हर जगह घूमने के लिए छोटी-छोटी किश्तियाँ।

आम्स्टर्डम में जगह-जगह चर्च (गिरजाघर) बने हुए. कहीं कैथोलिक और कहीं प्रोटेस्टेन्ट, लेकिन यहाँ भी कैथोलिक चर्च ही अधिक हैं। इस नगर में सन् १७१४ ई० के बने हुए चर्च भी देखे जा सकते हैं। कहीं-कहीं सस्ते और फ्रि मार्केट हैं, जहाँ सकेन्ड हैंड सामान सस्ते मूल्य पर लिए जा सकते हैं। इस तरह के मार्केट अलग हैं। आम्स्टर्डम नगर ही नहीं इसी नाम से नदी भी है, नदी बीच में, नहरें बगल से, प्रत्येक नहर एक-दूसर से जुड़ी हुई इसे केनाल सिटी भी कहा जाता है यह देश है नीदर लैंड और हालैंड इस देश का प्रमुख नगर है।

यह नीदरलैंड है, नीदरलैंड का एक प्रसिद्ध नगर आम्स्टर्डम, यहाँ कोई जाति नहीं है, यहाँ ईसाई हैं, मुस्लिम भी हैं और हिन्दू भी सभी लोग यह मानकर चलते

हैं कि मानव-जाति एक है। किसी प्रकार का भेद विभेद या छुआछूत नहीं है। विशेषता यह है जिसे पारिवारिक विशेषता कही जा सकती है कि बीस वर्ष तक की आयु तक ही लड़का माना जाता है, शादी हो जाने के बाद अपने अलग प्लैट में चला जाता है, पूरा परिवार एक साथ नहीं रहता। बच्चे माँ के साथ जाते हैं, पिता के साथ नहीं। अगर माता या पिता ने तलाक कर दिया तो बच्चे का खर्च पिता को देना होता है, लेकिन इसका निर्णय कोर्ट करता है कि किस परिस्थिति में या किन स्थितियों में यह तलाक दिया गया है। माता ही सम्पत्ति का स्वामी होती है। माता और पिता की मृत्यु के बाद ही लड़के को अधिकार मिलता है।

यहाँ के ८ प्रतिशत लोग ही कृषि कार्य करते हैं, शेष लोग नौकरी-चाकरी करके अपनी जीविका चलाते हैं। यहाँ खेती कम है, कल-कारखाने अधिक हैं। आम्स्टर्डम नगर के भीतर हमने टेलरेन्ट पार्क, नेशनल पार्क देखे, जहाँ दूर-सूदूर तक केवल फूल पत्तियाँ ही नजर आती हैं। यह है 'रोज पार्क' तरह-तरह के गुलाब के फूल खिले हुए, मनोरम मनोहारी और सामने है 'आमस्टल पार्क विलकुल समीप है, बस और ट्राम्बे, जिनका किराया एक गिल्डर पन्द्रह सेन्ट से कम नहीं है। यह न्यूनतम किराया है जिसका भारतीय ५.७५ या ६ रुपया होता है, आप एक घंटे के भीतर एक फर्लांग की यात्रा करें या उसके पहले ही लौटकर चले आयें।

यह एक 'फेंगस पार्क, है, जहा लैंड स्क्वायर है, जहाँ दूध का उत्पादन भारी मात्रा में होता है। यहाँ का यह दुग्ध-उद्योग एक प्रसिद्ध उद्योग है।

नीदर लैंड की रानी हैं मिसेज हेनीमेस और नेपाल से मिलता-जुलना प्रबन्ध इस भूमि पर है। वालिग मताधिकार के आधार पर यहाँ सरकार गठित होती है। अभी नेदर लैंड में कुल मिलाकर बारह राजनीतिक पार्टियों की संविद सरकार है. सोशलिस्ट पार्टी, कम्यूनिस्ट पार्टी वेचलर पार्टी, केथोलिक और प्रोटस्टेंट ... आदि पार्लियामेंट के मेम्बर की संख्या २२५ के लगभग है, अपर हाउस के १५० सदस्य और लोअर हाउस के ७५ सदस्य नीदरलैंड की पार्टियामेंट का कार्य काल मात्र चार वर्ष का है।

यहाँ भी सारी व्यवस्था, रेल, भूमिगत रेल स्वचालित है। एक ही सामान की कीमत होटल में कुछ, मार्केट में कुछ हमारा आवास इस होटल नोवोटेल के भीतर है। आम्स्टर्डम के बाजार में जो कोकोकोला आठ रुपये का मिला, वह इस होटल की मेज पर पन्द्रह रुपये का आया। इसी अनुपात से अन्य सामग्रियों की कीमत भी बढ़ जाती है, कौन जाने इसके पीछे क्या रहस्य है? यह आम्स्टर्डम नगर भी कम मँहगा नहीं। एक सेव का मूल्य ४ गिल्डर तात्पर्य भारतीय दस रुपये, एक टमाटर पाँच रुपये का, पश्चिम जर्मनी से भी महँगा।

यहाँ आप मार्केट या कहीं भी जाने लिए २५ जोन तक वस, टैक्सी या ट्राम का उपयोग कर सकते हैं। हम देख रहे हैं, सायकिल पर मर्द और ओरतें तेजी के साथ भागते जा रहे हैं। लोग दूकानों पर भी सामान लेते समय क्यू लगाते हैं। ईमानदारी के साथ लोग सामान लेकर काउण्टर पर दूकानदार को दिखाने के बाद पैसे देकर ही काउण्टर छोड़ते हैं। प्रत्येक सामान का मूल्य अंकित है। सारे काम नियमबद्ध अनुशासन के साथ वस, टैक्सी या ट्रामें भी लाल वत्ती देखते ही रुक जाती हैं, हरी वत्ती जल जाने के बाद ही वे आगे वढ़ती हैं। कोई भी आदमी कानून भंग करने का साहस नहीं करता। चौड़ी सड़क लेकिन दाहिने से जाने का प्रचलन-नियम सारे यूरोप के भीतर है। यह संभव है कि लेफ्ट हैंड ड्राइव गाड़ी होने के कारण ही इस प्रकार की व्वस्था की गई हो, लेकिन कोई दिक्कत पेश नहीं आती। पूरे नगर में "वन-वे-ट्राफिक', है एक ओर से जाना, एक ओर से आना। सायकिलों के लिए सड़क के दोनों ओर फुटपाथ बने हुए हैं। लोग आराम के साथ चलते-फिरते हैं।

होटल नोवोटेल की आधुनिकतम व्यवस्था भी अत्यन्त आकर्षक है। आपके प्रवेश या निकास के फाटक पर आते ही फाटक अपने आप खुल जायेगा और जभी आप अन्दर आयेंगे या वाहर जायँगे फाटक स्वतः बन्द हो जायेगा। यहाँ भी आटोमेटिक सिस्टम है। फाटक के पास आते ही दरवाजा अपने आप खुलेगा। हर दरवाजे पर शीशे के वड़े-वड़े टुकड़े लगे हुए, फ्रेम किए हुए। हर दरवाजे पर दो फाटक, सामने प्रतीक्षा-गृह। होटल के भीतर ही सारे काउण्टर, पोस्टेज

काउण्टर, पोस्टेज लेटर बॉक्स, इनफार्मेशन के लिए काउण्टर तथा मुद्रा-विनिमय की सारी सुविधायें सुलभ हैं। आपको कोई जानकारी चाहिए, होटल या उस देश की यात्रा सम्वन्धी सामान्य ज्ञान चाहिए, सभी कुछ मुद्रित-प्रकाशित मिल जायेगा आपको अगर कहीं टेलीफोन करना है आप २५ सेन्ट के तीन सिक्के डालिए और टेलीफोन कीजिए। एक गिल्डर मतलव भारतीय पाँच रुपपे दीजिए और टेलीविजन पर खेल खेलिए।

आज का दिन हमारे लिए परम हर्ष का है कि नीदरलैंड आर्य समाज के प्रचारक श्री ऋषि वलदेव प्रसाद तिवारी का दर्शन हुआ। श्री तिवारी विगत १० वर्ष यहीं रहते और किसी कारखाने में काम करते हैं। आम्स्टर्डम में आर्य समाज है। यहाँ श्री सीतारामजी प्रधान और अक्षयवट सिंह जी मंत्री हैं। यहाँ का आर्यसमाज शिथिल है। आवश्यकता है कि नीदरलैंड के लिए प्रचारक नियुक्त किया जाय।

आज की रात 'आम्स्टर्डम' नगर के 'होटल नोवोटेल' के भीतर वीतेगी। हम लोग नगर के परिभ्रमण के वाद अपने होटल के भीतर आ गए हैं। रात को आठ वज रहे हैं। प्रायः यूरोपीय देशों के होटलों में सुवह सात वजे से ग्यारह वजे तक ही सेवा सुलभ हो सकती है। होटेल नोवोटेल के साथ भी यही स्थिति है। मेरे कमरे के भीतर 'मूल्य-तालिका' रखी हुई है। आपकी जानकारी के लिए ही नहीं, आपके मानसिक मनोरंजन के लिए कुछ सामग्रियों की तुलनात्मक विवरणो प्रस्तुत है—चाय-काफी प्रति पौट ४ गिल्टर ५० सेन्ट (भारतीय २२ रुपये ५० पैसे) दूध प्रति ग्लास २ गि० ५० सेन्ट (भा० १२ रुपये ५० पैसे) कोको-कोला ३ गि० (भा० १५ रुपये) विटर लेमन—३ गि० (भा० १५ रुपये) औरेन्ज जूस, सेव जूस या टमाटर जूस—३ गि० (भा० १५ रुपये) सुवह का जलपान १२ गि० (भार० ६० साठ रुपये) लंच और डिनर २० और ३० गि० (भा० १०० रुपये और १५० रुपये) होटल नोवोटेल में सिंगल वेड का रूम भी वेल्जियम होकर हालैण्ड की ओर बढ़ने लगी। इस प्रकार वेल्जियम की स्वाधीनता वापस लौट आयी। यह सन् १९४४ का वर्ष था, जब हिटलर

एक रात के लिए ५०० रुपये, दो वेड का रूम ७२० रुपये यह मूल्य-तालिका चकित और विस्मित करने वाली है । इस मूल्य-तालिका को लेकर काफी देर तक चिन्तन करता रह गया और मेरी आँखें झपकी लेती हुई वन्द हो गयीं। आम्स्टर्डम का दिन अनुभव के लिए था, आम्स्टर्डम की रात अनुभूतियों के लिए थी। आज की रात भी नींद गहरी आयी।

शीशे का देश बेलजियम

आज २१ अगस्त १९८० है। हम नित्य की तरह प्रातः उठे और दैनिक कार्य से निवृत्त होकर सात बजते ही नीचे रेस्टोरेन्ट के भीतर आ गये। सुवह का जलपान लिया, ब्रेड जाम और दूध। आम्स्र्डम में ही सुबह-सुवह जैसे मौसम बदल गया था। आसमान पर वादल उमड़ आए थे। वर्षा की सम्भावना वढ़ गयी थी लेकिन इस मौसम की चिन्ता किए विना हमारी बस का चालक समय पर आ गया था। हमने आठ बजे प्रस्थान किया, बेलजियम के प्रसिद्ध नगर ब्रुसेल्स के लिए। एक घंटे की यात्रा के वाद हमारी डिलक्स-वस बेलजियम की सीमा के भीतर आ गयी। वेलजियम की सीमा पर पासपोर्ट आदि दिखाने की आवश्यकता नहीं हुई। हमारे दुभाषिये ने कहा—"एक ही वीसा पर नीदर लैंड, हालैंड और बेलजियम के बुसेल्स नगर जा सकते हैं। हम बेलजियम की भूमि से गुजर रहे हैं।"

बेलजियम का नाम सामने आते ही किसी भी व्यक्ति के लिए बेलजियम के शीशे की चमक आँखों में कौंध जाना अस्वाभाविक नहीं है। हमारे यहाँ अच्छे शीशे का पर्यायवाची है, जैसे वेलजियम प्रतीक है शीशे का। शीशा कहीं का बना हो, यदि उस पर बेलजियम शब्द अंकित है, वह ग्राहक की अभिरुचि को अपनी ओर सहसा आकर्षित करता है। शीशे की बातें आगे होंगी, आइए कुछ देर बेलजियम की चर्चा करें।

वेलजियम और इसके अत्यन्त निकटतम देश नीदर लैण्ड की गणना संसार के सबसे घनी आबादी, घने बसे देशों में की जाती है। बेलजियम का क्षेत्रफल ग्यारह हजार सात सौ उन्नासी वर्गमील है। फ्रास की दक्षिणी सीमा और जर्मनी की पूर्वी सीमा वेलजियम की सीमाओं को स्पर्श करती हैं। वेलजियम का उत्तर-पश्चिमी भाग 'फ्लेंडर्स,कपड़े के लिए विख्यात है। वेलजियम के पठारी क्षेत्र में फ्रेंच और शेष भाग के लोग 'फ्लेमिश' बोलते हैं। इस देश की कथा यहीं समाप्त नहीं होती। सारे यूरोप पर हिटलर के पंजे फैलते जा रहे थे। लन्दन पर जब हिटलर के हमले शुरू हुए, चर्चिल ग्रेट-ब्रिटेन के प्रधान-मंत्री हुए। चर्चिल के प्रधान-मंत्री-पद ग्रहण करने के एक दिन पूर्व ही हिटलर ने हालैन्ड और वेलजियम पर हमला कर दिया। हिटलर का कहना था ये दोनों ही देश ब्रिटेन और फ्रांस का सहयोग कर अपनी तटस्थता को भंग कर रहे हैं, यह आक्रमण जर्मनी की विवशता है। कहते हैं १० मई १९४० को जर्मन-सेना सुवह होते-होते एक ही साथ हालैण्ड, वेलजियम, और लक्जेमवर्ग की सीमा के भीतर प्रवेश कर गयी। वस पाँच दिनों के भीतर हीं हालैन्ड पर जर्मन-सेना ने अधिकार कर लिया और लक्जमवर्ग की भूमि पर जर्मन सेना का साधारण प्रतिरोध या विरोध भी नहीं किया जा सका लेकिन वेलजियम की भूमि पर जर्मन-सेना को कठिन विरोध का सामना करना पड़ा। उधर, ब्रिट्रेन और फ्रांस की सैनिक टुकड़ियाँ भी वेलजियम की सहायता के लिए आ गयीं लेकिन जर्मन सेना के कठिन प्रहार के सामने वेलजियम की सेना ठहर न सकी और २८ मई १९४० को वेलजियम के राजा ने बिना शर्त आत्मसमर्पण कर दिया।

हिटलर का हौसला वढ़ा और उसने फ्रांस पर भी हमला कर दिया। संघर्ष भयंकर हुआ लेकिन मित्र-राष्ट्रों की सेना संगठित होकर सामने आ गयी और जेनरल आइसनहावर यूरोपीय कमान का सर्वोच्च सेनापति मनोनीत किया गया। फ्रांस की भूमि की रक्षा के लिए भूमि के लिए भंयकर युद्ध छिड़ गया। फ्रांसीसी-अमेरिकी सेना आगे वढ़कर हिटलर से वह भूमि भाग छीन लेने में सफल हो गयी, जिस पर हिटलर ने अधिकार कर लिया था। मित्र-राष्ट्र की सेना

की पराजय के दिन आ गए। हिटलर का सपना भी नेपोलियन के सपने की तरह टूटकर बिखर गया नेपोलियन को क्रेमलिन राजप्रासाद के भीतर विश्राम का अवसर मिला, लेकिन हिटलर की किस्मत को यह भी बदा न था।

कहने का मतलब युगोस्लाविया की तरह बेलजियम से भी हिटलर की सेना के पैर उखड़ गए। बेलजियम की स्वतंत्रता इस देश के निवासियों के संकल्प और साहस का प्रतीक है। बेलजियम आज जीवन की प्रत्येक दिशाओं में विकास के लिए सतत प्रयत्नशील है। गुटनिरपेक्ष राष्ट्र भारत के स्वतन्त्र पर्यटक के नाते बेलजियम की भूमि को प्रणाम।

हाँ तो आसमान पर घने काले बादल घिर आये हैं। बिजली के साथ हलकी-हलकी वर्षा होने लगी है लेकिन हमारी बस भागी चली जा रही है। बहुत ही सुहाना दृश्य है, आसमान से चमकती बरसतीं बूंदे और चौड़ी चमकदार सड़क। हमारी बस किसी नगर से गुजर रही है, ऊँचे ऊँचे मकान दिखायी दे रहे हैं। इन मकानों की बड़ी-बड़ी खिड़कियों में ही नहीं वरन् कहीं-कहीं दरवाजे पर भी बड़े बड़े शीशे लगे हुए। मकान पाँच मंजिले या दस मंजिले, लेकिन उनकी खिड़कियों और दरवाजों पर शीशे चमक रहे हैं। हमारी बस के चारो ओर शीशे लगे हुए हैं।। कभी-कभी इस शीशे पर बाहर की रोशनी छलक-छलक जाती है। वर्षा तेज हो गयी है, कभी-कभी बिजली चमककर शीशे को चमका देते हैं। सामने एक दवा की दूकान है, जिस पर फारमेसी की जगह फारमेसिया (Pharmacia) लिखा है।

बेलजियम भी अन्य यूरोपीय देशों के समान एक अत्यन्त मँहगा देश है। हमारी बस एक स्थान पर रुकी, जहाँ शौच जाने के लिए ढाई रुपये और साबुन से बेसिन में हाथ धोने की कीमत तीन रुपये देने पड़ गए। हमारी बस बेलजियम के ब्रुसेल नगर में है और इस समय दोपहर दिन के बारह बज रहे हैं। हमारे सामने है बेल्जियम का पार्लियामेंट हाउस सेन्ट्रल सिटी बहुत साफ-सुथरा, कहीं किसी प्रकार की गन्दगी नहीं।

नेपोलिय बोनापार्ट की याद में

हम दिन के भोजन के लिए ताजमहल रेस्टोरेंट गए। ज्ञात हुआ कि कोई पंजाबी भाई श्री मल्होत्रा आज से प्रायः दस वर्ष पूर्व ब्रुसेल्स आकर बस गए थे, आजीविका के लिए 'ताजमहल' बना लिया। ताजमहल रेस्टोरेन्ट में शुद्ध भारतीय भोजन मिला, चावल, सब्जी, आलू, गोभी, मटर, गाजर, रायता और अचार आदि। सभी ने ताजमहल के भोजन की प्रशंसा की। बताया गया कि यह भोजन भारतीय अस्सी रुपये का था। वर्षा अब थम गयी है। बाहर मीठी-मीठी हलकी धूप निकल आयी है। बुसेल्स नगर की सड़कों पर कहीं कीच-काच नहीं है, ऐसा लगना है कि हलकी वर्षा से इस नगर का मौसम नहा गया है, कुल मिलाकर वर्षा के बाद का यह मौसम बहुत ही सुहावना हो गया है। हम भोजन के बाद ब्रुसेल्स नगर के दर्शन और परिभ्रमण के लिए निकल गए हैं। ब्रुसेल्स, बेलजियम को राजधानी है।

ब्रुसेल्स के ग्रामीण क्षेत्रों में बड़े-बड़े फार्म हैं, तम्बाकू की खेती बहुत होती है। गेहूँ की फसलें कट रही थीं। हम उस ऐतिहासिक टीले पर चढ़े जिसे वाटर-लू कहते हैं। भूमि की सतह से ४५ मीटर की ऊँचाई पर यह टीला है, जहाँ नेपोलियन पराजित हुआ था। यह 'वाटर लू' बेलजियम का कुरुक्षेत्र है। सारे यूरोप को जीतकर विश्व-विजय की कल्पना करने वाले महत्वाकांक्षी योद्धा नेपोलिन ने १ मार्च १७१५ को फ्रांस की सीमा में प्रवेश किया। एक बड़ी सैन्य-शक्ति उसके साथ हो गयी। वह पेरिस की ओर बढ़ा और फांस का सम्राट बन गया। इस समाचार से यूरोपीय देश स्तब्ध रह गए। रूस, प्रशा, स्पेन आदि कई देश अपने मतभेद भुलाकर उसका सामना करने को तैयार हो गए। फ्रांस पर आक्रमण की योजना बनी। नेपोलियन भी इसका मुकाबला करने को तैयार हो गया और १८ जून १८१५ को इसी 'वाटर-लू' के मैदान में मित्र राष्ट्रों और

नेपोलियन के बीच अंतिम निर्यायक युद्ध हुआ। फ्रांस की सेना भाग खड़ी हुई। नेपोलियन ने आत्म-समर्पण किया। नेपोलियन आत्म-समर्पण के पूर्व इस टीले पर चढ़ गया और उसने गोली मारकर आत्म-हत्या करने का प्रयास किया, लेकिन उसे घेर लिया गया और अतलांतिक सागर के मध्य में स्थित सेन्ट हेलना द्वीप में भेज दिया गया। 'वाटर-लू' के मैदान में ५० हजार से अधिक लोग मरे। वेलजियम, हालैंड आदि सभी देशों ने मिलकर नेपोलियन को पराजित किया। इस टीले पर जाने के लिए २२६ सीढ़ियाँ पार करनी पड़ीं। अपने आवास के लिए नेपोलियन ने जो स्थान वनाया था, वह देखने का संयोग भी मिला। जहाँ वह अपनी सेना रखता था, वह भवन अव म्यूजियम वन गया है। आस-पास की भूमि फार्मों का रूप ले चुकी है। जहाँ गोलियाँ उगती थीं, वहाँ गेहूँ के दाने उग रहे हैं। यहाँ की भूमि ऊँची-नीची है।

मेरे दुभाषिये ने कहा—'इस निर्णायक मोर्चे पर नेपोलियन के ६०० अधिकारी वीर-गति को प्राप्त हुए। सारे यूरोप की विजय करने वाला नेपोलियन ६ वर्ष तक कैदी का जीवन जीता रहा और २ मई १८२१ को उसकी मृत्यु हो गई।'' इस टीले से ब्रुसेल्स नगर का दूर-सुदूर भाग भी दिखायी देता है। यह सामने है—'वाटर-लू' गार्डेन, वेलिंगटन म्यूजियम, डेयरी फार्म। इस डेयरीफार्म की एक गाय देखी, जो प्रतिदिन ३२ किलो दूध देती थी। इस नगर के कई चर्च दर्शनीय हैं। भूमिगत (Under Ground) रेल-व्यवस्था ब्रुसेल्स का अपना प्रवन्ध है।

वेलजियम एक स्वतन्त्र राष्ट्र है। यहाँ तीन पार्टियों की सरकार है—कैथोलिक, सोशलिस्ट और लेवर पार्टी। हम ब्रुसेल्स नगर के परिभ्रमण के वाद शाम को फिर 'ताजमहल रेस्टोरेन्ट' आये, रोटी-दाल सब्जी भोजन किया और आठ वजते-वजते 'डोवर' के लिए प्रस्थान कर गए। मेरे दुभाषिये ने वताया—'सारी रात जहाज पर बीत जायेगी, इसके लिए सभी यात्रियों को तैयार रहने की आवश्यकता है।'' चार घंटे की यात्रा के वाद लगभग बारह वजे रात को

'ओस्टेण्ड-पोर्ट (O-tend Port) पर बसों की लम्बी कतार देखकर चिन्ता हुई। हमारी बस भी कतारों में आ लगी और धीमी गति से बढ़ने लगी। हमारी बस के आगे भी सैकड़ों बसें खड़ी थीं। हमारी बस भी आगे आयी, पोर्ट के समीप हमारा पासपोर्ट माँगा गया। इस पोर्ट पर एक तरफ पासपोर्ट आफिस है, एक तरफ साफ-सुथरी चौड़ी सड़क, सड़क पर सवारियों की भीड़, भीड़ भी ऐसी जो कभी शेष न हो। हमारा पासपोर्ट चेक किया गया। अब हमारी गाड़ी आगे फेरी की ओर बढ़ गयी।

इंगलिश चैनल में

रात को दो बजे हमारी गाड़ी 'इंगलिश चैनल' में खड़े बड़े जहाज के भीतर चली गयी। हम देख रहे हैं—हमारी गाड़ी के जहाज पर आने से पहले अनगिनत गाड़ियाँ, बड़ी और छोटी गाड़ियाँ इस जहाज पर आ गयी हैं, छोटी-छोटी कारें भी जहाज पर कतारों में लगी थीं। यह तीन मंजिल का विशाल जहाज भीतर से देखने पर एक नगर जैसा लग रहा है, ऊपर बैठने के लिए ट्रेन जैसी सीटें गद्दीदार आराम देह, डिलक्स या लक्जरी बसों की सीट से भी अधिक आरामदायक, कई हजार यात्री एक साथ बैठे हुए। जहाज पर सारी व्यवस्था बाथ-रूम, दूकान और बैंक सभी कुछ व्यवस्थित। हमने अपने डालर को चेंज करा लिया। एक पौण्ड २½ डालर के बराबर और एक पौंड का भारतीय बीस रुपये। रात के तीन बज रहे हैं। जहाज हिलकोरे मारकर खुल गया है लेकिन ऐसा कभी अनुभव न हुआ कि यह जहाज चल रहा है। कुछ दूर जाने के बाद 'आस्टेन्ड पोर्ट' की चमकदार बत्तियाँ मद्धिम होने लगीं, जहाँ कुछ देर पूर्व रात को, दिन जैसा दिखायी दे रहा था। हमारा जहाज इङ्गलिश चैनल को पार कर रहा है।

इङ्गलिश चैनल के पार यूनाइटेड किंगडम है, इङ्गलैंड, स्काटलैंड और आयरलैण्ड, इस पार हालैण्ड, जर्मनी, आस्ट्रिया, हंगरी, इटली आदि यूरोपीय देश हैं।

यूनाइटेड किंगडम और अमेरिका के बीच है अटलांटिक सागर, जो सबसे बड़ा समुद्र है। हाँ, तो हम २२ अगस्त १९८० को सवा आठ बजे 'डोवर हार्वर' पहुँच गए। 'डोवर हार्वर' पर भी हमारा 'पासपोर्ट' चेक किया गया। डोवर हार्वर पर कड़ी चेकिंग हुई। कई प्रश्न पूछे गए, जैसे क्यों आये हैं, कितने दिन ठहरेंगे, कहाँ ठहरेंगे. क्या करते हैं ? मैंने सभी प्रश्नों के उत्तर दिए लेकिन इन बेतुके सवालों से तबीयत ऊब गयी। हमें फार्म भरकर देना पड़ा। पासपोर्ट पर मुहर लगायी गयी। साढ़े नौ बजे हम अपनी डिलक्स बस के भीतर बैठ गए। हमारी बस खुली। हम देखने लगे 'यूनाईटेड किंगडम' की भूमि पर कटती हुई गेहूँ की फसलें, हरे-हरे टमाटर के पौधे, कहीं-कहीं पाट-पटसन की खेती। बारह बजते-बजते हम लन्दन पहुँच गए, कुछ क्षणों के बाद सेन्ट्रल सिटी होटल। सेन्ट्रल सिटी होटल का कमरा नम्बर १३३० जो डबल बेड का है. मिल गया है। अब हम अपने कमरे के भीतर हैं।'

चारो दिशाओं में फैला हुआ लन्दन इस्ट, वेस्ट, नार्थ और साउथ फिर सेंट्रल और फिर नार्थ-वेस्ट, इस्ट साउथ दिशा-ज्ञान और संकेत के लिए, अलग-अलग नम्बर फिर मिडिल एक्स जहाँ भारतीय लोग रहते हैं। यह है सेकेण्ड एलिजाबेथ पैलेस, ह्वाइट पार्क कार्नर, वेलिंगडन पार्क, हाइड पार्क, सेकेन्ड चिमेडली सर्कस, विक्टोरिया बैंक एरिया, पिगलिक सर्कस। डाइनिंग स्ट्रीट में सरकारी अधिकारियों के क्वाटर्स हैं। टेम्स नदी लन्दन का सौन्दर्य है। सेन्टपाल चर्च लन्दन के दर्शनीय स्थानों में से एक है जिसमें बेशकीमती संगमर्मर का काम किया हुआ है। ये कीमती पत्थर नयी चमक पैदा करते हैं। चारों ओर सफाई है, आस-पास का वातावरण अत्यन्त स्वच्छ है। टेम्स नदी पर सैकड़ों पुल बने हुए हैं, इस पार से उस पार आवागमन के लिए बस और ट्राम की द्रुत-गामी सेवायें हैं। आज हमने लन्दन के कई दर्शनीय स्थलों के दर्शन किए—हैंगर लेन, वेस्ट—५ का हैंगर हिल पार्क उनमें से एक है।

संचार व्यवस्था लाल-हरी बत्तियों के सहारे होती है। कभी-कभी लाल बत्तियाँ देर तक जलती रहने के कारण हमारी डिलक्स बस काफी समय तक रुक जाती रही और इस प्रकार विलम्ब होता रहा लेकिन ऐसा अक्सर होता नहीं है।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन : लन्दन

आर्य समाज लन्दन की ओर से आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा-सम्मेलन का अधिवेशन, विगत २० अगस्त १९८० को आरम्भ हुआ। भारतीय आर्य प्रति-निधियों की यह टोली २२ अगस्त को लन्दन आयी। इस टोली के साथ १०२ व्यक्ति हैं पहले भी लिखा जा चुका है कि यह यात्रा ट्रेवेल कारपोरेशन ऑफ इण्डिया द्वारा संयोजित है। टी. सी. आई. ने हमारे आवास का प्रबन्ध सेन्ट्रल सिटी होटल, लन्दन में किया है। यह–५ स्टार होटल सम्पूर्ण सुविधा सम्पन्न है। २२ अगस्त की रात इस होटल में ही बीत गयी। आज २३ अगस्त है। हमारी आँखें खुल गयी हैं और हम तैयार हो गये हैं।

आर्य समाज, लन्दन के इतिहास एवं उसकी उपलब्धियों का संक्षेप में लेखा-जोखा यहाँ कर लेना, अप्रासंगिक न होगा।

लन्दन में आर्य संस्कृति के प्रसार का बीजारोपण, सर्वप्रथम उन्नीसवीं शदी के अन्तिम चरण में, महर्षि दयानन्द के निर्देश पर श्री श्यामजीकृष्ण वर्मा के द्वारा हुआ। उसे पल्लवित एवं पुष्पित करने में, लाला लक्ष्मीनारायणजी तथा लाला टेकचन्द आदि कर्मठ आर्यवीरों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी, तब लन्दन में भारतीयों की संख्या नगण्य ही थी। फिर भी हवन-भजन वेदोच्चार का क्रम अभंग बना रहा। आर्यसमाज की विधिवत स्थापना के प्रयत्न विशेष सफल नहीं हो पा रहे थे। 'हिन्दू एसोसिएशन ऑफ यूरोप' नामक एक संस्था बनी, जिसमें आर्यसमाज के साथ ही सनातन धर्म का भी योगदान रहा। डा० धर्मशील चौधरी,

पंडित ऋषिरामजी आदि अनेक आर्य बन्धुओं ने वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के अनथक प्रयत्न किये। 'हिन्दू सेंटर' के तत्वावधान में, श्री फकीरचन्दजी सोती ने आर्यधर्म एवं संस्कृति के प्रसार के निमित्त जो भगीरथ प्रयत्न किये, वे भुलाए न जा सकेंगे।

अन्ततः १९७० में 'वैदिक मिशन' की स्थापना हुई और महर्षि दयानन्दजी तथा श्यामकृष्णजी वर्मा का; लन्दन में आर्यसमाज की स्थापना का स्वप्न साकार हुआ। इस 'वैदिक मिशन' ने वर्त्तमान आर्यसमाज का रूप ग्रहण कर लिया। अब तो लन्दन में आर्यसमाज का अपना भव्य भवन है। सुनिश्चत व्यवस्था है।

होटल से तैयार होटर निश्चित समय पर हम आर्यसमाज-भवन (जो 'वन्देमातरम् भवन, के नाम से विख्यात है) आ गये। आज के कार्य-क्रम आरम्भ हो गए थे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि-सभा, दिल्ली के उपप्रधान श्रीवीरेन्द्रजी ने ध्वजारोहण किया। झण्डोत्तोलन के पश्चात् श्रीवीरेन्द्रजी ने लन्दन आर्य-समाज के गठन की चर्चा करते हुए कहा—'एक दशक से अधिक हुए यहाँ के 'टाइम्स' ने समाचार प्रकाशित किया, जिसके अनुसार किसी आर्य समाजी आदेश-पाल की मृत्यु और उसकी दाह-क्रिया का उल्लेख किया गया। यह संस्कार यहाँ के आर्य समाज ने किया। इस समाचार से लन्दन के भारतीय बहुत प्रभावित हुए। आर्य-समाज के प्रति भावना प्रबल हो उठी और 'कृण्वन्तु विश्वार्यम्' का सन्देश देने के लिए आर्य-समाज का गठन किया गया। लन्दन की भूमि पर आर्य-समाज का विधिवत् संगठन दस वर्ष पहले हुआ है ·· ····।"

पूर्णाहुति और प्रार्थना-भजन आदि के कार्यक्रम सम्पन्न हुए। कई बच्चों और बच्चियों ने हिन्दी और अंग्रेजी के माध्यम से अपने विचार व्यक्त किये। यह मनोरम कार्यक्रम मेरे मस्तिष्क पर अमिट स्मृतियाँ छोड़ गया।

अमेरिका से पधारे प्रतिनिधि डॉ० वेदभूषण भारद्वाज ने अपने संक्षिप्त भाषण के माध्यम से एक अत्यन्त उपयोमी सूत्र प्रस्तुत किया—'हम चाहे किसी भी देश को जाँय लेकिन अपनी संस्कृति अपना संस्कार जीवित रखने का प्रयास करें।'

दोपहर के वाद योग प्रदर्शन का कार्यक्रम आरम्भ होने से पूर्व गायत्री-जप और पश्चात् 'ओ३म् जप और' 'आनन्दोहं आनन्दोहं आनन्दम् ब्रह्मानन्दम्' का पाठ सम्पन्न किया गया फिर उगान्डा से आये हुए प्रतिनिधियों ने योग का सफल प्रदर्शन किया। सन्ध्याकाल तक सारे कार्यक्रम सफलता पूर्वक संचालित हुए। आज के अधिकांश कार्यकमों का संचालन श्रीइन्द्रनाथजी ने किया। इन सारे समारोहों ने आगत प्रतिनिधियों को प्रभावित किया। योग-क्रियाओं के प्रदर्शन के निमित्त मेरा भी नाम था, लेकिन समयाभाव के कारण वह संभव न हुआ।

हम कुछ देर के लिए लन्दन के वन्देमातरम् भवन के भीतर चलें और लन्दन को अपनी भारतीय आँखों से देखने का प्रयास करें—लन्दन। लन्दन एक महानगर, भारतीय जनता के लिए चिर-परिचित नगर! भारतीय इतिहास के साथ जिसका साधारण सापरिचय भी है, वह इस महानगर से अपरिचित नहीं है।

लन्दन, बिटिश साम्राज्य की राजधानी जहाँ कभी साम्राज्यवाद की पताका लहराती थी। साम दाम भेद और विभेद के बल पर इङ्गलैड अनेक देशों पर शासन करता था। कुछ ही वर्षों पूर्व तक लन्दन महानगर, ब्रिटिश साम्राज्य की राजधानी के रूप में आधी दुनिया पर अपने प्रमुत्व की विजय पताका फहराता था। अब तो संसार की स्वातंत्र्य जनता ने उपनिवेशवाद नकारा बना दिया है।

आज भी जब सामान्य अनपढ़ अबोध भारतीय के सामने कभी लन्दन का नाम लिया जाता है, तो वह उसे सात समुन्दर पार स्थित एक महानगरी बताता है। इसी लन्दन महानगरी से सन् १९४७ ई० तक, भारत का शासन-तन्त्र चलाया जाता रहा। इस महानगरी से ब्रिटिश साम्राज्यवाद संकेत करता था और यहाँ बैठे उसके प्रतिनिधि शासन-तन्त्र का संचालन करते थे। एक भव्य आकर्षक नगरी गगन चुम्बी अट्टालिकायें····। लन्दन की यही कल्पना मेरे भीतर थी। लन्दन को लेकर जो कुछ पढ़ा था, वही मेरी कल्पनाओं का आधार था। इतिहास कहता है कि लन्दन के क्रोमवेल रोड पर स्थित एक आलीशान भवन जिसे 'इण्डिया हाउस' कहा जाता था, एक अविस्मरणीय अध्याय भारतीय क्रांति के इतिहास

का। इण्डिया हाउस के भीतर अनेक भारतीय विद्यार्थी ब्रिटिश साम्राज्यवाद से मुक्त होने के लिए क्रान्तिकारी योजनायें बनाया करते थे।

लन्दन की भूमि पर पाँव रखते ही मेरी आँखों में झूल गयी थी अमर शहीद मदन लाल धींगरा की तस्वीर, विस्मयकारी रोमांचक चित्र। किसी कर्नल वाइली ने भारतीय विशेषतया पंजाब के लोगों पर कातिलाना हमले किये थे, जिनका बदला लिया अमर शहीद मदनलाल धींगरा ने। १ जुलाई १९०९ को इण्डियन नेशनल एसोसियेशन की वर्ष-गाँठ आयोजित की गयी थी—इम्पेरियल इन्स्टीच्यूट भवन में। जैसे तो कर्नल वाइली बोलने के लिए खड़े हुए कि धाँय-धाँय गोलियाँ उनकी छाती को छलनी कर गयीं। मेरी लन्दन-यात्रा के समय यह शौर्य-गाथा निरन्तर अभिभूत करती रही। मेरी आत्मा चिन्तन करती रही। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन के इस ऐतिहासिक अवसर पर अमर-शहीद मदन लाल धींगरा की छाया के दर्शन होते रहे।

हमारा इतिहास साक्षी है कि आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द के स्वनामधन्य शिष्य श्रीश्यामजी कृष्ण वर्मा ने मदनलाल धींगरा द्वारा कर्जन वाइली का संहार किये जाने के बाद कहा था—'मैं यह स्पष्ट रूप से स्वीकार करता हूँ कि मदन लाल धींगरा भारतीय स्वाधीनता-संघर्ष की राह में एक ऐसा शहीद है, जिसे कभी भुलाया नहीं जायेगा। मेरी यह धारणा है कि राजनैतिक हत्या, हत्या नहीं कही जा सकती····।' लन्दन की भूमि पर याद आने लगा पंजाब के जालियाँ वाला बाग का नृशंस नर संहार, जिसका नियन्ता था, पंजाब का गवर्नर सर माइकेल ओडवायर जिसने जेनरल डायर को पंजाब का प्रशासक नियुक्त किया लेकिन जेनरल डायर को धूल चटा दी सरदार ऊधम सिंह सुनामो की गोलियों ने। लन्दन के इतिहास में भी इन साहसिक घटनाओं का उल्लेख आया है। विदेश के पत्रों ने भी इन संकल्पी भारतीय पुत्रों की सराहना की।

एक समय था, जब लन्दन में 'वन्देमातरम्' के उच्चारण पर कैद की सजा सुनायी जाती थी और हमारा तिरंगा झंडा अंग्रेजों को सिहरा देता था। वह समय
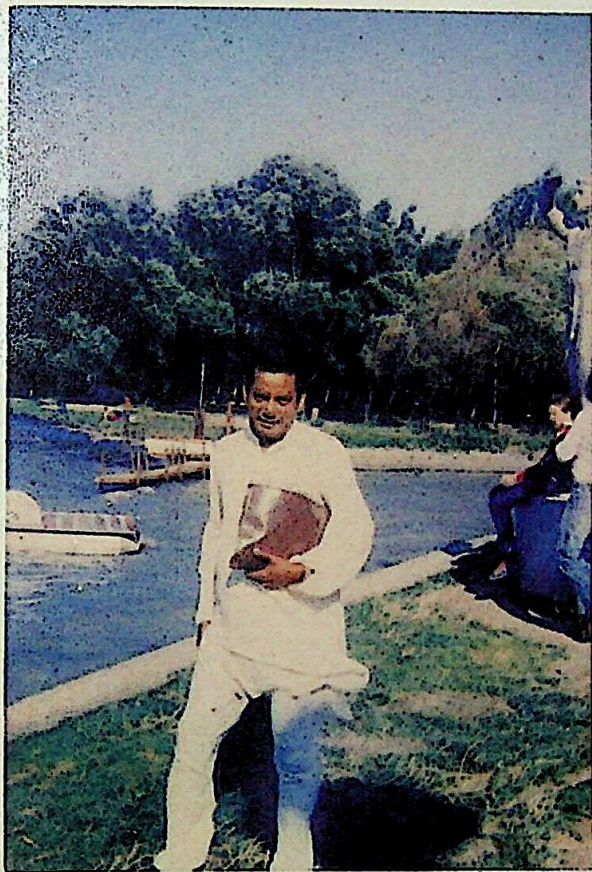
लेखक : आस्ट्रीया जाते हुए मार्ग में तिजारत लेक के पास

बीत गया है। हमारे बलिदान की थाती हमारी स्वाधीनता का परिणाम है लन्दन की भूमि पर अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन का आयोजन। वही लन्दन जहाँ जगह-जगह ईसा और मरियम की प्रतिमायें स्थापित हैं, वहीं एक स्थान पर 'वन्देमातरम् भवन।' लन्दन के प्रवासी भारतीय आर्यसमाज के प्रति समर्पित कर्मठ कार्यकर्ताओं में से एक श्रीसुरेन्द्रनाथ भारद्वाज ने एक भवन खरीदकर आर्य-समाज, लन्दन को अर्पित कर दिया है। यह भवन अर्गाइल रोड (वेस्ट इलिंग) पर स्थित है, जहाँ एक ओर ओइम् की ध्वजा है, दूसरी ओर हमारा राष्ट्रीय-ध्वज फहरा रहा है। इस भवन के भीतर महर्षि दयानन्द सरस्वती स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज तथा श्रीहंसराजजी के विशाल तैल-चित्र लगे हैं। कहते हैं पहले यह कोई गिरजा घर था! इस स्थल पर ब्रिटिश सरकार की धर्म-निरपेक्षता की प्रशंसा की जानी चाहिए, शायद कोई और देश होता तो कई प्रकार की कठि-नाइयाँ उपस्थित होतीं। लेकिन ऐसा लगता है, लन्दन की जनता सभी धर्मों और सम्प्रदायों के प्रति समान आदर-भाव रखती है। हमारी राष्ट्रीय धर्म निरपेक्षता की नीति बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रही है। यह सत्य भी स्वीकार किया जाना चाहिए....। यह 'वन्देमातरम् भवन' लन्दन के भारतीय मूल के लोगों के लिए मिलते-जुलते रहने के लिए एक प्रमुख केन्द्र बन गया है। इस भवन के भीतर आत्मा को सुख मिलता है, शांति मिलती है, ऐसा अनुभव मुझे हुआ कि इस वन्दे-मातरम्—भवन के भीतर अमर-शहीद मदन लाल धींगरा और सरदार ऊधम सिंह सुनामी की आत्मा भटक रही है, जिसकी प्रतिध्वनि आती है—'कृण्वन्तु विश्व.र्यम्—'

'कृण्वन्तु विश्वार्यम्' के महान् उद्देश्य के साथ आज के कार्यक्रम की विशेषता थी पूर्णाहुति के पश्चात् आर्य-बन्धुओं की ओर से समर्पित दक्षिणा। आर्य-बन्धु दक्षिणा की राशि बन्द लिफाफे के भीतर रखकर एक थाल में रखते जाते थे। केनिया आर्य समाज (अफ्रीका) की भूतपूर्व प्रधान श्रीमती वेदवती सोफत ने आर्य समाज लन्दन को पाँच हजार एक पौंड का दान दिया। पंजाब नेशनल बैंक

की ओर से ५०० पौंड का दान दिया गया। श्रीमती वेदवती नैरोबी, अफ्रीका की ओर से दो हजार एक पौंड का दान समर्पित कर चुकी हैं। आर्य समाज नैरोबी के ४० प्रतिनिधियों ने भाग लिया। अमेरिका, दक्षिण अफ्रीका, मारीशस ट्रिनीडाड सुरीनाम के प्रतिनिधियों ने सम्मिलित होकर सम्मेलन को सफल बनाया। विभिन्न टोलियों में भारत के ३०० प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। सारे कार्यक्रम विधिवत् सम्पादित और संचालित होते रहे। दोपहर का भोजन प्रबन्ध आर्य-समाज, लन्दन की ओर से किया गया पुलाव, सब्जी, सलाद। रात को ९ बजे तक कार्यक्रम चलता रहा। यह समारोह मेरे जीवन के लिए अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है कि एक साथ विश्व के कोने-कोने से पधारे प्रतिनिधियों, विद्वानों और मनीषियों का सम्पर्क सानिध्य प्राप्त हुआ। हम रात को ग्यारह बजे तक सेन्ट्रल सिटी होटल आये, रात्रि विश्राम किया।

आज दिनांक २४-८-८० को बहुत सवेरे तैयार हुआ, लेकिन समारोह स्थल पर अपने निश्चित डि-लक्स कोच से न जा सका इसलिए कि हमने श्री विष्णु जी भरतिया को सेन्ट्रल सिटी होटल में १० से ११ बजे के बीच का समय दिया था। श्री विष्णु जी भरतिया ठीक ११ बजे सेन्ट्रल सिटी होटल अपनी कार से आ गये। हम परस्पर मिले। उनके लिए हम दिल्ली से अचार और अमावट लाये थे, अपने आवास को ओर जाते समय मुझे भी साथ ले गए और मुझे आज के सभा-स्थल 'हैरो लीजर सेण्टर (Harrow Leisore Center) के वायरन हॉल (Byran Hall) पर छोड़ दिया। यह सम्मेलन स्थल हमारे सिटी होटल से बीस मील से भी अधिक दूरी पर है। यहाँ डेढ़ घण्टे से अधिक समय लगा आने में। प्रत्येक चौराहे पर लाल बत्ती देर तक जलती रह जाती और हमें रुकना पड़ जाता। कहीं भी ट्राफिक पुलिस नहीं। सारा सञ्चालन विद्युत द्वारा स्वचालित।

आज के कार्य-क्रमों में विशिष्ट कार्य-क्रम था—सर्व-धर्म सम्मेलन! इस सम्मेलन में विभिन्न धर्मों के वक्ताओं ने अपनी ओर से हिन्दू, बहाई धर्म, क्रिश्चियन,

इस्लाम, बौद्ध, सिख आदि भिन्न-भिन्न धर्मों और सम्प्रदायों पर अपने विचार प्रस्तुत किये। इस सभा का संचालन आर्य समाज लन्दन के प्रधान प्रो० एस० एन० भारद्वाज और अध्यक्षता दिल्ली विश्वविद्यालय के भूतपूर्व डीन श्री शांति नारायण ने की। इस सम्मेलन के मुख्य अतिथि लंदन स्थित भारत के उच्चायुक्त डॉ० एल० पी० सिंह का भाषण बहुत ही सुरुचिपूर्ण था। वेद-मंत्रों और भगवत् गीता के के उद्धरण देकर भारतीय संस्कृति की व्याख्या करने की श्री एल० पी० सिंह की शैली अत्यन्त ही प्रभावशाली प्रभाव छोड़ गयी। हिन्दू धर्म पर कलकत्ता के प्रोफेसर उमाकान्त उपाध्याय, वैदिक धर्म को लेकर प्रो० शेरसिंह (भूतपूर्व रक्षा राज्य मंत्री, भारत सरकार) ने आर्य धर्म और संस्कृति का सारगर्भित विवेचन प्रस्तुत किया। सायंकाल कला सम्मेलन की अध्यक्षता ब्रिटेन की सुप्रसिद कलाकार श्री मती शीला मार्कण्डेय ने की और संचालन आर्य समाज लंदन के उप प्रधान श्री के० डी० प्रिजा ने किया। इस समारोह को पूर्ण सफलता की ओर ले जाने वाले कलाकारों में कुमारी सुप्रभापुरी, श्री मती सुवर्ण शर्मा, कुमारी साधना छुटाई और बम्बई संगीत महाविद्यालय की श्रीमती शिवराजवती के नाम विशेषरूप से उल्लेखनीय हैं।

आज हम काफी रात बीत जाने के बाद सेन्ट्रल सिटी होटल वापस आ सके। मेरी विदेश यात्रा की यह पहली रात है, जब मुझे एक बजे रात को नींद आयी फिर भी किसी प्रकार की थकान नहीं, कोई दिक्कत नहीं। हमारी रात आराम के साथ बीत गयी। इस अन्तर्राष्ट्रीय अधिवेशन की महान उपलब्धि मेरे दृष्टि कोण से है—श्री सत्युकेतु विद्यालंकार द्वारा लिखा जाने वाला 'आर्य समाज का इतिहास, इस महान कार्य की पूर्णता के लिए आर्य समाज, लंदन की ओर से पाँच हजार एक पौंड का दान मिला। अन्य देश के प्रतिनिधि आर्य-बन्धुओं ने आर्य समाज के इतिहास के लेखन-प्रकाशन के लिए दान देने की घोषणा की। यह कार्य निश्चय ही आर्य-समाज के लिए एक महान ऐतिहासिक कार्य होगा। यह इतिहास हमारी आने वाली पीढ़ी को प्रभावित करेगा, अनुप्रेरित-प्रेरित करेगा।

सार्वभौम आर्य महासम्मेलन

आज सोमवार २५ अगस्त १९८० है। आज भी काफी रात तक जागने के बावजूद हम सुबह उठ गये और आठ बजते-बजते 'हैरो' के अधिवेशन स्थल के लिए प्रस्थान कर गए। आज अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन का अन्तिम दिन है। अन्तिम कार्य-क्रम है—'सार्व भौम आर्य महासम्मेलन'। इस मंच से वैदिक संस्कृति सभ्यता के प्रचार-प्रसार की दिशा में विचार हुआ तथा अनेक आवश्यक तथा उपयोगी प्रस्ताव पारित किए गए। प्रस्तावों में मुख्यतः आर्य समाज के दस नियमों के पालन तथा विश्व-नागरिकता की मान्यता में विश्वास, विश्व-शांति तथा मैत्री के लिए धर्मार्य सभा, राज्यार्य सभा की स्थापना, मानव-कल्याण के लिए विश्व-धर्म का सहयोग, सत्य धर्म के प्रचार के लिए मनु के दस नियम, धर्म के दस लक्षण, यम नियम के अष्टांग-योग-पालन आदि को प्रमुखता प्रदान की गयी। प्रवासी भारतीय बन्धुओं की सुविधा के साथ ही अपनी सांस्कृतिक परम्परा को रक्षा का आवाहन किया गया। वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार की योजना को कार्यान्वित करने से सम्बन्धित कई प्रस्ताव पारित किए गए। विश्व के भारतीयों के संगठन एवं उनमें सांस्कृतिक चेतना लाकर मानव-कल्याण की दिशा में प्रयास करने की योजना बनायी गयी। आर्य ससाज ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर निरन्तर प्रयास करते रहने का निर्णय लिया। इस प्रकार इस मंच से चौदह महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित किए गए।

अंतिम दिन के सार्वभौम आर्य महासम्मेलन की अध्यक्षता पंडित सत्यदेव भारद्वाज ने की और इस समारोह का संयोजन श्री जे. आर. शर्मा ने किया। वन्देमातरम् और शांति पाठ से अधिवेशन का समापन किया गया। समारोह की समाप्ति के पश्चात भोजन और फिर डिलक्स-वस से सेन्ट्रल सिटी होटल वापस। रात को कई लोगों को निजी पत्र लिखे और कई समाचार पत्रों के लिए संवाद प्रेषित किये।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के लन्दन अधिवेशन से मेरे प्राणों को संकल्प मिले, अनुभव प्राप्त हुए, अनुभूतियाँ मिलीं। देश-विदेश के भारतीय महापुरुषों के साथ सम्पर्क सानिध्य के संयोग सुलभ हुए। विभिन्न देशों के लगभग ४०० प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

लन्दन : मेरी नजरों में

लन्दन ब्रिटेन की राजधानी और संसार का दूसरा बड़ा नगर है। तोकियो के बाद लन्दन का नम्बर आता है। रोमन साम्राज्य के युग में लन्दन टेम्स नदी के किनारे बसा एक छोटा-सा गाँव था। इसका नाम था–लंदिनियम। नार्मन युग में राजधानी बन जाने के बाद तेजी के साथ लन्दन विकसित हुआ। आज लन्दन की भूमि पर विश्व राजनीति की अहम् भूमिका निभायी जाती है। लन्दन विश्व का सबसे बड़ा बन्दरगाह भी है, इसलिए कि ज्वार का पानी टेम्स नदी में काफी दूर तक आ जाता है, जिससे बड़े-बड़े जहाज यहाँ तक सुविधा के साथ पहुँच सकते हैं।

आज २६ अगस्त १९८० है। आज बहुत सवेरे उठा। पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार सारे लन्दन नगर के भ्रमण की योजना है। हम सात बजते-बजते तैयार होकर जलपान के बाद बस पर सवार हो गए। थोड़ी ही देर बाद हमारे सामने था—विक्टोरिया पैलेस फिर थोड़ा आगे बढ़ने पर 'वैक्स म्यूजियम मैडम फुसौड (Madames of Fussaud) की बनायी मोम की अनेक मूर्तियाँ सुरक्षित हैं। इस म्यूजियम के भीतर अनेक देशों के देश-भक्तों की मूर्त्तियाँ रखी हुई हैं। यहाँ महात्मा गाँधी की मूर्त्ति भी है लेकिन सबसे पहले स्वयं मिस फुसोड की मूर्त्ति स्थापित है। सारी मूर्त्तियाँ मोम की बनी हैं लेकिन मूर्त्ति-कला की दृष्टि से ये मोम की मूर्त्तियाँ अद्वितीय हैं। इस 'वैक्स म्यूजियम' की शोभा-वृद्धि करती

हैं, कुछ प्राचीन इतिहास की आत्मा की रक्षार्थ बनी मूर्त्तियाँ। एक मूर्त्ति के द्वारा यह बताया गया है कि १६ वीं शती में कैसे कुल्हाड़ी मार कर या गर्दन काटकर फाँसी दी जाती थी। यह मूर्त्ति सहसा प्राणों को सिहरा देती है। ये सारी मूर्त्तियाँ जैसे बोलती हुई मूर्त्तियाँ हैं। इस भवन के साथ हैं आकाश के नक्षत्रों की जानकारी देने वाला प्लानटेरियम। अपने यहाँ कलकत्ता और नैनीताल में भी प्लानटेरियम बन गया है।

और यह है लन्दन टावर म्यूजियम, जहाँ हमारा कोहेनूर हीरा सुरक्षित है, जिसे कभी पंजाब के राजा रणजीतसिंह ने अंग्रेजों को दे दिया था। लन्दन अपने विशाल भवनों के साथ ही महत्वपूर्ण ऐतिहासिक इमारतों के लिए प्रसिद्ध है। हम देख रहे हैं सिटी स्टेशन, लॉ-कोर्ट, सेन्ट्रल लॉ-कोर्ट, आस्ट्रेलिया हाउस, ट्रैफेलगर स्क्वायर, संसद भवन (पर्लियामेंट हाउस) वेस्ट मिनिस्टर ऐबी नामक प्रसिद्ध चर्च आदि यहाँ के दर्शनीय स्थान हमने देखे। यह है बकिंघम पैलेस, जहाँ र ज-परिवार रहता है। लन्दन का ब्रिटिश संग्रहालय संसार का सबसे महत्वपूर्ण संग्रहालय है। यहाँ ऐतिहासिक महत्व की मूल्यवान सामग्रियाँ और पुस्तकें सुरक्षित हैं। लंदन के दर्शनीय स्थानों में से एक है – क्वीन लाइफ गार्ड्स् हाउस, जहाँ रानी की सुरक्षा के लिए घुड़सवार हमेशा तैयार रहते हैं। जेन्सन पैलेस, साइन्टीस्ट हाउस, अकाडमी म्यूजियम, रिजन पार्क, जू-पार्क, छः सौ फीट ऊँचा टेलीविजन टावर आदि देखने का अवसर मिला। सामने जेन्सन्स स्ट्रीट है, जहां लंदन के धनी लोग रहते हैं। हमने देखा, वोकली स्क्वायर, माउण्टस्ट्रीट, ऑक्सफोर्ड स्ट्रीट। हमारी डिलक्स-कोच लन्दन के मुख्य मार्गों से होकर गुजर रही है, हम देख रहे हैं ट्रैफल्गार स्क्वायर का नेल्सन स्मारक अनेकों म्यूजियम अनेक चर्च और यह है साउथ हॉल, जहां इण्डियन मार्केट भी है। यहां भारतीय अधिक रहते हैं, पंजाब से आये सरदारों को अच्छी-खासी बस्ती यहां देखी जा सकती है।

अब हमारे सामने है टेम्स नदी पर बना लेम्ब्रेथ ब्रिज। समुद्र का पानी आते ही यह ब्रिज २१ फीट ऊपर उठ जाता है, पानी कम होते ही अपने स्थान

पर आ जाता है। टेम्स नदी के आर-पार जाने के लिए एक नहीं अनेक ब्रिज वने हुए हैं, जिनके ऊपर से बस, ट्राम और कारें गुजरती हैं। पूरे लन्दन नगर के नीचे अन्डर-ग्राउण्ड ट्रेन हैं, जो चार मंजिल नीचे चलती है, जिन्हें ट्यूब रेलवेज कहा जाता है। यहाँ की व्यवस्था आटोमेटिक अवश्य है, लेकिन टिकट-काउण्टरों पर बुकिंग क्लर्क रहता है, चार्ट देखकर स्थान का नाम बोलिए, फिर टिकट लीजिए। यहाँ कई प्रकार के टिकट मिलते हैं—एक टिकट जाने के लिए, जिसे सिंगिल टिकट, दूसरा जाने और आने के लिए डे-टिकट और तीसरा नजदीक स्टेशनों के टिकट जाना और आना, यहाँ दिन भर की यात्रा के लिए चीप-डे-टिकट, फिर एक सप्ताह के लिए विकली टिकट का प्रचलन और प्रावधान है। लन्दन की ट्यूब रेलवे सर्विस का भूमिगत जाल-सा विछा हुआ है। ऊपर दो मंजिला वसें चला करती हैं, जिन्हें डवल वेकर वस कहते हैं।

हमारी डिलक्स कोच वारह वजे तक लन्दन के विभिन्न स्थानों, प्रमुख ऐतिहासिक स्थानों का चक्कर काटती रही और उसके वाद हमें फिर सेन्ट्रल सिटी होटल छोड़ गयी। अव हम भोजन के लिए किसी शाकाहारी रेस्टोरेन्ट की तलाश करने निकल पड़े। वहुत प्रयास के वाद एक शाकाहारी होटल मिला, जहाँ हमने भोजन (लंच) किया। इस शाकाहारी होटल का हिसाब इस स्थल पर लगा देना आवश्यक है—चावल–१२।-दाल–८।- एक रोटी–३।-फ्रुट सलाद ८।-पापड़–३। कुल मिलाकर ५०'-का साधारण भोजन। यह लेखा-जोखा लन्दन शहर के एक साधारण होटल का है। यहाँ यह कह देना अप्रासंगिक न होगा कि लन्दन के सभी होटलों का यह रेट नही है। व्यवस्था और स्तर के अनुसार ही मूल्य है।

भोजन के वाद हम कई स्थलों की यात्रा करते रहे और फिर वेस्टेन्ड स्टेशन से एक नम्वर प्लेटफार्म होकर ट्यूब सर्विस से दूसरे स्टेशन के एक नम्बर प्लेट-फार्म से ही ट्रेन पर सवार हुए और आयस्टन (Euston) स्क्वायर स्टेशन पर उतर गए, फिर यहाँ से तीसरी ट्रेन पकड़कर 'बेकर स्ट्रीट स्टेशन गए। यह

भूमिगत ट्यूब सर्विस नीचे है और ऊपर है लन्दन शहर, लन्दन की सड़कें, सड़कों पर दौड़ती हुई, बस, ट्राम और अन्य सवारियाँ।

हमारे यहाँ बिजली का तार, ट्रेन या ट्राम के ऊपर लगा होता है, लेकिन यहाँ कहीं भी ट्रेन के ऊपर बिजली का तार दिखायी नहीं देता। कुछ इस प्रकार बना हुआ कि दो लाइन बीच में है, जिस पर गाड़ी चलती है और अगल-बगल से बिजली के तार लगे हुए हैं, ऊपर बिलकुल साफ-सुथरा, लेकिन कहीं भी बिजली का तार या कनेक्सन दिखायी नहीं देता। सेन्ट्रल सिटी होटल के निकट ओल्ड स्ट्रीट स्टेशन (Old Stréet Station) से 'ऑक्सफोर्ड मार्केट' जाने के लिए 'वौन्ड स्ट्रीट स्टेशन' जाना होता है तथा 'वैक्स वर्क्स म्यूजियम' जाने के लिए 'बेकर स्ट्रीट स्टेशन' जाने के लिए ८० पेन्स का चीप-डे टिकट लिया। ओल्ड स्ट्रीटस्टेशन से बेकर स्ट्रीट स्टेशन तक का वापसी टिकट का ८० पेन्स निर्धारित है, जिसका भारतीय १६। रुपये होता है। यहाँ से कम से कम ६० पेन्स का टिकट और अधिक से अधिक ढाई पौन्ड मतलब भारतीय ४० या ५० रुपये देकर शहर के भीतर दस मील तक जाकर वापस आया जा सकता है। लन्दन में यह भाड़ा सबसे सस्ता है, टैक्सी से बहुत लग जाता है। यहाँ एक पौन्ड तात्पर्य भारतीय बीस रुपये का कोई महत्व, कोई मूल्य नहीं है।

हम ऑक्सफोर्ड मार्केट स्टेशन देखने गये, जहाँ पाँच से सात मंजिल की दूकानें हैं, हर एक मंजिल पर अलग-अलग काउण्टर, तरह तरह के सामान। संसार की ऐसी कोई सामग्री नहीं है, जो यहाँ नहीं मिलती। काफी देर घूमने के बाद हम सेन्ट्रल सिटी होटल वापस आ गए। रात को ९ बजे भोजन किया, विश्राम किया।

आज हमारे लन्दन-प्रवास की अन्तिम तिथि २७ अगस्त १९८० है। प्रातः सात बजते ही तैयार होकर ब्रेड-बटर-चिप्स और चाय से बाद हम शहर की ओर चले। बस एक ही दिन बच गया है बाजार के लिए या कुछ और घूमने के लिए। कल हमारी डिलक्स-कोच फ्रांस के लिए चल देगी। हमने ऑक्सफोर्ड स्ट्रीट के 'जॉन लेविस' (John Lewes) नामक संस्थान तक जाने के लिए 'ट्यूब

सर्विस' का सहारा लिया। सेन्ट्रल सिटी होटल से लन्दन तक के किसी क्षेत्र में जाने के लिए मुझे रूट का ज्ञान हो गया है। आज हम आसानी के साथ ऑक्सफोर्ड स्ट्रीट आ गये। 'जॉन लेविस' के समीप ही एक और प्रसिद्ध फर्म है—'डी. एच. एवन' (D. H Avan) इनके विशाल भवन अत्यन्त ही दर्शनीय हैं। संसार की किसी प्रकार की सामग्री के लिए ये संस्थान, ये फर्में सक्षम हैं, आप जो भी चाहें ले सकते हैं। हमने निजी उपयोग के लिए थोड़े सामान लिए।

अब हम 'बौन्ड स्टेशन' से पिकाडिली सर्कस स्टेशन उतर कर समीप के 'सोहो' (Soho) नामक सिनेमा गृह के पास आए लेकिन इस छवि-गृह के पास आते ही सामने लगे चित्रों को देखकर लगा कि यहाँ नग्न-चित्र-प्रदर्शन करने वाले अनेक सिनेमा घर हैं, जिन्हें 'सेक्स' सिनेमा कहा जाता है, टिकट ढाई पौण्ड के, समय डेढ़ घंटे का। अनुमान किया जा सकता है ढाई पौण्ड का भारतीय पचास रुपया होता है। जाने क्या बात है यहाँ काफी लोग इन नंगे चित्रों को देखने के लिए जुटते हैं। कोई भद्र आदमी इन वीभत्स चित्रों को देख नहीं सकता। हाँ, हमने एक दूसरी चित्रावली अवश्य देखी, जिसका टिकट-दर था ५० पेन्स (दस रुपये भारतीय) ये चित्र हमने अनुभव और जानकारी के लिए देखे। एक केबिन के भीतर सिक्का डालने के लिए छिद्र बना हुआ था। पचास पेन्स का एक सिक्का डालते ही टेलीविजन के समान चित्र दिखायी देने लगा, लेकिन पाँच मिनट के बाद ही अपने आप बन्द हो गया। मेरे दस रुपये पाँच मिनट के भीतर समाप्त हो गए। लन्दन के लिए दस रुपये की कोई कीमत, कोई बिसात नहीं। यहाँ सिनेमा के टिकट ४५ या ५० रुपये से कम नहीं, कहीं-कहीं सौ रुपये के टिकट भी हैं लेकिन यह लन्दन है—ग्रेट ब्रिटेन की राजधानी, ग्रेट ब्रिटेन का पूरा नाम है—'द यूनाइटेड किंगडम ऑव ग्रेट ब्रिटेन एण्ड नॉर्दर्न आयरलैंड। यह यूरोप महाद्वीप के उत्तर-पश्चिम की दिशा में ब्रिटिश द्वीप समूह में स्थित है। ग्रेट ब्रिटेन में इङ्गलैंड, स्काटलैण्ड, और उत्तरी आयरलैंड सम्मिलित हैं। इङ्गलैंड ग्रेट-ब्रिटेन द्वीप के अधिकांश दक्षिणी भाग में फैला हुआ है। इङ्गलिश चैनल और उत्तरी सागर इंगलैंड को यूरोप महाद्वीप से अलग करते हैं।

लन्दन यात्रा के समय हमें उन स्थानों को भी समीप से देखने का अवसर मिला, जहाँ हिटलर ने बमबारी की थी। कहा जाता है कि फ्रांस के पतन के बाद हिटलर की खूनी दृष्टि ब्रिटेन पर गयी। जर्मनी के बमवर्षक विमान लन्दन पर बमबारी करने लगे। सितम्बर से दिसम्बर १९४० तक प्रतिदिन सैकड़ों जर्मन हवाबाज बमबारी करते रहे लेकिन प्रधान मन्त्री चर्चिल का संकल्प पराजित न हुआ। इस अवधि के भीतर एक लाख नव्वे हजार बम लन्दन पर गिरे, चालीस हजार से अधिक लोग मौत की घाट उतर गए लेकिन लन्दन की शाही वायु-सेना ने हिटलर के पाँच हजार विमानों को मार गिराया। इस प्रकार हिटलर ग्रेट-ब्रिटेन को पराजित न कर सका और ब्रिटेन पर हिटलर का स्वस्तिका फहराने का संकल्प पूरा न हुआ। इस युद्ध के बाद सर विन्स्टन चर्चिल ग्रेट ब्रिटेन के इतिहास का उल्लेखनीय व्यक्तित्व बन गया। लन्दन के लोगों ने जिस धैर्य-शौर्य का परिचय दिया, वह अलौकिक था।

लन्दन प्रवास की यह अन्तिम सन्ध्या नगर का भ्रमण-दर्शन के साथ बीत गयी और हम काफी रात गए सेन्ट्रल सिटी होटल वापस आ सके।

लन्दन से पेरिस की ओर

आज २८ अगस्त १९८० है। अचानक टेलीफोन से रिंग होने लगा कि मेरी आँखें खुलीं, घड़ी की ओर देखा तो चार बजा रही थी। यह सूचना रात को ही दे दी गयी थी कि ६ बजे प्रातः पेरिस के लिए प्रस्थान करना है। दैनिक कार्य से निवृत्त होकर रेस्टोरेण्ट की मेज पर आ गया। चाय-जलपान के बाद ७ बजते-बजते हम बस पर सवार हो गए लेकिन सेन्ट्रल सिटी होटल की तस्वीर मेरे सामने नाचती रही। यह प्रथम अवसर था, जब मुझे टेलीफोन से रिंग करके जगाया गया।

हाँ तो हमारी बस आठ बजते-बजते खुल गयी, डोवर हार्वर बोर्ड फेरिज होकर 'केलीसपोर्ट' (Callis port) से पेरिस जाने के लिए। पहले 'डोवर पोर्ट' पर पास-पोर्ट आदि दिखाने के लिए बस रुकी। हमारे पास पोर्ट चेक किए गए और हमारी बस आगे बढ़कर कतारों में जा लगी, जहाज पर चढ़ने के लिए। आगे बढ़ने पर यात्री सहित बस का किराया चार हजार रुपये भुगतान किया गया। हमारी बस अब जहाज पर सवार हो गयी थी। हम जहाज की ऊपरी मंजिल पर बैठने चले गये। तीन मंजिल वाले जहाज पर सबसे नीचे बड़ी गाड़ियाँ, बीच वाली मंजिल पर छोटी गाड़ियाँ कार, जीप, आदि और तीसरी मंजिल पर यात्रियों को आराम के साथ बैठकर यात्रा करने का प्रबन्ध था। यह व्यवस्था बहुत ही आकर्षक लग रही थी। जहाज पर हम ग्यारह बजे बैठे थे और पाँच घंटे के बाद करीब चार बजे दिन को उस पार 'वेस्टेन्ड फेरी' पर पहुँचे। जहाज पर ही हमने फ्रांस के सिक्के बदले, जो पौण्ड के ड्योढ़ा का हिसाब मिला। फ्रांस के नोट पर 'बैंक द फ्रांस' (Bankque De France) लिखा था और सिक्के पर पांच फ्रेन्क और एक फ्रेन्क। हम 'टाउन सेन्ड कार फेरी' से 'वेस्टेण्ड पोर्ट' आए। यह पोर्ट बेलजियम का अंग है। यहाँ भी हमारा पासपोर्ट चेक किया गया और हम पांच बजे सन्ध्या समय पेरिस के लिए चले। पूर्व निश्चित कार्यक्रम के अनुसार पेरिस जाने के लिए 'केली पोर्ट' जाना था लेकिन यह सूचना मिलते ही कि केली पोर्ट पर पोर्ट कर्मचारियों की हड़ताल चल रही है, परेशानी हो सकती है। हमने रास्ता बदल दिया। 'केली पोर्ट' होकर पेरिस नजदीक पड़ता, केली पोर्ट का रास्ता बस दो घंटे का था। हम 'वेस्टेण्ड' से ही पेरिस के लिए चल पड़े। पांच बजे हमारी गाड़ी प्रस्थान कर गयी। चार घंटे बिना विराम के चलने के बाद एक पेट्रोल-पंप पर रेस्टोरेण्ट में ९ बजे रात को डिनर लिया केवल चिप्स और स्लाइस-पीस। दस बजे रात को हमारी गाडी बढ़ी और दो बजे रात को पेरिस पहुँच गए। संयोग वश पेरिस के 'होटल लोरेटी में, तीन बेड वाला कमरा नम्बर २११ मिल गया। श्री हरिदास ज्वाल और श्री लक्ष्मण दास आर्य के साथ रात्रि विश्राम किया।

संसार के कुछ ऐसे प्रसिद्ध नगर हैं, जिन्हें लोग अच्छी तरह जानते हैं, कई रूपों में कई रंगों में पेरिस उनमें से एक है। हमारे यहाँ के कम पढ़े-लिखे लोग भी पहले कहा करते थे—पंडित जवाहरलाल नेहरू के कपड़े पेरिस के धुलकर आते थे। पंडित जी के कपड़े भले ही घर में धुलते रहे लेकिन कहा जाता रहा कि उनके कपड़े पेरिस से धुलकर आते रहे। हाँ, तो कहा, पेरिस, फ्रांस की राजधानी है। फ्रांस यूरोप का सबसे बड़ा देश है, इसका अधिकांश भाग समतल है लेकिन बीच का पठार कहीं-कहीं काफी ऊँचा है। कई प्रकार की जलवायु फ्रांस की विशेषता है। अटलांटिक सागर के किनारे के क्षेत्रों में काफी वर्षा होती है और मौसम साधारण रहता है, लेकिन मध्य का पठार गर्मी में काफी गरम और जाड़े में बहुत ठण्डा रहता है, फ्रांस का क्षेत्रफल २,१२,७३६ वर्गमील है।

फ्रांस अकेला देश है यूरोप का जो अपने लिए काफी अनाज पैदा करता है। यहाँ गेहूँ, जौ, चुकन्दर आदि की उपज बहुत होती है। ब्रितानी प्रदेश में पशुपालन और डेरी का काम किया जाता है, जो अब उद्योग का स्वरूप ग्रहण कर चुका है। मध्य पठार के किसान भेड़ और बकरियाँ पालते हैं। कहा जाता है कि फ्रांस की शराब बहुत प्रसिद्ध है। यह देश उद्योग-धन्धे को लेकर बहुत ही विकसित है। कोयला और लोहे की खान इसकी भू-सम्पत्ति है। इन खानों के आस-पास इस्पात के कई बड़े कारखाने हैं, वैसे यह देश रासायनिक द्रव्य और इत्र को लेकर प्रसिद्ध है। मार्साई फ्रांस का सबसे बड़ा बन्दरगाह है।

इतिहास कहता है कि दो हजार वर्ष पूर्व फ्रांस रोमन साम्राज्य के अधीन था, तब इस भूखंड का नाम था—गौल। सत्रहवीं शती में लुई चौदहवें के शासन-काल में फ्रांस यूरोप की बहुत बड़ी शक्ति बन गया। सन् १७८९ में हुई फ्रांस की राज्य-क्रांति ने सारे संसार को प्रभावित किया। सन् १८७१ के बाद से फ्रांस एक गणराज्य है। साहित्य, चित्रकला और संगीत के क्षेत्र में फ्रांस उल्लेखनीय स्थान रहा है।

आज हम पेरिस में हैं, आइए थोड़ी चर्चा पेरिस को लेकर की जाय। फ्रांस की राजधानी पेरिस अपने सौन्दर्य और वैभव के लिए विश्व विख्यात् है। यह नगर कला ही नहीं, आधुनिकतम परिधान (फैशन) के क्षेत्र में सदियों से आगे रहा है, आज भी यह अग्रणी है। इस नगर का फ्रांसीसी नाम हैं—'पारी'। पेरिस का सबसे ऊँचा आइफेल टॉवर, जिसकी ऊँचाई ९८४ फीट है, सन् १८८९ का बना हुआ है। यह जो नदी इस नगर के बीच से बह रही हैं, वह है 'सीन' जिसके बीच में नाव की शक्ल का एक टापू है। कहते हैं कि दो हजार वर्ष पहले यहाँ मछियारों का छोटा-सा गाँव था। उस गाँव ने आज पेरिस का रूप ले लिया है, पेरिस नहीं, एक महानगर है। विश्व-विख्यात नोत्रेदाम चर्च इसी टापू में है। आज पेरिस संसार की प्रसिद्ध पर्यटन भूमि है। चारो ओर राजमहल, प्राचीन तथा आधुनिक विश्व विद्यालय, अजायबघर, थिएटर, गिरजाघर, पटरियों पर बने हुए रेस्टोरेण्ट और बाग-बगीचे देखे जा सकते हैं। पेरिस में प्रतिदिन नये-नये फैशन निकलते और फिर संसार के कोने-कोने में फैल जाते हैं।

पेरिस में जहाँ भी देखा Bank बैंक को Benque पोर्ट Port को Porte जेनरल General को Generale लिखा था वैसे एक स्थान पर पोटेबुल Potable Aue लिखा देखकर मुझे विस्मय हुआ। हमारे पास भाषा शास्त्र का कोई ज्ञान नहीं है लेकिन हमारे यहाँ इन शब्दों का यह रूप नहीं, यह हम जानते हैं। यहाँ पोटेबुल लिखा मिला, वहाँ पानी का नल था। उस नल की विशेषता यह थी कि स्विच दबाते ही पानी निकलने लगता था लेकिन एक ग्लास पानी निकलने के बाद अपने आप बन्द हो जाता था सम्भवतः यह ऑटोमेटिक नल था।

आज की रात होटल लोरेटी के भीतर बीत गयी। हमारे दुभाषिये ने कहा—पेरिस नगर की आबादी तीन करोड़ है और यह अपनी कोटि का अकेला नगर है, अत्यन्त रमणीय दर्शनीय।

आज २९ अगस्त १९८० है। हमारी बस 'लोरेटी होटल' से चल चुकी है पेरिस के नगर भ्रमण के लिए। सारे संसार के लिए पेरिस एक ऐसा नाम है, एक ऐसा शब्द है, जो स्वतः सौन्दर्य का बोध कराता है। पेरिस हमारी खुली आंखों के सामने है, हमारे कैमरे के लेन्स के सामने भी। हम देख रहे हैं सामने स्थापित नेपोलियन की प्रस्तर-मूर्त्ति के साथ लगीं कई अन्य मूर्तियों को, स्टेशन रुनाजा, साउथ-वेस्ट पेरिस ओपेरा—२१ और मदर लैंड चर्च यहाँ भी योद्धा नेपोलियन का चित्र लगा है, ५२ विक्स पिलर्स, एक विक में बना एक पिलर इस प्रकार बना यह चर्च जो ५२ पिलरों पर खड़ा है। कंकर पैलेस, लेटरन कंकर पैलेस, भैक्सीनस कंकर नेशन पंलेस की प्रस्तर मूर्तियाँ, प्राचोन इतिहास का स्मरण दिलाती हुईं। यह है चिल्ड्रेन गार्डेन, चिल्स गार्डेन, हमारे सामने हैं २० वीं शती के बने भवन और टावर, एक ओर नेपोलियन के चित्र, दूसरी ओर नेपोलियन की स्त्री के चित्र आइफेल टावर, आस-पास बाग और झील। इस ६८४ फीट ऊँचे टावर पर लिफ्ट के द्वारा जाया जा सकता है। कहा जाता है कि यह टावर संसार मे सबसे ऊँचा है। इस टावर पर चढ़कर पेरिस की छवि देखी जा सकती है।

हम देख रहे हैं जिमियर थिएटर, म्युजियम, पनोरमा, पैलेस इमेलिट, एअर पेरिस, सीन सर्व रीवर ब्रिज, होना पैलेस, अलिजे पैराडाइज गार्डेन, अलिजे पैलेस, क्लोवे, अमेरिकन इम्बैसी, मेरो मार्टिन, गिला हाउस, अमिस लोअर स्ट्रीट, पैलेस ऑफ एलिजा और पैराडाइज ओपेरा के समीप कई काउण्टर (दूकानें) यह है कमर्शियल क्लब पेरिस, शोपिंग स्ट्रीट, फोटिंङ्ग पैलेस, किंगसन पैलेस, रिच फोर्टीन, ओपेरा पेरिस, लुबरा पेरिस, गोन्ट पैलेस जिसका निर्माता नेपोलियन है, यहाँ वह रहता भी था। यह 'न्यू-ब्रिज' है सन् १९६५ का बना हुआ, यहाँ फ्रांस का राजा रहता था। हम देखने लगे हैं—पैलेस कंगरिन डान क्रोन किस्टोस टावर ऑफ सेन्टजार, आयरलैंड सेलरिज रिवर—सीन मनोरामा रिटेसिया, नदी के दो किनारे पर बसा, यह नगर आयरलैंड की तरह सुन्दर

लगता है। प्राय: ९०० वर्ष प्राचीन केथेड्रल चर्च एक विश्व-प्रसिद्ध चर्च माना जाता है। इस विशिष्ट चर्च के निर्मास में तीन सौ वर्ष लगे। इस चर्च के निर्माण में संसार के सभी तरह के लोगों का सहयोग है लेकिन इस चर्च के निर्माण कार्य को पूर्णता की ओर ले जाने में श्रमिक-वर्ग का सक्रिय सहयोग है। इस चर्च में पत्थर और धातुओं की कारीगरी है इस चर्च का निर्माण-कार्य फ्रांस की स्वाधीनता के पूर्व आरम्भ किया गया और इसके बाद तीन सौ वर्ष लगे। तात्पर्य कि इस बीच कई पीढ़ियाँ गुजर गयीं।

पेरिस का जन जीवन समुन्नत है। यहाँ के श्रमिक-वर्ग की आय (वेतन) प्रतिमाह पांच हजार न्यूनतम और बारह हजार अधिकतम है। यह पारिश्रमिक स्तर और श्रम पर आधारित है। यह सामने है—'ओपेरा मार्केट एण्ड ड्यूटी-फ्री शॉप्स (Palas Royal) यहाँ ड्यूटी-फ्री सामग्रियां मिलती हैं। इस कतार में बहुत सी दूकानें हैं। हम केथेड्रल चर्च से घूमकर इस ड्यूटी-फ्री मार्केट के भीतर आ गए और अपने लिए सेण्ट-साबुन आदि लिया। हमारी बस प्रतीक्षा कर रही थी। बस पर सवार होकर 'होटल लोरेटी' वापस आए। ढाई बजे से तीन बजे के बीच अपना लंच लिया, फिर नगर-दर्शन के लिए निकल गए। हमारा घुमक्कड़ मन चक्कर काटता रहा पेरिस की गलियों में, हम अपनी निर्दोष आंखों से देखते रहे पेरिस के सौन्दर्य को, पेरिस के लोगों को, ऐसे लोगों को जो तेजी के साथ भागते जा रहे थे, संभवतः यह सोचकर कि समय बहुत मूल्यवान है। लेकिन हमने अपने जीवन का मूल्यवान समय घूमकर काट दिया। जीवन की पूरी चित्रावली जैसे आंखों में झूल गयी।

पेरिस की लम्बी चौड़ि सड़क हम काफी देर तक अपने तेज कदमों से मापते रहे और थकी-थकी आँखें थके-हारे पाँव, रात के नौ बजे होटल लोरेटी वापस आये। डिनर लिया और कमरा नम्बर २११ के भीतर चले गए। तीन बेड के इस कमरे में श्री हरिदास ज्वाल और श्री लक्ष्मण दास आर्य भी साथ थे।

······और आग लगी

बस दो घंटे पूर्व ही हम लोग सोए थे, कुर्ता, पाजामा, बंडी निकालकर रख दिया था। सामने बिजली का लैम्प जल रहा था। मेरा खादी का गीला रूमाल जलते बल्व से सटा हुआ था शायद उसी की गर्मी से आग पैदा हो गयी। हमारा ऊनी कुर्ता जलने लगा। बंडी में भी आग लग गयी फिर पाजामा भी जल उठा। पूरा कमरा धुएँ से भर गया। कई कमरे धुएँ से भर गए। मेरे साथी घबरा गए। कोई टेलिफोन करने लगा तो किसी ने कपड़े समेटना शुरू किया। मैं अकेला ही आग से जूझ रहा था धैर्य और आत्मविश्वास के साथ। मैंने अपने जले कुर्ता पाजामा से मसलकर आग बुझाने में सफलता प्राप्त की।

आग पर काबू पा लिया गया, तभी पुलिस भी आ गयी। पुलिस ने हमारा नाम और पासपोर्ट नम्बर नोट किया। पुलिस ने सवाल किया Any body smoke ? (क्या कोई सिगरेट पीता है ?) मैंने उत्तर दिया – No body smoke ? (कोई सिगरेट नहीं पीता ?) पुलिस ने बिजली के तारों का निरीक्षण किया, बल्व के नीचे लगे स्विच को भी देखा। उसने यह निर्णय लिया कि आग सिगरेट से नहीं बिजली के बल्व से लगी थी। पुलिस आश्वस्त हुई।

होटल लोरेंटो के प्रबन्धक ने हमारे लिए दूसरा कमरा नम्बर २०४ आवंटित कर दिया। हम अपना सामान लेकर दूसरे कमरे में चले गए। इस आग ने प्राणों को थोड़ी देर के लिए आतंकित ही नहीं, आशंकित भी कर दिया।

रात काफी बीत गयी थी, कहिए कुछ घंटे हो रह गए थे सुबह होने में। अचानक आँखे खुलीं, घड़ी की ओर नजर गयी तो चार बजा रही थीं। आँखें फिर झपकी भी नहीं ले सकीं। दैनिक कार्य से निवृत्त होकर हम ९ बजते-बजते नीचे आ गए और आठ बजते-बजते सुबह का जलपान लेकर बस पर सवार हो गए।
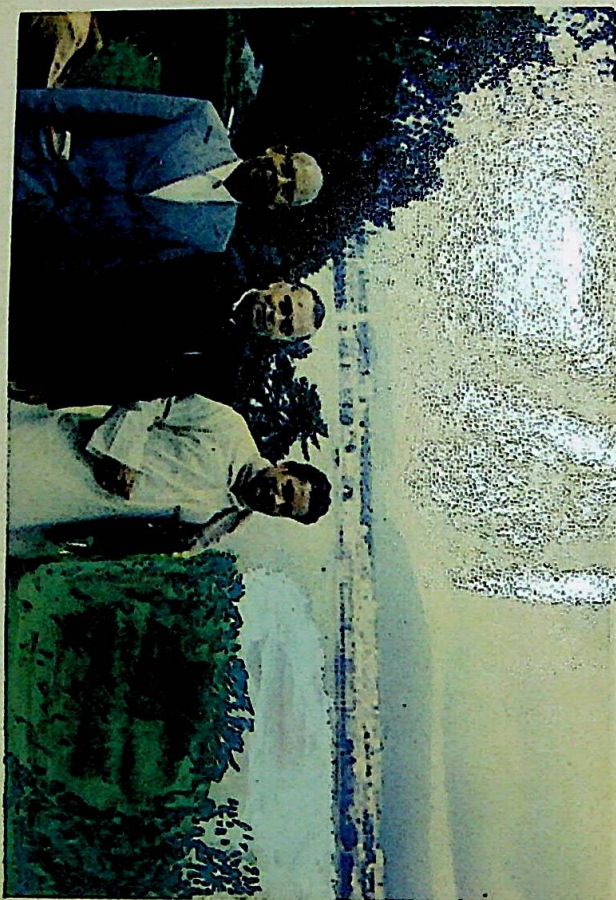
लेखक : के साथ श्री पन्नालाल जी तथा श्री यमुना प्रसाद जी

पेरिस और जेनेवा के बीच

आज ३० अगस्त १९८० है। सुबह के साढ़े आठ बज रहे हैं। हमारी डिलक्स बस पेरिस नगर से बाहर आने लगी है, अगल-बगल आलीशान भवनों को पीछे छोड़ती हुई साफ और चिकनी-चौड़ी रबर जैसी सड़क जैसे आगे से पीछे की ओर भागती जा रही है और हमारा आकुल मन घर की ओर भागने के लिए आतुर होने लगा है। यह डिलक्स बस है, इसके नीचे पहिये लगे हैं, कोई पंख नहीं। लीजिये, अचानक रुक गए हैं, बस के पहिए, शायद यह पेट्रोल पम्प है। अभी दो घंटे ही हुए थे कि हम चले थे। इस क्षणिक विराम से भी थोड़ा विश्राम मिल जाता है, हारे-थके यात्री-प्राणों को। इस प्रकार तरो-ताजा होने का अवसर भी मिल जाता है। हमारी बस फिर खुल जाती है। कुछ ही दूर जाने के बाद हमारी बस अनायास रुकी। मुजफ्फरपुर के मेरे मित्र मेरे पास आ गये भाई पन्ना लाल जी, जो रोम से लेकर लन्दन और फिर वापसी के समय बस के सहयात्री रहे हैं। पन्ना लाल जी के साथ हैं उनका भतीजा सूरज, जो बस के रुकते ही उतर जाता है नीचे। इस विराम-स्थल पर भी वह हमारे पास आ गया है। मुजफ्फरपुर वेद कम्पनी के श्री यमुना प्रसाद मेरे अभिन्न और उनका सुपुत्र वेद प्रकाश बिलकुल सूरज के समान, बहुत मनस्वी और तेजस्वी, हम सभी एक साथ हैं।

इस विदेश-यात्रा के क्रम में कौन कहाँ से जायेगा इसका कोई पता न था लेकिन जाते समय दिल्ली हवाई अड्डे पर भेंट हुई। मन को संतोष और सुख मिला, एक साहस की लकीर सामने खिच गयी। इस लम्बी यात्रा में हम सभी एक ही बस पर सदा साथ-साथ रहे। पन्ना लाल जी ने अपने व्यवहार से मुझे पराजित किया। इस विराम-स्थल पर हमने अपना लंच एक साथ लिया। कुछ देर तक हम यूरोपीय देशों की चर्चा करते रहे। आज के लंच मे ब्रेड, दही, पेनापुल स्लाइस और टमाटर आदि बिलकुल हमारी रुचि के अनुसार था।

हमारी बस इस विराम स्थल से प्रस्थान कर गयी है। कुछ घंटे के बाद हम एक स्थान पर और रुके, जहाँ जंगल थे, छोटी-छोटी पहाड़ियाँ भी थीं। कई मित्रों ने चाय और कुछ साथियों ने काफी ली। इस सुनसान लेकिन अत्यंत मनोहारी स्थान पर स्थित रेस्टोरेन्ट ने एक चाय या काफी के लिए चार फ्रैंक लिए, चार फ्रैंक का हिसाब हुआ आठ रुपये भारतीय। साधारण व्यवस्था के अन्तर से इतना बड़ा अन्तर किसी भी सामान्य भारतीय को विस्मित कर सकता है लेकिन यह बात विस्मय की नहीं है।

मेरे दुभाषिये ने कहा—"जेनेवा यहाँ से १५० कि. मी. की दूरी पर है, आपकी यह यात्रा अत्यन्त सुखद ही नहीं दर्शनीय भी होगी····। "हमारी बस तेज गति से भागती जा रही है, आगे चलकर किसी पर्वतीय झील के पास हमारी बस फिर रुक गयी है। यह स्थान निश्चय ही बहुत रमणीय है, बिलकुल अपने नैनीताल की तरह लेकिन यह झील नैनीताल से बड़ा है, एक ओर लम्बा झील और दूसरी ओर लम्बी-चौड़ी सड़क, चारो ओर पहाड़ और पहाड़ियाँ। ये दृश्यावलियाँ बरबस हमारे मन-प्राणों को बाँधने लगी हैं लेकिन यह क्या, हमारी डिलक्स बस के पहिए फिर नाचने लगे हैं।

हमारी गाड़ी जेनेवा की ओर जैसे-जैसे बढ़ती जा रही है, मौसम का रंग बदलता जा रहा है। छोटी-छोटी पहाड़ियाँ पीछे छूट गयी हैं लेकिन पर्वतीय भूमि से गुजरती हुई हमारी बस एक बड़े 'टनेल' (सुरंग) के भीतर घुस गयी है, जहाँ से कुछ भी दिखायी नहीं देता। हाँ, सुरंग के भीतर जलती बिजली की तेज बत्तियाँ हमारी आँखों में चकाचौंध पैदा कर रही हैं। इस सुरंग के भीतर सड़क चौड़ी है, इतनी चौड़ी कि बसों का आवागमन सम्भव है। सुरंग से निकलकर हम फिर पहाड़ और पहाड़ियों की गोद में आ गए हैं, सामने मीटर गेज की लाइन भी दिखायी दे रही है। वैसी ही गाड़ियाँ जैसी हमारे पर्वतीय क्षेत्रों में दौड़ती हैं। इन मीटर गेज गाड़ियों और उनके डब्बों को देखकर अपने पहाड़ी नगर दार्जिलिंग का सहसा स्मरण हो आता है। इस क्षेत्र में फलों के पेड़ सेव-नासपाती आदि के, चारो ओर दीख रहे हैं। हमारे दुभाषिये ने कहा—"जेनेवा बिलकुल समीप है, जेनेवा का चेक-पोस्ट बिलकुल हमारे सामने है।"

कुछ ही क्षणों के भीतर हमारी बस 'चेक पोस्ट' पर आकर रुकी। हमारे पासपोर्ट आदि देखे गये। आधे घंटे से अधिक समय इस चेक-पोस्ट पर नहीं लगा। हमारी बस आठ बजते-बजते चेक-पोस्ट से चली। कुछ ही दूर जाने के बाद शहरों का सिलसिला शुरू हो गया, बड़े भवन, आलीशान इमारतें और नौ बजते-बजते हमारी गाड़ी स्विट्जरलैंड के नगर जेनेवा के भीतर समा गयी। हम अब होटल डी. एल. एन्कटी' की ओर मुड़ गए, हम क्या मुड़े-हमारी गाड़ी मुड़ गयी, साढ़े दस बजे रात को हम इस होटल के भीतर थे। कमरा नम्बर ५०७ हमारे लिए सुरक्षित हो गया। इसी होटल के रेस्टोरेन्ट में हमने अपना रात का भोजन (डिनर) लिया सूप, ब्रेड, राइस, चीप्स और उबाली हुई सब्जियाँ। डिनर का अन्त करने के लिए स्वादिष्ट 'आइस्क्रीम'।

जेनेवा की जमीन पर

स्वीट्जर लैंड को विधाता ने पूर्ण मनोयोग से बनाया है। जेनेवा स्वीट्जर-लैंड का मुख्यालय है। आप स्वीट्जर लैंड के किसी क्षेत्र में चलिए सड़कें, फुटपाथ पार्क सभी सजे-सजाये, ऐसा कुछ भी दीखाई नहीं देगा, जो आपकी आँखों में चुभन पैदा करे। ईमानदारी इस देश की जैसे आत्मा है। किसी दूकान पर चलिए कहीं भी सेल्समैन नहीं, आप सामान लेकर गेट पर आइये काउण्टर-गर्ल बिल बना देगी, सामान सम्भाल देगी, अधरों पर पावन मुस्कान लिए, भुगतान लेकर विदा कर देगी। बसों पर कन्डक्टर नहीं, हाँ प्रत्येक बस स्टाप पर आटोमेटिक मशीन लगी है, निश्चित सिक्के डालिए आपका टिकट आपके सामने होगा। यदि आपका सामान किसी रेलवे प्लेटफार्म पर छूट गया है तो चौबीस घंटे के बाद भी सही सलामत मिल सकता है। आप देखते रहिये ट्रेन प्लेटफार्म पर लगी, असंख्य लोग उतरे चढ़े, आपको यह अनुभव नहीं होगा कि ट्रेन कब आयी है कब खुल गयी है। डब्बे के भीतर भी लोग पूरी शांति के साथ बैठे या कुछ पढ़ते मिलेंगे।

स्वीट्जरलैंड की अलग कोई भाषा नहीं है। यहाँ जर्मनी फ्रेंच और इटालियन को राष्ट्रीय स्वरूप प्राप्त है। स्वीट्जरलैंड की विशेषताओं या विशिष्टताओं में स्मरणीय यह है कि यह राष्ट पूर्णतया तटस्थ राष्ट्र है। यही कारण है कि स्वीट्जरलैण्ड कभी यू० एन० ओ० का सदस्य न हुआ। साम्राज्यवादी राष्ट्र भी इसकी तटस्थता का सम्मान करते हैं। विश्व की राजनीति यह अनुभव करती है कि एक भूमि ऐसी भी आवश्यक है जहाँ की खुली हवा में पारस्परिक विवाद सुलझाये जा सकें। जेनेवा में संयुक्त राष्ट्र-संघ का पुराना भवन ही नहीं वरन् २३२ अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं के मुख्य कार्यालय भी हैं। न्यूयार्क में संयुक्त राष्ट्र-संघ का दूसरा भवन बन गया है लेकिन राजनीतिक विषयों को छोड़कर शेष सारी बैठकें जेनेवा कार्यालय में ही होती हैं स्वीट्जरलैंड यूरोप के ही नहीं वरन् विश्व के मानचित्र पर अपने शांत जन-जीवन, सौम्य सौन्दर्य के लिए प्रसिद्ध है। मेरे दुभाषिये ने बताया "हालैंड के निवासी जैसे अपने समुद्र की हर-लहर को जानते हैं, स्वीट्जरलैंड के लोग अपने पर्वत-खण्डों से पूरी तरह परिचित हैं।"

हम जेनेवा [स्वीट्जरलैंड] के होटल डी. एल. एंकटी के भीतर हैं। आज ३१ अगस्त १९८० है। दुभाषिये ने रात ही कहा था कि कल १० बजे से नगर परिदर्शन का कार्यक्रम है। नित्य की तरह आज भी मेरी आँखें खुल गयीं। आठ बज गये पूरी तरह तैयार होकर नीचे आ गया, जलपान किया, निश्चित दस बजते-बजते हमारी डि-लक्स कोच खुल गयी यह सामने दीख रहा है जेनेवा का मुख्य रेलवे स्टेशन, कुछ ही दूरी पर स्थित चर्च फिर जेनेवा की 'अन्डर ग्राउण्ड सिटी' जो अभी निर्माणाधीन है। हम देख रहे हैं—'इण्टरनेशनल लेबर आर्गनाइजेशन' का कार्यालय और उसके समीप इन्टरनेशनल ग्राउन्ड पन्द्रह मंजिला यू० एन० ओ० बिल्डिंग, जहाँ तीन हजार आदमी काम करते हैं। ऐसे ३२ कक्ष हैं, जहाँ अधिकारी रहते हैं। एक बहुत बड़ा पुस्तकालय इस भवन के भीतर है। इण्टरनेशनल लेबर आर्गनाइजेसन के भवन की विशालता मात्र इस स्थिति से आंकी जा सकती है कि इसमें ४५०० खिड़कियाँ हैं।

जेनेवा, पहाड़ियों की घनी छाया के नीचे बसा हुआ है। हम देख रहे हैं सामने का ऊँचा पर्वत। कहते हैं, इस पर्वत की ऊँचाई ४८ हजार मीटर है, जैसे यह पहाड़ जेनेवा को सदा स्थिर-चित्त और तटस्थ रहने का सन्देश दे रहा हो। यह है जर्मनी के चार्ल्स सेकेन्ड की समाधि। सुना कि चार्ल्स सेकेन्ड अपनी सारी सम्पत्ति छोड़कर चल बसा, उसकी स्मृति स्वरूप वह स्मारक १९६० का बना है। यह समाधि, एक दर्शनीय-स्थल बन गयी है। हम देख रहे हैं—बोटानिकल गार्डेन फिर नाइस गार्डेन और यह है—रोजेज गार्डेन, इसके भीतर गुलाब के फूलों की दो सौ किस्में देखी जा सकती हैं। जेनेवा नगर ही पार्कों का नगर है, एक ओर पहाड़ दूसरी ओर लेक (झील) कहीं पार्क कहीं ऊँचे-ऊंचें फाउन्टेन और टावर। यह सामने का फाउन्टेन १४५ मीटर ऊंचा है, जो रात को रोशनी जलाकर अन्धकार से प्रकाश की ओर चलने, चलते रहने का संकेत करता है। हमारे सामने है-स्वीस अभियन्ताओं का बनाया हुआ यह फाउन्टेन, जो दो सौ मीटर से अधिक ऊँचा है और जेनेवा का यह झील, जिसके बारे में कहा जाता है कि यह संसार का सबसे बड़ा झील है। इस झील का क्षेत्रफल ७२ किलोमीटर बताया जाता है। इस झील के किनारे की पहाड़ियों की तलहटी में दूर-सुदूर तक बनी कालोनियां देखी जा सकती हैं। इन कालोनियों में कई चर्च भी हैं मेरे दुभाषिये ने कहा—'यहाँ ४५ प्रतिशत प्रोटेस्टेन्ट ४० प्रतिशत कैथोलिक और १५ प्रतिशत अन्य धर्मावलम्बी हैं, कहीं कोई विवाद नहीं, कहीं कोई विभेद नहीं। इन कालोनियों के समीप से दिखायी देने लगी हैं—यूनिवर्सिटी बिल्डिंग और आर्क नदी के पार पुल के समीप घड़ी बनानेवाली फैक्ट्री 'रौलेक्स' और कुछ ही दूर जाने के बाद मिला—'सेन्ट्रल सुपर मार्केट'।

हम जेनेवा के सेन्ट्रल सुपर मार्केट से आगे बढ़ने लगे हैं अचानक दृष्टि डाक-तार विभाग के लेटर-बाक्स पर जाती है, जिस पर 'पोस्टमेट' (Postomat) अंकित है। अनुमान किया कि 'लेटर-बाक्स' को जेनेवा में "पोस्टोमेट' कहा जाता है। यह है म्यूजियम जहाँ प्राचीन संस्कार सुरक्षित हैं, शती १७-१८ की बनी जेल, काल्वीन चर्च, सिटी हाल और १५ वीं शती का बना टावर जेनेवा के दर्शनीय

स्थान हैं। हम देख रहे हैं—साहसी संकल्पी योद्धा नेपोलियन वोनापार्ट की तोप जो जेनेवा की एतिहासिक स्मृति है। हमारे सामने है—'टेलीविजन टावर' और यह 'ओपेरा हाउस'।

'रोम रीवर' के विलकुल पास का यह फाउन्टेन, जिसके साथ वहुत ही शक्तिशाली फव्वारा लगा हुआ है, १३५ फीट की ऊ'चाई तक पानी छिड़कता है। इस नगर को सारी सुविधायें सुलभ हैं लेकिन हम देख रहे हें- लोग वड़ी तेजी के साथ भागे जा रहे हैं, कार्यालयों, कारखानों की ओर। मेरे दुभाषिये ने वताया-'यहाँ भिक्षाटन या वेकारी नाम की कोई चीज नहीं, घड़ी, ज्वेलरी और होटल-व्यवस्था उद्योग का स्वरूप लिए वैठी है। जहाँ तक घड़ियों के निर्माण का प्रश्न है, स्वीस घड़ियों का वाजार आज भी वना हुआ है। हमने यह अनुभव किया कि अपने अधिकारों के लिए सजग यूरोपीय देशों के नागरिक अपने कर्त्तव्यों के प्रति भी वहुत निष्ठावान हैं, ईमानदार हैं। यही कारण है, छोटे-छोटे देशों के विकास का, प्रगति का भी।

जनेवा में 'झील के किनारे रंगीन और सफेद अंगूर के पेड़-पौधे-लत्तियाँ दिखायी पड़ीं, पहाड़ और पहाड़ियों की तलहटियों में वहुत-सी नयी वसी कॉलोनियाँ भी। आइए, थोड़ी चर्चा वाजार-भाव को लेकर की जाय। हमने एक जगह लहसुन, प्याज, केला और लालमी (तरवूजा) विकते देखा। इन्हें देखकर अपना देश याद आ गया लेकिन इनका बिक्री दर देखकर माथा ठनक गया-लहसुन ५५ और ६० रुपये किलोग्राम, प्याज ८० रुपये, सेव २५ और ३० रुपये, केला २० रुपये और लालमी १०० रुपये किलो। इस स्थल पर होटल डी. एल एन्कटी का दर भी देखने योग्य है- सिंगल वेड का रूम ३५० से ४०० रुपये, डवल वेड का कमरा ५५० से ६०० रुपये प्रति २४ घंटे लंच या डिनर का १५ से २० डी. फ्रैंक कहने का तात्पर्य-१०० से १२५ रुपये तक। आवास के साथ मात्र जलपान सम्मिलित रहता है। हमारी वस होटल एन्कटी की ओर लौटने लगी है। इस समय सन्ध्या के साढ़े आठ वजे हैं। हम अपने होटल वापस आ गए हैं। नौ वजे डिनर लिया और रात्रि विश्राम किया।

जेनेवा से मिलान : टेढ़े और सीधें रास्ते

किसी भी भारतीय की यह कल्पना कि अंग्रेजी एक विश्वव्यापी भाषा है। अंग्रेजी जानने वाला विश्व के किसी भी देश की यात्रा सुविधा पूर्वक सम्पन्न कर सकता है, बिलकुल ही तथ्यहीन है। सत्य यह है कि यूरोपीय देशों में अंग्रेजी सहायक नहीं हो सकती। यूरोप के ऐसे कई देश हैं, जहाँ अंग्रेजी बोली ही नहीं जाती, यदि कोई अंग्रेजी बोलने समझने वाला मिल भी गया, वह अंग्रेजी बोलना नहीं चाहता। यूरोपीय देशों के लोगों का अपनी मातृभाषा के प्रति जो श्रद्धा-प्रेम है, उसका सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है यूरोप के अधिकांश देशों में फ्रेंच और जर्मन भाषायें लिखी बोली जाती हैं। इन दोनों भाषाओं के बोलने वाले कहीं भी मिल जाते हैं। यह बात और है कि विश्व-युद्ध-काल की अंग्रेजी बोलने वाले कुछ बूढ़े-बुजुर्ग मिल सकते हैं लेकिन नयी पीढ़ी में ऐसे लोग मुश्किल से मिल पाते हैं।

यूरोपीय देशों के होटलों में कहीं-कहीं अंग्रेजी में गाइड और रूट चार्ट मिल जाते हैं। इसी प्रकार रेलवे इन्क्वायरी या सरकारी पर्यटन और सूचना केन्द्रों में अंग्रेजी में छपी हुई बुलेटिनें मिल जाती हैं, जो यात्रा के लिए किसी सीमा तक सहयोगी सिद्ध होती हैं। बुलेटिनों और निर्देशिकाओं से अक्सर उलझने-सुलझने का अवसर मिला लेकिन कभी-कभी मेरी टूटी-फूटी अंग्रेजी मेरे लिए सहायक सिद्ध हुई। कई बार बस से छोटी-छोटी यात्रायें करने का संयोग मिला, जैसे जेनेवा में एक फ्रेंक (भारतीय साढ़े पाँच या छ रुपये) का टिकट लेकर एक घंटे तक की यात्रा की। इसी प्रकार रेल से भी छोटी यात्रा का अवसर मिला लेकिन हमने कहीं किसी प्रकार की असुविधा का अनुभव नहीं किया, इसलिए कि अधिकांश यूरोपीय देशों में बस और रेल किराये निश्चित हैं और काउन्टरों पर अंकित भी हैं।

आप भी कहिएगा-'यह बैरागी एक अजीब यात्री है, उसे यह सब कहने की क्या आवश्यकता थी ? हमारी क्षमा-याचना स्वीकार की जाय कि यह हमारा

भावावेश ही नहीं वरन् अपना अनुभव भी है। मेरे जैसे शुद्ध निरामिष वैरागी के लिए ये होटल किस काम के ?

हाँ तो चलिए। आज सितम्बर ८० की पहली तारीख है। मेरे साथ ही हैं श्री हरिदास ज्वाल जी। सुबह हो गयी है और हम अगली यात्रा के लिए तैयार होने लगे हैं। हम लोग आठ बजते-वजते नीचे रेस्टोरेन्ट की मेज पर आ गये हैं। सुवह का जलपान सामने है। पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार मात्र एक घंटा का समय सुरक्षित है लेकिन यह एक घंटा क्या है। स्वीट्जरलैंड के जेनेवा जैसे दर्शनीय नगर के लिए ? हम एक घंटा घूमघाम कर अपनी डिलक्स कोच पर सवार हुए और प्रस्थान कर गए मिलान (इटली) के लिए।

हमारी 'डिलक्स-कोच' जेनेवा नगर के वीच से गुजर रही है हमारी अगल-बगल से पहाड़ियाँ गुजरने लगी हैं। हम देख रहे हैं जेनेवा की सड़कों पर तेजी के साथ भागती हुई भीड़ फुटपाथों पर प्रतीक्षा करते लोग लेकिन हमारी डि-लक्स कोच किसी की प्रतीक्षा नहीं कर रही है, वह भागती जा रही है, दूर-सुदूर इटली की सीमा की ओर। जेनेवा के नगर से वाहर कई उप-नगर और कॉलोनियों के समीप हम वहुत दूर निकल आए हैं लेकिन ऐसा लगता है जेनेवा की पहाड़ियाँ अभी भी हमारे साथ-साथ चल रही हैं। हम देख रहे हैं इन छोटी पहाड़ियों पर छोटे-छोटे मकान और इनकी तलहटी में छोटे-छोटे बाजार। इस दृश्यावली को देखकर अचानक नेपाल के कुलीखानी और भइसिया का स्मरण हो आता है। नदियों में साफ-सुथरे पुल सैकड़ो फीट के पाये और पिलर, इन पुलों से गुजरती हुई बस, ट्रकें, छोटी और बड़ी गाड़ियाँ, सुविधाजनक आवागमन। कहीं-कहीं पहाड़ों से झर-झर झरते निर्झर पाइप लगे, जिनके द्वारा इन झरनों का पानी शुद्ध किया जा रहा है; इसके लिए कई मशीनें लगी हुई।

कुछ मशीनें सड़कों पर काम कर रही हैं, रोड़े, पत्थर और गिट्टी उठाकर गढ़े भर रही हैं, एक आदमी ड्राइव कर रहा है, कहीं अधिक आदमी दिखायी नहीं देते। एक ही आदमी सामान उठाता है, एक आदमी उसे नचाकर नीचे-

ऊपर करता है और वही आदमी मशीन को मोड़कर आगे बढ़ा लेता है। ऐसी मशीनें यहाँ अक्सर दीख जाती हैं। छोटे नगरों में भी कूड़े-कचरे के पैकेट उठाने की आटोमेटिक मशीनें काम करती देखी गयीं। आदमी कूड़े के पैकेट हाथ से नहीं छूते। हमारी डिलक्स-कोच भागती जा रही है लेकिन अब भी छोटी-बड़ी पहाड़ियाँ हमारा साथ नहीं छोड़ रही हैं। लीजिए, हमारी गाड़ी माउण्ट ब्लैंक टनेल (गुफा) के भीतर प्रवेश करने लगी है, इस गुफा कहिए इस सुरंग की लम्बाई १२ कि० मीटर है, इससे होकर दो गाड़ियाँ आ जा सकती हैं। हमारी कोच भीतर प्रवेश कर गयी है, सामने कई गाड़ियाँ आ रही हैं। क्या इस सुरंग से अंधेरे में भी निकला जा सकता है ? सीधा उत्तर है-नहीं। यह लम्बी सुरंग रात की कौन कहे, दोपहर को ही अन्धेरे में डूब सकती है, फिर आकस्मिक घटनायें और अकल्पित दुर्घटनायें, सहज स्वाभाविक हैं। सुरक्षा के लिए इस लम्बी सुरंग के भीतर बिजली की व्यवस्था है, दिन-रात बत्तियाँ जलती रहती हैं। सड़क साफ-सुथरी और चौड़ी लेकिन सीधी, कहीं कोई मोड़ नहीं। यह लम्बी-चौड़ी सुरंग जेनेवा की सीमा के भीतर है। हम इस लम्बी सुरंग से निकल गए हैं, सामने इटली की सीमा दिखायी दे रही है। कुछ ही मिनटों के बाद हमारी बस इटली के बोर्डर पर आ रुकी।

हम अभी जेनेवा और इटली के बोर्डर के उस स्थान पर हैं, जहाँ से ब्लैंक माउण्ट, बर्फ के पहाड़ पर 'रोप लेन ट्राली' से जाया जाता है ऊपर तीन स्टेशन हैं, प्रथम स्टेशन का भाड़ा भारतीय ७० रुपये, उसके ऊपर के दूसरे स्टेशन का ११० रुपये और सबसे ऊपर अन्तिम स्टेशन का किराया १२० रुपये निर्धारित है। इटली के सिक्के ही देने होते हैं, यहाँ। एक 'रोप-लेन ट्राली' पर बीस से पच्चीस आदमियों के बैठने की व्यवस्था है। अन्तिम स्टेशन तक जाने के लिए १० या १५ ही व्यक्ति जा सकते हैं लेकिन सबसे ऊपर की चोटी पर जाने के लिए ट्राली में ५ या ७ व्यक्ति ही बिठाये जाते हैं। यह अंतिम चौथा स्टेशन फ्रांस के भीतर पड़ जाता है। यहाँ ऊपर से भी फ्रांस जाने का मार्ग है, इसलिए अधिकांश लोग तीसरे स्टेशन तक ही जाते हैं। अन्तिम स्टेशन तक जाने के लिए

पास पोर्ट दिखाना आवश्यक हो जाता है। इस अन्तिम स्टेशन का तापमान 'शून्य' डिग्री है। हम तीसरे स्टेशन तक गए और डेढ़ घण्टे के भीतर लौटकर नीचे भूमि पर आ गये। ऊपर के बर्फीले पहाड़ पर कुछ लोग 'स्केटिंग' कर रहे थे। बर्फ पर फिसल-फिसल कर चल रहे थे। हमारे पास बर्फ की चोटियों पर जाने के लिए न जूते थे, न गर्म कपड़े, हम अलग से ही देखकर चले आए। जहाँ से 'रोप लेन ट्राली' ऊपर बर्फीले पहाड़ पर जाती है, उस स्थान का नाम 'ला पलुड' (La Palud) है, जो प्रथम स्टेशन है। यह स्टेशन १३७० कि० मीटर की ऊँचाई पर है, दूसरा स्टेशन 'पाविलोन' (Pavillon) २१३० कि० मीटर की ऊँचाई पर और तीसरा स्टेशन 'रीफ टोरीनो' (Rif Torino) ३३७५ कि० मी० की ऊँचाई पर स्थित है। सबसे अंतिम और ऊपर का स्टेशन ३४६२ कि० मी० और कहीं-कहीं ३८४२ कि० मी० है। यही अन्तिम स्थान फ्रांस की सीमा के भीतर है। यहाँ से फ्रांस का रास्ता वना हुआ है, जो पर्वतीय क्षेत्र से होकर जाता है, लेकिन विरले लोग ही इस रास्ते से जाते हैं।

हम लोगों ने यहीं के रेस्टोरेन्ट से अपने लिए लंच के पैकेट लिए और हम चार बजते-बजते मिलान के लिए चले। यहाँ से फिर पहाड़ी रास्ते शुरू हो गए टेढ़े और सीधे रास्ते लेकिन रास्ते-साफ-सुथरे और चौड़े, कहीं हरे-हरे जंगल आँचल पसारकर सामने आते हुए, कहीं झर-झर झरते झरनों का सौन्दर्य, मनोरम और मोहक, आस-पास, अगल-बगल छोटे-छोटे कस्बे, छोटे-छोटे गाँव बिलकुल नेपाल के भैंसिया के समान दृश्य, छोटे-छोटे मकान। एक घंटे की अविराम यात्रा के बाद हम समतल भूमि पर आ सके जैसे नेपाल से रक्सौल की ओर आते समय अमलेखगंज के बाद तराई की भूमि मिल जाती है। उर्वर भूमि, उपजाऊ खेत, सुन्दर बाग-बगीचे, फलों की बागवानी, चारो ओर घनी हरीतिमा, कहीं मक्के की खेती, कहीं अंगूर की लत्तियाँ, कहीं गोबी टमाटर के साथ हरी सब्जियों की खेती, बिलकुल आधुनिकतम प्रणाली की खेतियाँ। हमारे दुभाषिये ने कहा—"यहाँ से मिलान बस ४० कि. मीटर दूर है। हम अभी इटली की भूमि से गुजर रहे हैं ....।"

यहाँ खेतों में धान की फसलें देखी जा रही हैं, कहीं पकते हुए वाल, कहीं फूटती वालियाँ, कहीं-कहीं नदी-नाले, कहीं पथरीली भूमि तो कहीं समतल जमीन पर मक्के की लम्बी-चौड़ी खेती। ऐसा लगा जैसे यहाँ मक्के की खेती धान से अधिक होती है। कुछ दूर जाने के वाद जनेरा और वाजरे की खेती भी दिखायी देने लगी। सड़क के दोनों ओर खड़ी फसलों के बीच से हमारी डिलक्स-कोच तेज गति से आगे भागती जा रही है। थोड़ी देर बाद कोई 'डिस्टिलियरी जैसा कारखाना मिला 'बियर' (शराब) का कारखाना कहते हैं 'बियर' यहाँ का आम पेय है। जैसे अपने यहाँ प्रायः सभी छोटे-बड़े नगरों क्या गाँवों तक में चाय की दूकाने लगी मिल जाती हैं, वैसे ही अधिकांश यूरोपीय महानगरों या नगरों में शराव के छोटे-बड़े काउण्टर देखे जा सकते हैं। हमारी बस सात बजते-बजते मिलान पहुँच गयी है। हम देख रहे हैं हमारे मित्र पन्ना वावू की आकृति पर हर्ष और उत्साह की स्पष्ट रेखायें। श्रीहरि दास ज्वाल के साथ मेरी विदेश यात्रा की कई रातें गुजरी हैं। हमारे लिए 'होटल एग्रीप का कमरा, नम्बर ४१९ सुरक्षित हो गया है। इस चार वेड वाले कमरे के भीतर हम दो आदमो हैं एक यह वैरागी और दूसरे श्री ज्वाल जी।' होटल एग्रीप' का कमरा वहुत ही साफ-सुथरा, अटेच्ड वाथ रूम, वाथरूम के भीतर कई तरह के तौलिए, शॉवर वाथ, वेसिन आदि की आधुनिकतम व्यवस्था। हमने ९ वजते-बजते भोजन (DINNER) किया। काफी देर तक हम अपने विचारों का आदान-प्रदान करते रहे। यह मालूम न हुआ कि कव पलकें झपकीं, कव आँखों में नींद आयी। हमने सारी रात आराम से बितायी।

कुछ घंटे मिलान में

इटली का प्रसिद्ध नगर है—मिलान। इतिहास कहता है कि इटली ने काफी संघर्ष किया है, अपनी स्वाधीनता के लिए और फिर अपने विकास के लिए। पहले

मिलान ही इटली की राजधानी था । यही कारण है कि आज भी मिलान को वह गरिमा, वह गौरव प्राप्त है, जो किसी देश की राजधानी के लिए अपेक्षित है । हम मिलान के प्रसिद्ध, 'होटल एग्रीप' के कमरे के भीतर हैं और अचानक आँखें खुल गयी हैं । हमारी घड़ी पाँच बजा रही है । श्री ज्वाल उनींदे हैं, जगाना उचित नहीं लगा लेकिन मेरी पलकें वन्द नहीं हो रही हैं ।

आज २ सितम्वर १९८० है । साढ़े छः बजते-वजते दैनिक कार्य सन्ध्यावन्दन आदि से निवृत्त होकर अपना सामान सँभाल लिया है । लगा कि ज्वाल जी की नींद भी पहले ही टूट गयी थी । अव हम अपना सामान लेकर नीचे रेस्टोरेन्ट की मेज पर आ गए हैं और जलपान-ब्रेड वटर, विस्कुट जाम के वाद चाय पी ली है । पहले से निश्चित-घोषित कार्य-क्रम के अनुसार हम आठ वजते-वजते वस पर सवार हो गए हैं । साढ़े आठ वजे हमारी डिलक्स कोच 'होटल एग्रीप 'से खुल रही है, मिलान के दर्शन के लिए, इस ऐतिहासिक नगर के भ्रमण-परिभ्रमण के लिए ।

हमारी डिलक्स-कोच-विशाल चर्च के सामने से गुजर रही है, थोड़ी ही दूर आगे है सेन्ट्रल पोस्ट आफिस, डान्सस्ट्रीट और हमारी आँखों में उतर आयी है महान राष्ट्रवादी गेरीवाल्डी की मूर्त्यु, इस महान देश भक्त का स्टेचू, जो सम्पूर्ण इटली की जनता के लिए वन्दनीय है, दर्शनीय भी है । किसी देश के इतिहास से किसी यात्री या पर्यटक का क्या सम्वन्ध है लेकिन इटली की स्वाधीनता, इटली के एकीकरण को लेकर गेरीवाल्डी ने अपने महान त्याग, अपूर्व देश-भक्ति का परिचय दिया इटली के इतिहास को आलोकित करनेवाले तीन व्यक्तित्व अविस्मरणीय हैं—मेजिनी, कावूर और गेरीवाल्डी । गेरीवाल्डो के स्टेच्यू के सामने हम नतमस्तक हुए । यह है एक रेलवे स्टेशन जिसका नाम है—'गैरीवाल्डी' महान योद्धा की स्मृति में । थोड़ी ही दूर बाद हमने देखा—गवर्नमेन्ट टेलीविजन केन्द्र और आगे कुछ दूर जाने के बाद सेन्ट्रल रेलदे स्टेशन, फिर रेडियो स्टेशन । मेरे दुभाषिये ने वताया—"इटली के इस मिलान नगर की आवादी ६५ लाख है । यहाँ चोदह राजनीतिक पार्टियाँ हैं—सोशलिस्ट रिपब्लिक, कम्यूनिष्ट, डेमोक्रेटिक, लेबर आदि···· ।"

मिलान के अतीत के साथ, इटली के भाग्य-विधाता बेनिटो मुसोलिनी का नाम भी जुड़ा हुआ है। इटली की भूमि पर जब अराजकता फैल रही थी। प्रशासन की चुप्पी इस देश के सम्भ्रांत नागरिकों को चिन्तित करने लगी थी। विनाशकारी तत्वों से संघर्ष के लिए 'फेसियो' नामक संगठन किया जाने लगा। बेनिटो मुसोलिनी ने इस संगठन का नेतृत्व किया। इस संगठन की मान्यता थी कि शासन की समस्त त्रुटियों को दूर करने के लिए हिंसात्मक कार्रवाई ही आवश्यक है। इस प्रकार इटली के भविष्य पर भी मुसोलिनी छाया रहा। पहले उसने अपने को साम्यवादी सिद्ध किया। सरकार ने उसे कैद कर लिया और जब जेल से रिहा होकर आया, तो वह एक बड़ा साम्यवादी नेता हो गया। साम्यवादियों ने सबसे पहले इसी मिलान नगर से प्रकाशित होनेवाले समाचार-पत्र 'अवन्टी' का सम्पादक बना दिया। सन् १९१४ के महायुद्ध के बाद उसकी विचारधारा बदल गयी। साम्यवादियों से उसका मतभेद हो गया।

बेनिटो मुसोलिनी ने 'पोपोलोड इटालिया (Popolod Italia) नामक अपना समाचार-पत्र निकालकर अपने विचारों का प्रचार आरम्भ किया। एक समय आया, जब सारे इटली पर अधिकार कर लिया। कहने का मतलब कि फासिस्टवाद की जन्मभूमि 'मिलान' बेनिटो मुसोलिनी के जीवन के साथ सम्बद्ध है।

इटली की राजनीति से अपना कुछ भी देना-पावना नहीं है, लेकिन जब फासिस्ट शब्द का प्रयोग होता है, इटली और जर्मनी का नाम सहसा सामने आ जाता है। हमारे सामने आ गयी है तेजी के साथ घूमती घड़ी की सुई, जो अब ग्यारह के समीप आ रही है और हमारी डि-लक्स कोच चर्च के पास आकर रुक गयी है, जहाँ बैंक है, दूकाने हैं। ग्यारह बजते-बजते सभी लोग बस पर सवार हुए और हमारी गाड़ी रोम के लिए प्रस्थान कर गयी। दो डिलक्स कोचों पर सवार १०२ भारतीय आर्य प्रतिनिधियों का काफिला, जैसे इटली की भूमि पर एक नन्हा-सा भारत मैत्री की पताका लिए चलता जा रहा है।

ओ जाने वाले, लौटकर आना

हमारी गाड़ी मिलान सिटी से बाहर निकल रही है। मिलान के भवन मिलान की आलीशान इमारतें हमारी आँखों से ओझल होती जा रही हैं और हम ग्रामीण क्षेत्रों से गुजरने लगे हैं, फिर वही मक्के की लम्बी-चौड़ी खेती, फलों के पेड़, अंगूर की लहलहाती लतिकायें, कहीं टमाटर और अन्य हरी-हरी सब्जियाँ। मेरा यात्री मन रमने लगा है, इन खेतों में लेकिन डि-लक्स कोच की गति तेज''''और तेज होती जा रही है। कहीं-कहीं खेतों में ऊपर से सिंचाई के लिए फुहारे बने हुए, पानी के नल से कनेक्सन जोड़कर बने ये फुहारे जैसे कृत्रिम वर्षा कर रहे हैं। ये रिमझिम फुहारें फसलों को पूरी तरह तर कर रही थीं और फसलें जैसे झूम रही थीं।

हम मिलान सिटी से बहुत दूर निकल आये हैं। यहा लिखा दिखायी दे रहा है–गिरदानी (Girdani) शायद यह कोई कारखाना है। कुछ ही दूर जाने के बाद हमारी गाड़ी किसी रेस्टोरेन्ट के पास रुक गयी। इस समय दिन के ढाई बज रहे हैं। टी. सी. आई (ट्रेवेल कारपोरेशन ऑफ इंडिया) के बस-प्रभारी चन्दर जी ने रेस्टोरेन्ट से स्वयं लंच का सामान-ब्रेड, बटर, नमकीन और आइस्क्रीम लाकर दिया। हमने लंच लिया, फिर चार बजते-बजते हम रोम की राह लग गए।

आगे कहीं 'रौलर' (Roller) लिखा मिला, जो देखने बहुत बड़े कारखाने जैसा लगा। यह कारखाना था कार का, जो कार के पीछे का 'ट्राली घर' बनाता है। यह छोटी या बड़ी गाड़ियों में सामान रखने या सोने के काम आता है, लेकिन हमारी डि-लक्स कोच में ऐसी कोई व्यवस्था, ऐसा कोई साधन नहीं है, कभी-कभी झपकियाँ लेने के लिए, यह कोच पर्याप्त है, बहुत ही आराम देह।

हमारी बस चलती जा रही है, कहीं समतल भूमि, कहीं ऊँचे ऊँचे पहाड़, कहीं ऊपर पहाड़, नीचे सुरंग, लम्बी सुरंग के भीतर बने चौड़े साफ-सुथरे

चमकदार रास्ते। ऐसा लगता है, कहीं समतल माउन्ट ब्लैक का प्रभाव, उसकी लम्बी श्रृंखलायें साथ छोड़ना नहीं चाहतीं। चारो ओर चिकनी पक्की पिच्ड सड़कें, छोटो छोटी पहाड़ियों पर बसे छोटे उपनगर, छोटे-छोटे मकान, लोग-बाग, कहीं मक्के की खेती, कहीं फलों की बागवानी। इस मनोरम दृश्यावली को अगल बगल छोड़ती हुई हमारी डिलक्स कोच तेजी के साथ भागती जा रही है, इटली की राजधानी रोम की ओर, जहाँ से हमारी लम्बी बस यात्रा शुरू हुई थी, रोम पहुँचकर यह बस यात्रा अंत कर जायेगी। कुल मिलाकर रोम से लन्दन और फिर लन्दन से वापस रोम, पाँच हजार पाँच सौ पचहत्तर किलोमीटर की यह लम्बी यात्रा बस से तय की हमने। इतनी लम्बी दूरी की कल्पना हमारे धैर्य और साहस को चुनौती देने लगी है। हमारे दुभाषियेने कहा—"हम इटली की राजधानी रोम के बिलकुल करीब हैं। ये डि-लक्स कोचें रोम नगर के भीतर प्रवेश कर रहीं हैं। अभी-अभी सूरज डूबा है, कोई एक घंटा पहले।"

रोम नगर की पगध्वनि सुनायी देने लगी है। रोम की चमक दिखायी देने लगी है और साढ़े नौ बजते-बजते हमारी डिलक्स कोच रोम के 'होटल मार्कारियोलो' के प्रवेश-द्वार पर आकर रुक गयी। हमने अपने सामान सँभाल लिए हैं। हमारे लिए कमरा नम्बर ५१२—बी सुरक्षित हो गया है। कल्पना की जा सकती है दो डिलक्स-कोच के १०२ यात्री, एक साथ एक होटल के भीतर लेकिन हमने अनुमान लगाया कि यह संख्या इस विशाल होटल के लिए कुछ नहीं है। हम अपने कमरे से भोजन (DINNER) के लिए होटल मार्कारियालो की अंडर-ग्राउन्ड डाइनिंग-रूम के भीतर आये। कई सौ व्यक्तियों को एक साथ मेज-कुर्सियों पर बिठाकर भोजन कराने की पूर्ण क्षमता और व्यवस्था इस होटल की विशेषता है। हम सभी लोग इस डाइनिंग-रूम के एक नन्हें से कोने के भीतर ही सिमटकर रह गये। इस डाइनिग रूम के भीतर और भी कई पर्यटक टोलियाँ थीं लेकिन ऐसा लगता था कि सारा हाल खाली ही पड़ा है। हमने चावल, ब्रेड, सब्जी, फल और सलाद लिया। भाई पन्नालाल

और सूरज प्रसाद अपने कमरे के भीतर गए, भाई यमुना प्रसाद और उनके सुपुत्र वेद प्रकाश अपने कमरे में, हम भाई हरिदास ज्वाल के साथ कमरा नम्बर ५१२- बी. के भीतर आ गए।

हम आज की रात रोम के उसी होटल के भीतर हैं, जिसे 'होटल मार्का-रियालो' कहते हैं। बम्बई से उड़ान भरकर हमारा जम्वो जेट विमान, उस दिन रोम के हवाई अड्डे पर उतरा था, हमारे आवास का प्रवन्ध इसी होटल मार्कारियालो के भीतर किया गया था। विलम्ब से आने के बाद भी यहाँ किसी प्रकार की असुविधा नहीं हुई थी। इसी होटल से हमने यूरोप की यात्रा स्थल-मार्ग से आरम्भ की थी। यह यात्रा इसी 'होटल मार्कारियालो' के प्रमुख द्वार पर समाप्त हो रही है। मेरे आकुल प्राण अकुलाने लगे हैं। यूरोपीय देशों की यात्रा के साथ ही 'अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, लन्दन के व्यस्त कार्यक्रम के बाद आज की रात वह प्रथम रात है, जिसकी छाया में हम विश्राम कर रहे हैं, स्वजनों और मित्रों का स्मरण आने लगा है।

रोम : अन्तिम दिन : अन्तिम रात

आज ३ सितम्बर १९८० है। प्रतिदिन की तरह आज भी ९ बजे ही उठ गया। दैनिक कार्य से निवृत्त होकर पत्र आदि लिखने बैठा। आनंद और सत्यानंद के साथ ही कई मित्रों को पत्र लिखा। साढ़े सात बजे रस्टोरेन्ट जाकर जलपान किया और दो घंटे के बाद अपनी डिलक्स कोच पर सवार होकर दृश्य-दर्शन को निकल गया। मेरे दुभाषिए ने बताया-'यहाँ एक थियेटर एरिया, है, जहाँ कुछ खरीदा जा सकता है; लेकिन किसी प्रकार का कोई अन्तर न मिला । इस क्षेत्र में कई लाख श्रमिक अवश्य रहते हैं, जो प्रतिमाह एक हजार डालर अर्जित करते हैं। कहा गया कि १५-२० वर्ष पूर्व यह बस्ती बसी
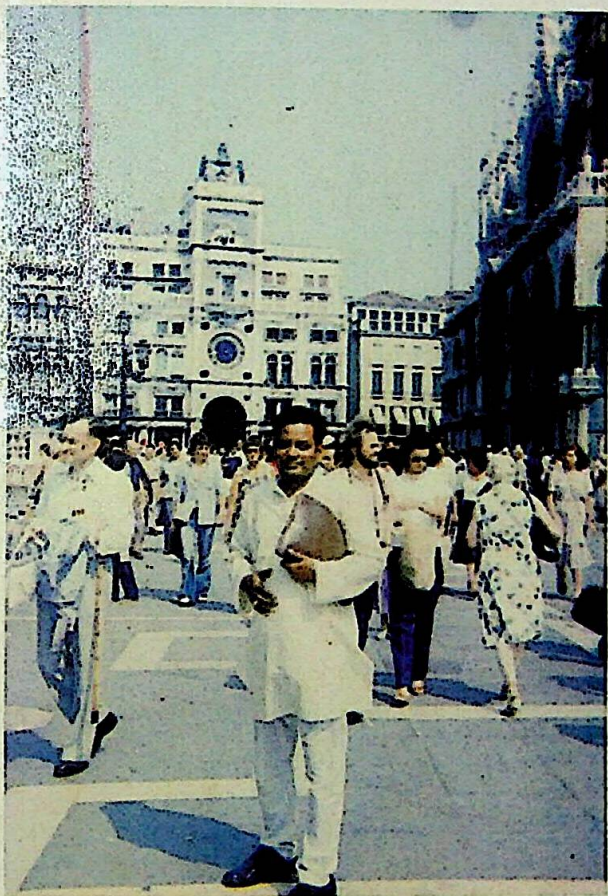
लेखक : भेनीस के मशहूर चर्च के पास
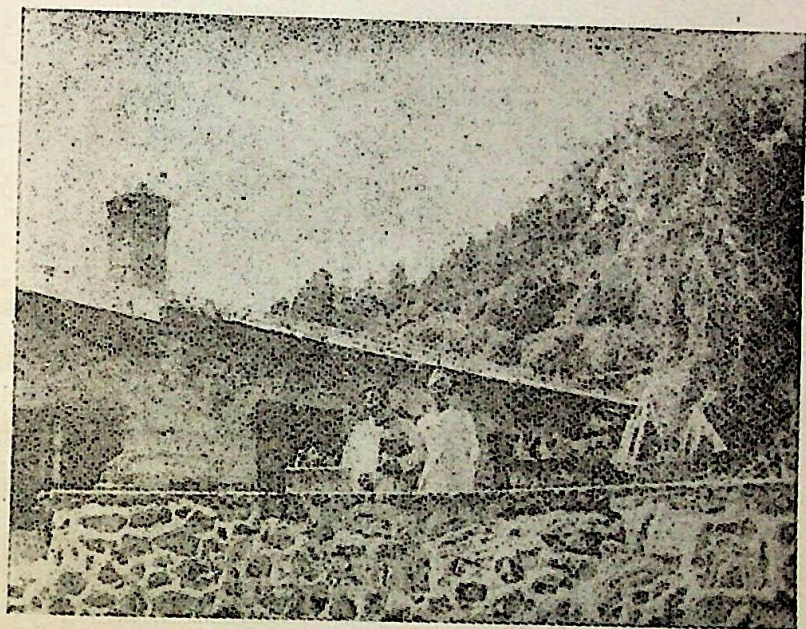
इटली जेनेवा की सीमा पर—लापालुड (LAPALUD) बर्फीली जगह पर लेखक के साथ श्री हरिदास ज्वाल

लेखक : युगोस्लाविया में
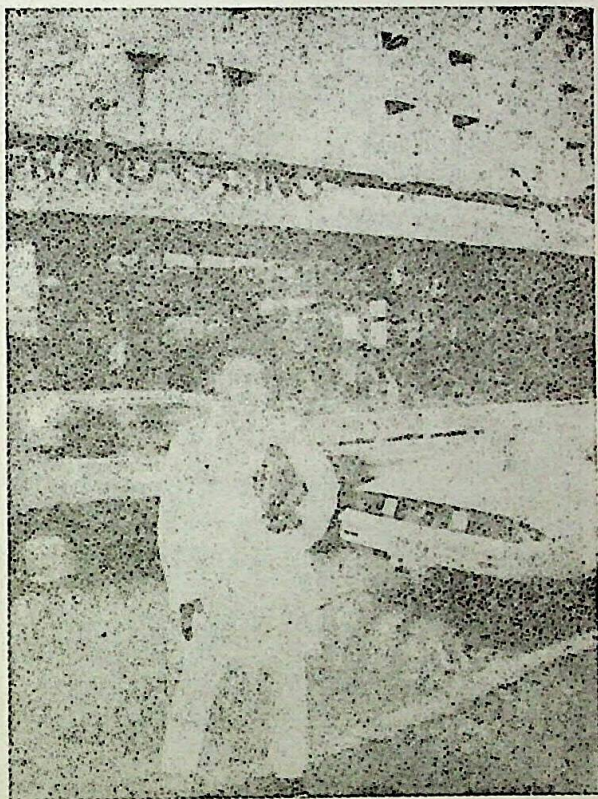
जेनेवा में होटल ग्रैण्ड कैसिनो के पास—लेखक
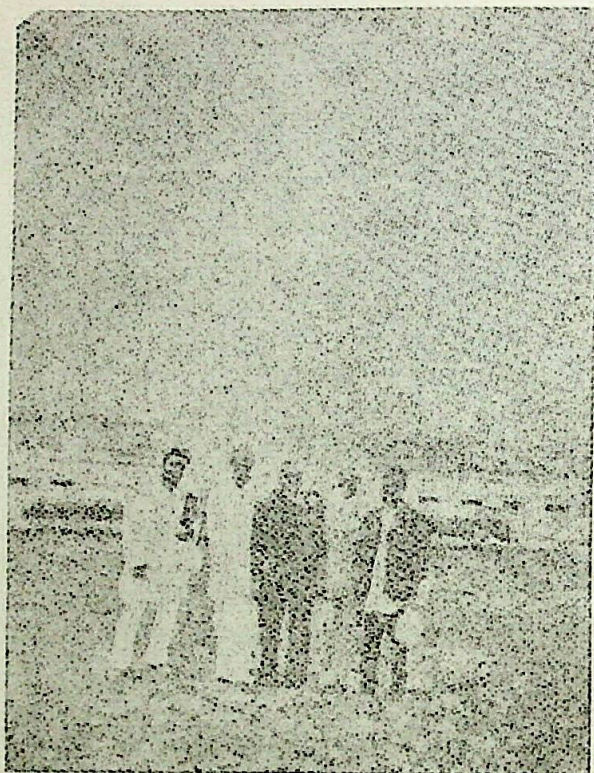
जेनेवा (स्विट्जरलेंड झील के फुहारे के पास लेखक रामाज्ञा वैरागी, श्री हरिदास ज्वाल, श्री पन्नालाल आर्य, यमुना प्रसाद, रामगोपाल अग्रवाल

वाटर लू (बेल्जियम) का वह टीला जहाँ नेपोलियन बोना-पार्ट गिरफ्तार हुआ । लेखक (बीच में) सच्चिदानन्द शास्त्री तथा वैद्यजी (दाहिने) के साथ ।

(पेरिस में लेखक के साथ श्री पन्नालाल आर्य, श्री यमुनाप्रसाद, श्री हरिदास ज्वाल आदि)
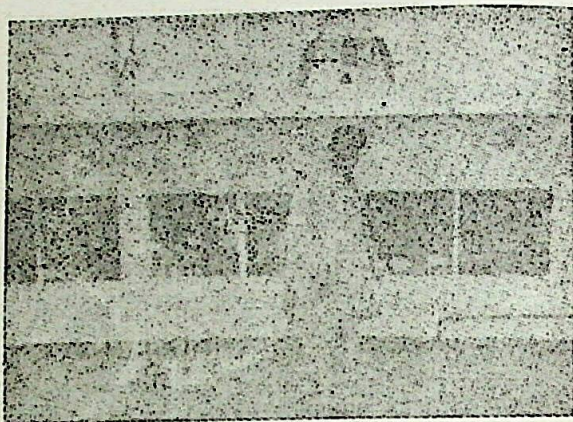
लेखक : लन्दन के अन्डर ग्राउण्ड ट्रेन के पास

चेकोस्लोवाकिया में लेखक के साथ श्रीपन्नालाल आर्य
पीछे श्री हरिदारु ज्वाल

लेखक—वियेना में

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, लन्दन से लौटने के बाद, आर्य समाज दीवान हॉल दिल्ली के प्रधान की ओर से लेखक का स्वागत।
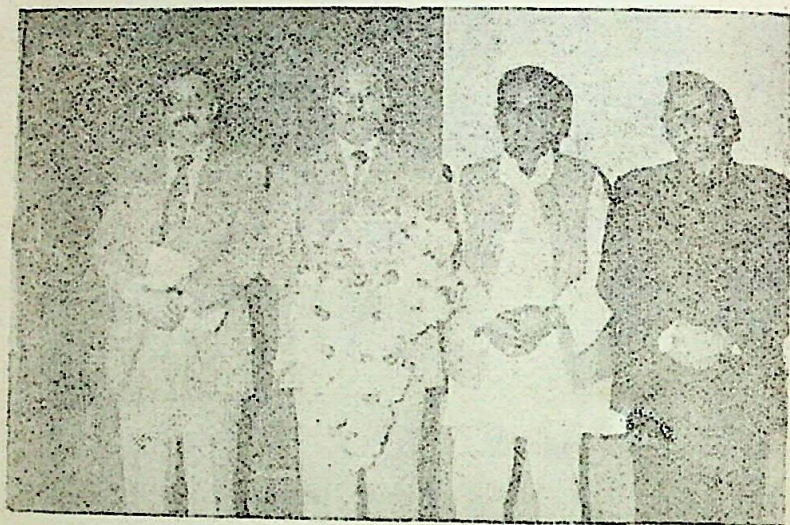
(दाहिने से) सुप्रसिद्ध इतिहासकार श्रीसत्यकेतु विद्यालंकार, लेखक, श्रीसुरेन्द्रनाथ भारद्वाज (आर्य समाज लंदन के प्रधान) तथा भारद्वाज जी के निकटतम सम्बन्धी, दीवान हॉल, आर्य समाज दिल्ली में।

है, श्रमिकों की बस्ती, इधर कुछ नये भवन बने हैं। किसी ने बताया कि इस क्षेत्र में ८० वर्गमीटर का दोमंजिला मकान ६०-७० हजार डालर का बिकता है।

इतिहास कहता है कि इटली अपनी स्वाधीनता के लिए लम्बा संघर्ष कर चुका है। संघर्ष के इस मोर्चे पर इटली ने भारी क्षति उठायी है। सन् १९२९ में इटली स्वतन्त्र हुआ और निर्माण के नये अध्याय शुरू हुए लेकिन क्षतिग्रस्त भवनों के अवशेष आज भी देखे जा सकते हैं। इन भवनों का नव-निर्माण अब आरम्भ किया गया है। हमारे सामने है १८०० वर्ष पूर्व का निर्मित 'मेटोरियल चर्च, जिसकी मरम्मत भी नहीं हुई। यह है पम्मटेयम चर्च शती ७ में इसका निर्माण हुआ। कहते हैं-यह कभी मंदिर था। १९८० के पहले यहाँ जुपिटर की पूजा होती रही है, इसीलिए इसे 'टेम्पुल ऑफ डिभाइन' (Temple of Divinities) भी कहा जाता है। इस 'टेम्पुल ऑफ डिभाइन' की वास्तु-कला को देखकर एक नयी जिज्ञासा जाग्रत होती है।

एक अति प्राचीन ऐतिहासिक धार्मिक धरोहर के रूप में यह पम्पटेयम चर्च आज भी खड़ा है, जो आज का धार्मिक राजनीतिक केन्द्र भी है। यह है ईसा पूर्व ७५० का निर्मित एक ऐतिहासिक दुर्ग (किला), इस किले का भग्नावशेष आज भी खड़ा है–जीर्ण शीर्ण अवस्था में। इस किले के बिलकुल समीप है—'ऐरीना' रंगमंच जहाँ कभी चार हजार व्यक्ति बैठते थे, अब यह नष्टप्राय हो गया है। इस 'ऐरीना' के भीतर ही दोषी लोगों को राजनीतिक दण्ड भी दिये जाते थे। यह दुर्ग भी ईसा पूर्व ७५० का ही निर्मित बताया जाता है। इस अवशेष के आस-पास कई प्राचीन भवन हैं। इन प्राचीनतम भवनों में एक 'क्लोजियम थिएटर' (Closseom Ti eature) भी है, जहाँ कभी इम्पायर या राजा मनोरंजन के लिए आते थे। १७ वीं शती के कई भवन आज भी सुरक्षित हं लेकिन उसके बाद भी जो नये-नये भवन वने हैं, अत्यन्त दर्शनीय हैं, इन भवनों में 'पार्लियामेन्ट हाउस, प्रेसिडेन्ट हाउस' और कुछ नये-पुराने मार्केट।

हम अभी रोम के पोस्ट आफिस के समीप हैं, बिलकुल ही करीब हैं, वर्जीनेम फाउन्टेन' (Virginem Fountain) एक मनोरम फुहारा, अत्यन्त सुन्दर, दीवारों पर प्राचीन-शैली के चित्र बने हुए। नीचे का पानी फुहारे से होकर गिर रहा है। इस स्थल को यहाँ के लोग 'मनाकामना कुंड' कहते हैं। हम देख रहे हैं--लोग इस कुण्ड में भी बिलकुल हमारे यहाँ की तरह सिक्के डाल रहे हैं। मेरे लिए यह समझना कठिन है कि यहाँ के लोग यह क्या कर रहे हैं ?

किसी भी पर्यटक के लिए रोम के प्राचीनतम रूप को पहचान लेना सहज है। किसी भी यात्री को रोम के नवीनतम रूप का दर्शन आसान है। रोम के दो रूप हैं– प्राचीन और नवीन, लेकिन रोम, रोम ही है। रोम का प्राचीन बाजार भी देखा, नया बाजार भी, रोम का प्राचीन स्वरूप देखा और नया रूप भी। हमने दो बजे लंच लिया और फिर इधर-उधर घूम-फिर कर सात बजते-बजते अपने 'होटल मार्कारियालो' वापस आ गए। होटल से डिनर के बाद हम बस पर सवार होकर रोम के हवाई अड्डे पर चले गए। हमारा सामान और पास पोर्ट चेक किया गया, सामान का वजन किया गया। हमारा सामान भीतर कर लिया गया और हम अन्दर चले गए। ये सारी औपचारिकतायें पूरी हुईं लेकिन हमारी घड़ी की सुई ग्यारह पर आ गयी। बताया गया कि हमारा विमान एक बजे रात को प्रस्थान करेगा, फ्लाइट नम्बर बताया गया–ए. आई. १२९ और गेट नम्बर २७ से भीतर जाने का संकेत मिला। अब हम बारह बजे रात से विमान की प्रतीक्षा करने लगे। कतारों में लगकर अपना बोर्डिंग टिकट दिखाया। मुझे विमान में सीट नम्बर–५२–ई. मिला। अब हम 'वेटिंग रूम' के भीतर बैठकर अगली सूचना कहिए अगली घोषणा की प्रतीक्षा करते रहे। एक बजे फिर घोषित किया गया और कुछ ही समय के भीतर हमारा विमान 'एयर पोर्ट' पर उतर गया। आधे घंटे के भीतर विमान में खाने-पीने और प्रसाधन के सामान लादे गए। यह भी बहुत बड़ा विमान था। इसके भीतर ३८० यात्रियों के बैठने की व्यवस्था थी बिलकुल 'जम्बोजेट' इस विमान का नाम बताया गया—'अकबर....।'

धरती से आसमान पर

अकब्र नामक जम्बोजेट रोम के एयर टर्मिनस के समीप विमान स्थल से उड़ा। इस जम्बोजेट की गति ६२५ कि० मीटर प्रति घंटे, कोई साधारण गति नहीं है। रोम की हवाई पटरी छोड़ते ही हमारा 'अकबर' ऊपर बहुत ऊपर जा चुका था और अभी भी धीरे-धीरे ऊपर उठ रहा था। अपनी निश्चित ऊँचाई पर जाने के बाद, वह अपने पूरे वेग से उड़ने लगा था। बताया गया कि यह 'अकबर जम्बोजेट, ३० से ३५ हजार फीट की ऊँचाई पर है कि अचानक अकबर की परिचारिका 'टिकी उड़िया' सामने से मुस्कराती हुई गुजर गयी। मैंने उसके घर का पता पूछा—उसने धीरे से कहा—दार्जिलिंग। बहुत ही अच्छा व्यवहार दिया मिस टिकी उड़िया ने। उसका विनम्र स्वभाव ही आकर्षण की डोर लिए था।

विमान परिचारिका मिस टिकी उड़िया ने रोम के हवाई अड्डे पर ही मधुर भाषा में कहा था—'अपने बेल्ट बाँध लीजिए और धूम्रपान बन्द कीजिए....' उसकी मधुर स्वर लहरी ने प्रभावित किया था, इतना प्रभावित कि हवाई यात्रा की सारी आशंकायें उसकी मुसकान की रेखाओं के साथ ही समाप्त हो गयी थीं और हम उड़ने लगे थे, दूर-आसमान पर, सुदूर आसमान पर।

हमारा 'अकबर' धरती से आसमान की दूरी ही नहीं, वरन् रोम से बम्बई की लम्बी दूरी को माप रहा था। ऐसा लगता था जैसे नीचे कहीं कुछ भी नहीं है, सारा आकाश बस शून्य ही शून्य है। कभी-कभी समुद्र के ऊपर से ही समुद्र को देखकर या समुद्र की लहरों पर रात को तिरते हुए बड़े जहाज ऐसे लग रहे थे, जैसे काले मटमैले दुपट्टे पर सलमे-सितारे जड़े हों। मुझे इसका कोई ज्ञान नहीं था कि हमारा 'अकबर' कहाँ है और हम कहाँ हैं, हाँ, बस यही ज्ञान था कि हमारा विमान अपनी ऊँचाई पर है, अपनी गति में है और हमें उड़ाये लिए जा रहा है। विमान का हिलना-डुलना बन्द है, कभी-कभी करवटें बदलता हुआ, उड़ा जा रहा है लेकिन ऐसी स्थितियों में आशंकाओं की आकृति अचानक सामने आकर

अपना स्वरूप दिखा जाती है। आतंक और आशंकाओं का यह माहौल बातचीत की लहरों से कटता तो है लेकिन विस्मय की रेखा कपोलों से जाती नहीं है।

'अकबर' की तेज गति के बाद भी घड़ी की सुई में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं आता, ऐसा लगने लगा है, यह ऐसी रात है, जो कभी शेष नहीं होगी। विमान के भीतर रौशनी है तो क्या हुआ, ऊपर का घना अन्धकार जैसे इस तेज रौशनी को पिए जा रहा है और रात की उमर बहुत लम्बी होती जा रही है। इस विमान में अधिकांश भारतीय यात्री हैं।

इस उड़ान में सिर्फ घनघनाहट ही सुनायी दे रही है। ऐसी कल्पना करना भी कठिन है कि हम उस विमान पर हैं जो सवा छः सौ किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से हमें हवा के पंखों पर उड़ाये लिए जा रहा है लेकिन इतने बड़े विमान और इस तेज गति के बीच, जो भयावह स्थिति होनी चाहिए, वह बिलकुल नहीं है। यह बात और है कि कभी-कभी हवाई दुर्घटना की आशंका आत्मा का सिहरा देती है। इस आतंक या इस आशंका से एक परिणति का जन्म होता है कि पैदल चलते समय सायकिल से, सायकिल से चलते समय रिक्से से, रिक्से से चलते समय मोटर-कार से और मोटर-कार से यात्रा करते समय मोटर या कभी-कभी रेल से टकराने का भय भी तो अक्सर बना रहता है लेकिन भय क्या है? भय एक साधारण मनस्थिति के अतिरिक्त और कुछ नहीं।

जम्बोजेट विमान 'अकबर' की तेज सनसनाहट एक सनसनी-सी पैदा कर रही है मन-प्राणों में। हम देख रहे हैं आसमान का कुहरा फटा जा रहा है और बाहर का मौसम थोड़ा-थोड़ा साफ होने लगा है। आसमान से धरती तक जो धुँधलका छा रहा था, वह अब दूर होने लगा है। अब प्रायः सुबह हो गयी है। हम देखने लगे हैं, धरती पर खिंची हुई उजली-काली रेखायें, पहाड़ों पर बने घर, जैसे यह कोई शहर है, कौन जाने किस देश का कौन-सा शहर है? सामने से आता हुआ विमान, बिलकुल मेरे सामने है, आकार-प्रकार में यह बिलकुल 'जम्बो-जेट' की तरह लगता है। कुछ ही दूर बाद एक बड़ा-सा टापू आता है, जिसकी

घनी आवादी का अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है घनी वस्तियों, घने मकानों को देखकर जो यहाँ से छोटे—क्या वहुत छोटे दीख रहे हैं।

हमारा 'अकवर' ऊपर ऊड़ते-फिरते घने बादलों को तेजी के साथ चीरता हुआ, ऊपर, वहुत ऊपर तक जाने की महान कल्पनायें लिए हवा की गति से आँखमिचोली खेल रहा है। सुवह के साढ़े छः बज रहे हैं। ऊपर से नीचे एक वहुत वड़ा शहर दिखायी देने लगा है। सड़कें लकीरों सी दीख रही हैं। यह शहर पीछे भाग रहा है और फिर किसी समुद्र की असीम अनन्त जलराशि हमारी छोटी-छोटी आँखों में डूवने लगी है। मेरी डायरी मेरे सामने खुली हुई है लेकिन क्या लिखा जाय—समुद्र, बादल, धुंधलका और कुहरे को चीरकर भागता 'अकवर' जम्वोजेट, बस और क्या ?

एयर गर्ल ने सुबह का नाश्ता दिया, ब्रेड, वटर फिर चाय लेकिन कुछ भी अच्छा नहीं लगता। यात्रा की लम्वी थकान, घर-परिवार मित्रों का स्मरण। इस लम्बी दूरी को दूर करने की शक्ति 'अकवर' के पास नहीं है। मेरे अन्तर की आकुलता वढ़ती जा रही है।

मेरी मानसिक स्थिति कभी उद्वेलित न हुई लेकिन आज यूरोप-यात्रा से लौटते समय मेरा मन तेजी के साथ भागने लगा है, जाने क्यों ? रोम से बम्बई की दूरी है ६७०० कि० मीटर। इस दूरी में 'अकवर' की तेज-गति से भाग दिया जाय तो यात्रा के घंटे निकाले जा सकते हैं। भाई, अपने को इस गुना भाग से क्या मतलव लेकिन जैसे-जैसे दिन चढ़ता जा रहा है, हमारी आकुलता वढ़ती जा रही है। परिचारिका ने स्वर दिया—'अब हम हिन्द महासागर के समीप हैं और एक घंटे के भीतर बम्वई पहुँच रहे हैं....।' परिचारिका ने यह भी वताया कि अभी वम्वई में वर्षा हो रही है। डेढ़ बजते-वजते हम बम्बई एयर पोर्ट पर उतरने लगे लेकिन 'अकवर' को भूमि पर आकर स्थिर होते-होते दो वज गए।

आइए, हम रोम से वम्वई की दूरी का लेखा-जोखा करें। 'ट्रेवेल कारपो-रेशन ऑफ इण्डिया' की ओर से दिए गए चार्ट के अनुसार रोम से बम्वई की

दूरी है ६७०० किलोमीटर। हमारा जम्बोजेट 'अकबर' रात को दो बजे उड़ा था और अभी दिन के दो बज रहे हैं। रोम और भारत के समय में चार घंटे का अन्तर आता है। इस प्रकार हमारी यह हवाई-यात्रा आठ घंटे की रही। हमारा विमान भूमि पर उतर गया था। विमान के लाउडस्पीकर से आवाज आई— 'धन्यवाद, आप एयर इंडिया की सेवा से सन्तुष्ट हैं तो हमारे लिए परम प्रसन्नता की बात होगी। आशा है, भविष्य में भी हमें आपकी सेवा का संयोग मिल सकेगा।' और, अब हम धीरे-धीरे सीढ़ियों के सहारे उतरकर नीचे आकर, बाहर लगी बस पर सवार हो गए। वर्षा हो रही थी। हम अपना सामान कस्टम विभाग में चेक कराकर बाहर आये। कस्टम क्लियरेन्स के चलते हमारा दो घंटे का समय लग गया। चार बजते-बजते हम एक नम्बर गेट के पास वेटिंग हॉल के भीतर आ गए और चाय-नाश्ता किया। भोजन का समय न मिल सका। रात को आठ बजे 'एयर इंडिया' के रेस्टोरेन्ट में भोजन किया। रोटी, दाल, सब्जी, सलाद, पापड़ और मिठाइयाँ। अब हम वेटिंग हॉल के भीतर बैठकर अगली घोषणा की प्रतीक्षा करने लगे। प्रतीक्षा की ये घड़ियाँ धीरे-धीरे भारी होने लगीं। रात के ११ बजे के बाद एक नम्बर के काउण्टर पर फ्लाइट नम्बर १०९ पर जाने की घोषणा हुई। सूचना पाते ही काउण्टर पर जाकर टिकट दिखाया, बोर्डिंग टिकट और सीट नम्बर प्राप्त किया। इस प्रकार हमें सीट नम्बर ४८ डी. मिला लेकिन प्रतीक्षा की ये घड़ियाँ जैसे और लम्बी होती गयीं। हम आगामी घोषणा की प्रतीक्षा करते रहे। साढ़े बारह बजे रात को घोषित किया गया कि फ्लाइट नम्बर १०९ के यात्री सुरक्षा-जाँच के लिए तैयार रहेंगे। हम एक नम्बर गेट से अपने सामान के साथ अन्दर आये। हमारे बोर्डिंग टिकट पर मुहर लगायी गयी, हमारा सामान देखा गया फिर हमारी तलाशी ली गयी।

भाई पन्नालाल आर्य ने विमान-स्थल से किसी मित्र को टेलीफोन किया, कुछ ही देर बाद गाड़ी आ गयी। पन्नालाल जी के साथ सूरज, यमुना बाबू और रामगोपाल अग्रवाल कुछ घंटे के लिए शहर चले गए; फिर शाम को वापस आ गए।

अब हम अगले वेटिंग हॉल के भीतर आ गए थे। हवाई-यात्रा के निर्धारित नियमों के अनुसार अब हम बाहर नहीं जा सकते थे। हमारी पूरी जिम्मेदारी एयर इंडिया पर हो गयी थी। हमारी प्रतीक्षा के नये दौर शुरू हुए लेकिन एक बजकर पन्द्रह मिनट पर फिर घोषित किया गया कि दिल्ली जाने वाले यात्री अपने टिकट हाथ में लेकर दो नम्बर गेट से विमान पर सवार होने के लिए चलें। हम एक-एक कर आगे बढ़े और सीढ़ियाँ चढ़कर विमान के भीतर प्रविष्ट होने लगे।

विमान के प्रवेश-द्वार पर खड़ी परिचारिका ने पूर्ण भारतीय मुद्रा में नमस्ते किया, फिर आगे बढ़ने पर बोर्डिंग टिकट पर अंकित सीट नम्बर देखकर दूसरी एयर गर्ल ने सीट पर बैठने का संकेत किया। कुछ ही देर बाद मधुर स्वरों में घोषणा हुई—'एयर इण्डिया की ओर से आपका हार्दिक स्वागत करते हैं। अब हम कुछ ही देर में दिल्ली, कुवैत, लन्दन और न्यूयार्क के लिए प्रस्थान करेंगे। अभी रात्रि को दो बजे हैं, यहाँ से दिल्ली की दूरी ११९० किलोमिटर है....।' इस घोषणा के बाद ऑक्सीजन की विधि बतायी गयी कि ऊपर आकाश में हवा का दबाव कम होने पर ऑक्सीजन कैसे लिया जा सकता है। इस आवश्यक घोषणा के बाद बेल्ट बाँधने का आदेश दिया गया। धूम्रपान न करने का निर्देश भी दिया गया। इन सारी औपचारिकताओं के पश्चात् दो बजकर पन्द्रह मिनट पर हमारा विमान 'महेन्द्र' शांताक्रूज विमान स्थल से उड़ा, दिल्ली के लिए, जब बम्बई महानगरी गहरी नींद में सो गयी थी, जाग रही थीं बिजली की लाल-हरी बत्तियाँ। धीरे-धीरे हमारा विमान ऊपर बहुत उठने लगा और नीचे की महानगरी ऐसी लगी, जैसे दीवाली रात में जलती हुई दीप-मालायें, बड़े आलीशान महलों पर जलते हुए वेपर लाइट।

यूरोप की लम्बी यात्रा करते समय मेरे भीतर किसी प्रकार की थकान नहीं आयी थी लेकिन यूरोप के विभिन्न देशों की यात्रा पूरी करने के बाद आज पहली बार थकान का अनुभव हुआ और आज का एक-एक क्षण जैसे भारी होने लगा। हम नये जम्बोजेट महेन्द्र पर सवार अपनी मातृभूमि पर हैं बिलकुल अपने आकाश में उड़ रहा है यह जम्बोजेट 'महेन्द्र'। इस बड़े विमान के भीतर कुवैत, लन्दन

और न्यूयार्क के यात्री भी सवार हैं। यह विमान लम्बी यात्रा पर उड़नेवाला विमान है। इसका भीमकाय स्वरूप भी देखने ही योग्य हैं। बम्बई से दिल्ली की दूरी एक घंटा तीस मीनट या पैंतालिस मिनट के भीतर तै करता है। समय की तेज गति के साथ इस बड़े विमान की गति की तुलना भले न की जाय लेकिन इन विमानों के बल पर लम्बी से लम्बी दूरियाँ छोटी हो गयी हैं।

हमारा जम्बोजेट 'महेन्द्र' ऊपर आसमान पर बहुत ऊँचाई पर उड़ रहा है और हम देख रहे हैं, यह विमान अन्धकार को चीरता हुआ, आगे बढ़ रहा है, बिलकुल तूफानी गति से। मेरे मित्र पन्नालालजी आर्य ने हमारी ओर देखा। कुछ बोले नहीं लेकिन यह मौन एक संतोष का स्वरूप लिए था कि हमारी यात्रा निरापद समाप्त होते जा रही है और हम अपने स्वतंत्र भारत के आकाश पर उड़ रहे हैं, ऊपर बहुत ऊपर। रोम से लेकर कई यूरोपीय देशों की यात्रा करते हुए हम लन्दन गए, डिलक्स बस से और फिर उसी बस से मिलान (इटली) और रोम आए। ट्रेवेल कारपोरेशन आफ इण्डिया की यह यात्रा व्यवस्था कि कहीं किसी प्रकार की दिक्कत न हुई, किसी प्रकार की असुविधा न हुई।

इस समय याद आने लगे हैं—मेरे मित्र परिवार के लोग सबकी सहानुभूतियाँ और मंगलकामनायें। ये सहानुभूतियाँ और मंगल कामनायें ही मेरी लम्बी यात्रा के लिए शक्ति साहस का अक्षय कोष बनकर साथ रही हैं।

यह मौसम और आसमान पर टिम-टिमाते सितारे संकेत करने लगे हैं कि यह धुंधलका पौ फटने के पहले का है। अचानक जम्बोजेट 'महेन्द्र' के एअर गर्ल की मीठी-मीठी आवाज ने हमारा ध्यान आकर्षित किया—'अब हम दिल्ली के आसपास हैं। कुछ ही समय के बाद हम पालम के हवाई अड्डे पर होंगे ··' विमान परिचारिका ने कुवेत, लन्दन और न्यूयार्क जानेवाले यात्रियों के लिए भी संकेत दिया। सहसा भारत की राजधानी दिल्ली की तस्वीर हमारी आँखों में झूल गयी।

पन्द्रह-बीस मिनट के बाद यह जम्बोजेट पालम पर चक्कर काटकर उतर गया और दूसरे ही क्षण दिल्ली उतरने वाले यात्री हल चल से भर उठे। हम सभी उतरे। बाहर टेक्सी और टेम्पों की भारी भीड़। हमने ऑटोरिक्सा लिया और सीधे दीवान हाल आए। दीवान हाल जहाँ से हमें यूरोप की यात्रा करते हुए लन्दन अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन में जाने के लिए विदा किया गया था।

शुभकामना

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि
रामाज्ञा ठाकुर जो अब रामाज्ञा वैरागी हो गए
जिनका राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन में एवं सम
सेवी के रूप में बड़ा सम्मान तथा आदर
और जो आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता के
में इस समय बिहार के मुजफ्फरपुर और रक्स
क्षेत्र में काम कर रहे हैं, अपनी यूरोप-यात्रा
एक पुस्तक प्रकाशित कर रहे हैं। सौभाग्य
बात है कि उनकी यह यूरोप यात्रा सार्वदे
सभा के नियंत्रण में लन्दन में हुए आर्य म
सम्मेलन से ही सम्बद्ध है। मैं इस पुस्तक
प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनायें प्र
करता हूं।

— रामगोपाल शालवाले

(प्रधान)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि स

नई दिल्ली

लेखक की आगामी कृतियां

- मेरी नैरोबी यात्रा
- नेपाल : मेरी नजरों में
- योग साधना से स्वास्थ्य